गुरु पूर्णिमा विशेषांक
जुलाई 2018
मूल्य - 40/-
वर्ष 8
अंक 10
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
ॐ
सिद्ध महालक्ष्मी साधना
कुण्डलिनी जागरण सा.
दक्षिण काली साधना
भाग्योदय जयंती-
सौभाग्य जागरण साधना
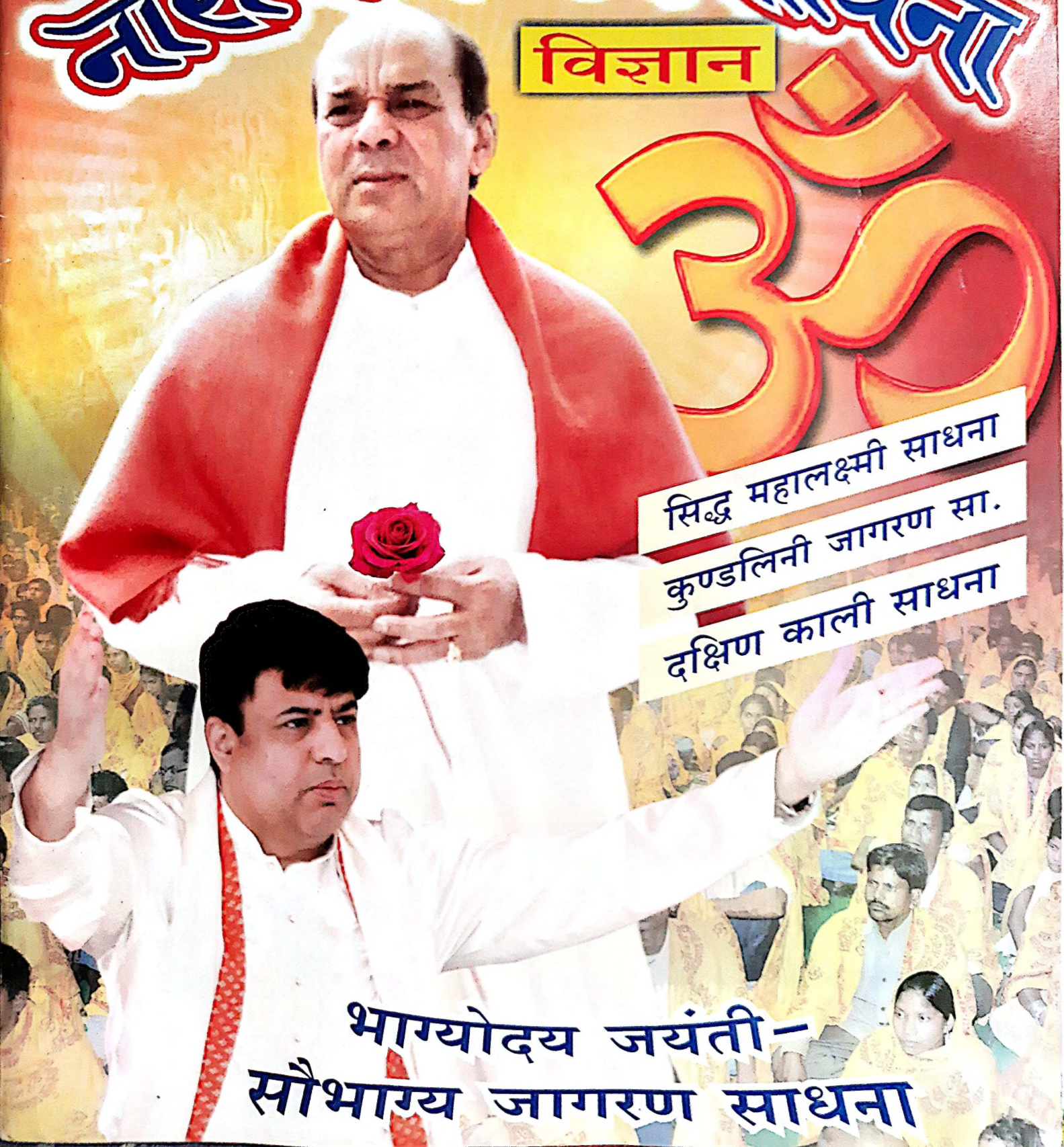
काठमाण्डू, बुटवल और पालमपुर म

काठमाण्डू

बुटवल

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ||
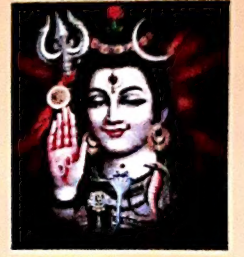
दारिद्र्य नाश और रुके हुए कार्यों की सिद्धि हेतु : सिद्ध महालक्ष्मी सा.

पापदोष निवारण, शक्ति प्राप्ति, शत्रु शांति हेतु : दक्षिण काली सा.

रक्षाबंधन पर विशेष : निर्भयता एवं मान प्रतिष्ठा के लिए सुदर्शन चक्र साधना

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

स्तोत्र

योग

आयुर्वेद

प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद

पूजनीया माताजी

(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक

श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक

राजेश कुमार गुप्ता
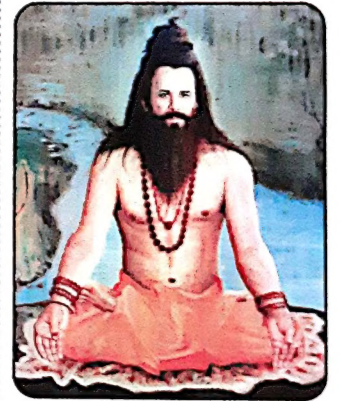
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक श्री अरविन्द श्रीमाली द्वारा दीवान पब्लिकेशन प्राईवेट लिमिटेड A-6/1, मायापुरी, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से मुद्रित तथा 'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' कार्यालय हाई कोर्ट कॉलोनी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति	40/-
वार्षिक	405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेवख पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-27354368, 011-27352248

नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन : 0291-2433623, 2432209, 2432010

WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

गुरौ सिद्धि गुरौ पूर्ण शक्तिपीठस्तथैव च।
यस्य साधक सौभाग्य पूर्णं सिद्धं न संशयः॥

गुरु ही सिद्धि हैं, गुरु ही पूर्ण हैं और जो सद्गुरु का निवास है साधक के लिए वही शक्तिपीठ है। यदि ऐसे अवसर को प्राप्त कर साधक वहाँ बैठकर साधनाएँ सम्पन्न करता है तो वह निश्चय ही सौभाग्यशाली है और साधनाएँ सम्पन्न कर वह पूर्ण सिद्धि प्राप्त करता ही है, इसमें कोई संशय नहीं है।

गुरु की महत्ता

किसी सक्षम गुरु के दो शिष्य घने जंगल में जा रहे थे। अचानक जंगल में कंपायमान कर देने वाली शेर की तेज गुर्राहट गूँजी। दोनों शिष्यों ने गुर्राहट की ओर नजर दौड़ाई तो कुछ ही दूरी पर शेर आक्रामक मुद्रा में घूरते दिखाई दिया। दोनों शिष्यों में से एक शिष्य घबराकर जान बचाने हेतु पास के पेड़ पर चढ़ गया। दूसरा शिष्य उसी पेड़ के नीचे गुरु ध्यान में मग्न होकर गुरु मंत्र में लीन होकर बैठ गया। थोड़ी देर बाद गुर्राहट करता हुआ शेर पेड़ के नीचे आया।

परंतु यह क्या? गुर्राहट करता हुआ शेर अचानक शांत होकर ध्यान मग्न वाले शिष्य को सूंघता हुआ चारों ओर चक्कर काटकर चला गया। पेड़ पर बैठा शिष्य आश्चर्य से भर उठा। शेर के चले जाने के थोड़ी देर बाद दोनों शिष्य बातचीत करते हुए जा रहे थे। तभी उस शिष्य को (जो ध्यान मग्न होकर बैठा था) मधुमक्खी ने जोर से काटा, वह शिष्य दर्द के मारे बिलबिलाकर रोने लगा। दूसरे शिष्य से रहा न गया और अपने गुरु भाई से पूछ बैठा, क्या कारण है, आपके पास पेड़ के नीचे जब शेर खड़ा था तो आपको कोई घबराहट न हुई और एक मधुमक्खी के काटे जाने पर रोने लगे तो वह बोला, उस समय मैं गुरु ध्यान, गुरु चिंतन में लीन था। गुरु ध्यान, गुरु चिंतन में लीन रहते समय शेर रूपी यमराज क्या बिगाड़ सकता था। अब मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे चिंतन में लीन था। इस कारण मैं देह दर्द से परेशान हो गया हूँ। अर्थात् जब आप गुरु चिंतन और गुरु मंत्र में लीन होते हैं तो संसार की सारी चिंताएं आप से दूर हो जाती है।

साधना चिन्तन

मनुष्य सांस लेता है और पशु भी सांस लेता है, पशु भोजन करता है और मनुष्य भी भोजन करता है, पशु संतान पैदा करता है और मनुष्य भी संतान पैदा करता है मगर वे हमसे ज्यादा समाज में उन्नतिशील नहीं है, समाज में गतिशील नहीं है। उनका किसी प्रकार का मान-सम्मान नहीं है। धन के माध्यम से जीवन में ऊँचा नहीं उठा जा सकता है, सुंदर शरीर के माध्यम से भी जीवन में ऊँचा नहीं उठा सकता। केवल ऊँचा उठने की प्रक्रिया जो है वह केवल उस चिंतन के माध्यम से है जिसके माध्यम से एक सामान्य नर नारायण तक पहुँच सकता है, एक सामान्य व्यक्ति उस प्रभु के दर्शन कर सकता है जो जीवन का आधार है, जो जीवन का चिंतन है और यदि हम दर्शन नहीं कर सके तो व्यर्थ है हमारा जीवन। मगर ऐसी बात तो मुझसे पहले कई सैकड़ों लोगों ने आपसे कहीं होगी।

मैं तो नई बात कुछ कह ही नहीं रहा हूँ। उन लोगों ने भी यही कहा है कि जीवन में प्रभु के दर्शन होने चाहिए और मैं भी यही बात कह रहा हूँ कि जीवन में प्रभु के दर्शन होने चाहिए और पिछले एक हजार वर्षों से लोग कहते आए हैं और मैं भी कह रहा हूँ। फिर अंतर क्या है? 'कहने और करने' में मूलभूत अंतर है। अगर ये कहें कि हम लोग राम-राम करेंगे और राम जी के दर्शन हो जाएंगे, तो नहीं हो सकते। ये संभव नहीं है। यदि हम भोजन-भोजन करे और भोजन से पेट भर जाए, ऐसा संभव नहीं है। उसके लिए तो खाना बनाकर पेट में डालने की प्रक्रिया तो करनी ही पड़ेगी। केवल मंत्र जाप और केवल ईश्वर का ध्यान लगाने से ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती, मानसिक शांति हो सकती है। ये दोनों चीजें अलग-अलग है। हम जब यह सोचते हैं कि हम ध्यान लगा लेते हैं, तो यह केवल हमारी न्यूनता है, हमारी कमजोरी है, ये केवल हमारा एक घमण्ड है, ये हमारा गर्व है कि हम ध्यान लगा लेते हैं।

'ध्यान' का मतलब ये है कि हमारा अस्तित्व हमें ज्ञात ही न हो, हमें पता ही न पड़े कि हम बैठे हैं, हमें पता ही न पड़े कि हम कुछ है, बिल्कुल डूब जाएं। ऐसा नहीं पता पड़े कि पास में आवाज आ रही है या रसोई में कोई बर्तन की खड़खड़ाहट आ रही है। यदि वो कुछ आवाज सुनाई नहीं देती तो समझना चाहिए ध्यान है अन्यथा तो ध्यान नहीं लग सकता और हमारे ऋषियों ने, मुनियों ने योगियों ने, साधु-संन्यासियों ने इससे पहले भी जिन लोगों ने ये ही बातें आपके सामने प्रवचन में कही होंगी कि ध्यान लगाना चाहिए, गुरु का चिंतन करना चाहिए, मंत्र-जप होना चाहिए या राम-राम करना चाहिए। प्रैक्टिकल कोई तथ्य नहीं आया आपके सामने और जब तक प्रैक्टिकल नहीं आएगा तब तक . . .अभी आप पैंतालीस साल के हो गए, फिर यही सोचते-सोचते पचपन साल के हो गए, फिर सत्तर साल के हो जाएंगे, फिर समाप्त हो जाएंगे और ये सोचते रहेंगे कि हमने राम नाम का मंत्र जाप तो किया था या कृष्ण का मंत्र जाप किया था या मंदिर में जाकर दर्शन किए थे। ये तो केवल आधार है, बेस (लरीश) है। इसके माध्यम से जो श्लोक में बताया गया है कि हमें एक मामूली मनुष्य से पूर्णता तक पहुँचना है। उस पूर्णता की परिभाषा क्या है? और यदि पूर्णता की परिभाषा ज्ञात नहीं तो पूर्णता तक पहुँच नहीं सकेंगे। यदि हमें ये ज्ञात नहीं है कि कनॉट प्लेस कैसे पहुँचना है, अगर हमें असली रास्ता मालूम नहीं है तो हम कनॉट प्लेस नहीं पहुँचकर, करोल बाग पहुँच जाएंगे।

जाना तो कनॉट प्लेस है और कनॉट प्लेस का रास्ता मालूम नहीं है और साधु ने, योगी ने आपको कहा था कनॉट प्लेस जाना चाहिए बच्चे, वही शांति मिलेगी और उन्होंने ये नहीं बताया कि किस तरीके से कनॉट प्लेस पहुँचें? जब आपको तरीका ज्ञात नहीं होगा, जीवन में उन्नति नहीं हो सकती, कनॉट प्लेस नहीं पहुँच सकते, प्रभु के दर्शन नहीं कर सकते और प्रभु के दर्शन नहीं कर सकते तो प्रभु में विलीन भी नहीं हो सकते और प्रभु में विलीन नहीं हो सकते तो पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकते।

इसलिए वेदों में कहा गया है 'ईशावास्योपनिषद' में कहा गया है कि "ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्

पूर्णमुदच्यते।" हम पूर्ण हैं और पूर्णता में विलीन होने पर ही पूर्ण हो सकते है। हम तो पूर्ण हैं, प्रभु ने हमें पूर्ण बनाया ही है। दो आँखें, नाक, कान, हाथ-पैर कोई कमी तो रखी ही नहीं प्रभु ने, कोई कमी नहीं रखी। मगर ये पूर्णता उस पूर्णता में पहुँचेगी तो पूर्णता प्राप्त होगी। ये एक अधूरी पूर्णता है। केवल मेरे प्रवचन को सुनकर आप पूर्णता तक नहीं पहुँच सकते। उसको जब आप प्रैक्टिकल रूप में अपने जीवन में उतारेंगे तो पूर्णता तक पहुँच सकोगे, पूर्णता प्राप्त हो सकेगी। तब उस प्रभु के साक्षात् दर्शन हो सकेंगे, जिसको शास्त्रों में ब्रह्म कहा गया है, कृष्ण कहा गया है, राम कहा गया है, बुद्ध कहा गया है, महावीर कहा गया है, जो कुछ भी उनके नाम रखे गए हैं। हम पूरे उनसे आत्मसात कर सकते हैं, एकाकार हो सकते है, उनमें बिलकुल विलीन हो सकते हैं, उनमें अपने आपको निमग्न कर सकते है और जब निमग्न कर सकते है, जीवन में सफलता प्राप्त हो सकती है। फिर जीवन में बुढ़ापा कोई तकलीफ नहीं दे सकता, फिर जीवन में कोई समस्याएं तकलीफ नहीं दे सकती। क्योंकि जैसा कि मैंने इस श्लोक में बताया - धन, यश, मान, पद-प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य ये पूर्णता नहीं है। अगर ये पूर्णता होती तो बिड़ला जी तो पूर्ण हो चुके, फिर तो उन्हें कोई कमी है ही नहीं और हम सबसे वे ज्यादा सुखी होंगे।

यदि पैसा ही सब कुछ दे सकता है तो बिड़ला जी के जीवन में कोई कमी है ही नहीं। मेरे कहने का तात्पर्य है कि ये भौतिक सुख हमें पूर्णता नहीं दे सकते। ये केवल संतोष दे सकते हैं। ये संतोष कि पिछले साल मेरे पास चार लाख रुपये थे अब साढ़े चार लाख हो गए। बस 50 हजार तो मैंने बेईमानी से, छल से, झूठ से कपट से जैसे भी कमाए। एक लाख रुपया कमाया और कमाने के बाद में अब आप आठ-नौ कपड़े तो पहन के आए नहीं, 4-5 कपड़े ही पहने। अब पाँच लाख रुपये हो गये तो 10-12 कपड़े पहनने चाहिए थे आपको क्योंकि एक लाख रुपये ज्यादा बढ़ गए इस साल और पहले रोटी पाँच खाते थे अब 15-20 रोटी खानी चाहिए आपको। रोटी चार ही खाएंगे आप और कपड़े चार ही पहनेंगे, चाहे बीस लाख रुपये होंगे, चाहे पचास लाख रुपये होंगे। फिर हम उस आपा-धापी में, उस भाग-दौड़ में, छल-कपट में जहाँ गुजरते हैं उसके माध्यम से हमें मिलता क्या है? मिलता है तनाव, परेशानी, बाधाएं, अड़चने। मगर उसके माध्यम से जीवन में पूर्णता नहीं मिल सकती। शास्त्रों, वेदों, पुराणों, उपनिषदों एवं . . .।

आपके पिता जी का, दादा जी का और संगी-साथियों का जीवन में मूल लक्ष्य ये है कि जीवन में आनंद मिलना चाहिए। और आनंद और सुख में अंतर है। आप पंखा खरीद कर लाएंगे, घर में गर्मी है, सुख मिलेगा, आनन्द नहीं मिलेगा। आनंद अलग चीज है। आनंद तो ये है कि आप आनंद से सो रहे हैं, मस्ती के साथ और चाहे पंखा चल रहा है, चाहे नहीं चल रहा है वो आनंद है। यहाँ बैठे हुए है, सर्दी पड़ रही है, न पीने के लिए गर्म चाय मिल रही है, न पहनने के लिए कपड़े मिल रहे हैं, फिर भी मस्ती के साथ बैठे हुए है, यह आनंद है। ये सुख नहीं हैं। सुख के माध्यम से तो भोग मिलेगा। जब मकान अच्छा होगा, जब पंखे होंगे, ट्रांजिस्टर होंगे, टेपरिकार्डर होंगे। ये सुख तो हैं, मगर क्या टेपरिकार्डर सुनने से आनंद मिल सकता है, क्या आपके

ऊपर पंखा चलने से या हवाई जहाज में बैठने से आनंद मिल सकता है? आनंद अलग चीज है।

आनंद अंदर से पैदा होगा, सुख बाहर से पैदा होता है। बाहर से पंखा लगने पर सुख तो हो सकता है, ठंड में हीटर तो लग सकता है, पर हीटर लगने पर भी यदि आप टेंशन में बैठे हैं, बहुत परेशानी में बैठे हैं। पति-पत्नी के लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं। आप सोचे कहाँ फंस गया मैं इसके बीच में। ये जीवन में आनंद की उपलब्धि नहीं दे सकती। आनंद तो जब आपके अंदर से एक आवाज आएगी, एक चिंतन आएगा, एक ध्यान में डूब सकेंगे, एक जीवन में तृप्ति मिल सकेगी, जब जीवन में एहसास होगा कि मैंने कुछ प्राप्त किया है, मुझे कुछ उपलब्ध हो रहा है। वह जो उपलब्ध होने की क्रिया है वह आनंद है और फिर मैं ये पूछ रहा हूँ कि अगर ये नहीं है तो फिर हमारे जीवन में और पशु के जीवन में कोई अंतर नहीं है। हम भले ही ये अहंकार कर लें, घमण्ड कर लें कि हम महान हैं, बड़े है, हम पड़ोसी से ऊँचे हैं, हमारा मकान बहुत ऊँचा हैं, हम ज्यादा सुंदर हैं, ये केवल घमण्ड हैं और इस घमण्ड के माध्यम से तो जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता।

हम भारतवर्ष में हैं और भारतवर्ष में एक बहुत महान शासक सिकंदर महान हुआ। उसको महान कहते है। बाकी राजा लोग कहलाए, सम्राट कहलाए। महान दो-तीन लोगों के बीच में ही लगा और सिकंदर महान पूरा गजनी, पूरा रूस, पूरा युनान इन सबको लूटता हुआ और पूरे भारतवर्ष को लूटा। वह हीरे-मोतियों से भरे हुए हाथी अपने देश ले गया। सोने-चाँदी से भरे हुए दो हजार हाथी भरकर के सिक्कों से ले गया। हजारों औरतें यहाँ से उठा करके ले गया। इसलिए कि वो राजा था इसलिए कि वो एक आक्रमक था, इसलिए कि यहाँ के राजा लोग उसका सामना नहीं कर सके और इसलिए कि उसमें विजय होने की भावना थी और एक लूटने की भावना थी, एक छीनने की भावना थी, अपने आप को बहुत ज्यादा धनवान बनने की इच्छा थी। जब उसकी मृत्यु निकट आई जब उसको एहसास होने लगा कि अब मैं चार-छह घण्टे में मर जाऊँगा और मेरी साँस रूकने लगी है, तो उसने अपने सैनिक को, सेनापति को बुलाया, महामंत्री को बुलाया, वैद्य को बुलाया।

सिकंदर ने वैद्य से कहा, "मेरी आयु कितनी बाकी है?" वैद्य ने कहा, महाराज अब आपकी नाड़ी टूटने लगी है, हो सकता है 3-4 घण्टे और जीवित रहें। जो आया है, उसको तो जाना ही पड़ेगा - महाराज।"

सिकंदर ने सेनापति को कहा कि मैंने जो कुछ प्राप्त किया है उन हीरों का यहाँ ढेर लगा दो मेरे सामने। मैं एक बार देख लेना चाहता हूँ कि मैंने कितने हीरे एकत्र किए और सोने के सिक्कों का भी ढेर लगा दो और मेरी जितनी रानियाँ है, दस-बारह हजार उन सबको एकत्र करके यहाँ खड़ी कर दो। मैं मरने से पहले एक बार उन सबको देख लेना चाहता हूँ।

हीरों का ढेर लगा दिया गया, एक तरफ सिक्कों का ढेर लगा दिया गया, माणिक-मोती, मूँगे उनका ढेर लगा दिया। हजारों रानियां थी, उनको खड़ा कर दिया। उनके बेटे, पोते-पोतियाँ वो खड़ी हो गई और

सिकंदर लेटा हुआ अंतिम घड़िया गिन रहा है और हीरों के ढेर को देखें तो गर्दन पीछे मुड़े, इतनी ऊँचाई, इतना ढेर एक-एक हीरा लाखों का था। आप कल्पना करे उस ढेर का कितना होगा।

सिकंदर ने सैल्यूकस महामंत्री को पूछा, "यह सब मेरा है?" महामंत्री ने कहा, "महाराज आप का है, आप ही तो लेकर आए हैं। भारतवर्ष को लूटकर, रूस को लूटकर लाए जितने देश हैं, उन सबको लूटकर लाए। ये सब आपका है।"

"और ये रानियाँ?"

"ये भी सब आपकी है महाराज। सिकंदर ने कहा, "मरने के बाद मेरा क्या होगा?" महामंत्री ने कहा, "मरने के बाद कुछ नहीं होगा। बांस की दो कपचियाँ लाते हैं, उनको बाँधते हैं और फिर आपको लेटा दिया जाएगा और फिर चार कंधों पर आपको श्मशान में ले जाकर जला देंगे।"

"फिर ये सब?"

"ये सब किसी के साथ गया नहीं - महाराज।"

"तो एक काम करना मेरी अंतिम इच्छा यही है। कोई वसीयतनामे में कुछ लिखवाकर जाता है मेरे बेटे को ये दे देना, ये मेरे पोते को दे देना या ये। उसने कहा, मेरे वसीयतनामे में और कुछ नहीं लिखना, एक मैं जो कह रहा हूँ, वो काम करना।"

"महाराज!, हुक्म दो। आप जो कहेंगे वो ही पूरा होगा। आप तो महान हैं, पूरे संसार में महान शब्द आपके पीछे ही लगा है।"

सिंकदर ने कहा, "अर्थी में बाँधते कैसे है आदमी को?" महामंत्री ने कहा, "महाराज इसमें तो कोई लंबी-चौड़ी बात नहीं है। आदमी को लेटा देते है। हाथ-पैर सीधे कर देते है और उसके ऊपर सफेद कपड़ा ढक देते है, कफन और उसे मुँह से पूरा लपेट देते है ताकि उससे नीचे गिर न जाए और श्मशान में लकड़ियों पर रखकर जला देते है।"

सिकंदर ने कहा, जब "बांधों तो मेरे दोनों हाथ नीचे लटका देना बाकी शरीर को बाँध देना कफन से। हाथ नीचे लटके रहने चाहिए।"

"महाराज! ऐसा तो आज तक नहीं हुआ। हाथ तो शरीर से चिपक करके फिर उसके ऊपर कफन लगाते है। ये आप नई बात कह रहे हैं। ऐसा कैसे होगा?"

सिकंदर ने कहा, "जो मैं कह रहा हूँ, वैसा करिए। मेरी आज्ञा, मेरी इच्छा तो ये हैं मेरे दोनों हाथ लटके हुए होने चाहिए।"

महामंत्री ने कहा, "महाराज कोई तो कारण होगा। ऐसा आप क्यों कह रहे हैं कि दोनों हाथ लटके हुए

होने चाहिए अर्थी के बाहर।

सिंकदर ने कहा, "सब लोगों को एवं आने वाली पीढ़ियों को मालूम पड़ जाए कि इतना बड़ा सिकंदर महान भी खाली हाथ गया। ये मालूम होना चाहिए। बस इसलिए मेरे दोनों हाथ लटके होने चाहिए।

अगर सिकंदर महान खाली हाथ जाता है तो गारण्टी के साथ आप भी खाली हाथ चले जाएंगे क्योंकि वो कुछ नहीं ले जा सका, तो हम भी नहीं ले जा सकेंगे। फिर साथ में जाएगा क्या? जब कुछ नहीं ले जाएंगे तो ये सब साधन झूठे हैं, बेकार है। ये धन अगर बेकार है तो फिर हमारे पास ले जाने के लिए चीज क्या है? क्या ले जाएं? कैसे ले जाएं? न पत्नी साथ जा सकेगी, न पुत्र साथ जा सकेगा, न भाई-बंधु, कुछ नहीं जा सकेगा। ये अकेले ही यात्रा करनी है तो ये ताम-झाम क्यों करें? क्यों इतनी हाय-तौबा करें? चार लाख पांच लाख क्यों बनाए? जीवन-यापन के लिए तो बहुत जरूरी है। अगर सपूत बेटा होगा तो और कमा करके जिन्दगी व्यतीत कर लेगा और कपूत बेटा होगा तो पाँच लाख उड़ा देगा। आप उसमें क्या करेंगे?

कपूत बेटा तो साल में उड़ा कर दूसरे साल खाली हाथ हो जाएगा और सपूत बेटा होगा तो तुम्हारे पैसों की कुछ जरूरत है ही नहीं। वो खुद पाँच लाख इकट्ठा कर लेगा। और अगर सिकंदर महान कह रहा है, सिकंदर महान ने एक ही बात कही अगर आप यूनान का इतिहास पढ़े। उसने कहा, "मैंने जीवन में सब कुछ प्राप्त किया। काश! कोई रास्ता बता सकता जिस रास्ते पर चल कर मैं प्रभु में लीन हो सकता। उस आनन्द को प्राप्त कर सकता जो आनंद आम आदमी प्राप्त नहीं कर सकता। वो पूर्णता अगर मैं प्राप्त कर सकता तो आज मैं बहुत प्रसन्नता के साथ जाता। आज मेरे चेहरे पर मुस्कुराहट होती। आज मेरे होठों पर हंसी होती। आज मेरी आँखों में आँसू हैं। आज मेरे हृदय में पश्चाताप है कि ये मैंने एकत्र किया जो एकत्र करना चाहिए था वो नहीं कर पाया।"

सिकंदर तो चला गया मगर एक इतिहास लिखकर चला गया कि हमें जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के लिए . . . भजन गाने से और मंदिर में जाने से और हाथ जोड़ने से और आँखें बंद करके बैठने से पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती। ये केवल संतुष्टि हो सकती है अपने आपको समझाने की एक प्रक्रिया है कि मंदिर में गए। मंदिर में जाए और आपके मानस में ये उमड़ रहा कि 4000 रुपये वसूल करने है। इधर से होते हुए निकल जाऊँ। 4000 रुपये तो ले लूँ। आपके मन में वो घूम रहा है और आप मंदिर में भगवान के सामने खड़े है कि हे भगवान उसको सद्बुद्धि आ जाए। 4000 उसने दिए नहीं 4000 रुपये फंसे हैं। हे ईश्वर! मेरे 4000 रुपये दिलवा देना तो ठीक है मैं इधर से निकल जाता हूँ। मैं कल जरूर आपका 5 रुपये का भोग लगा दूंगा। अब 4000 लेने के लिए 5 रुपये का भोग ही तो लगाना है तो आपने सोचा इसमें क्या नुकसान है, फँसे हुए रुपये तो है ही 5 रुपये देने से ही काम निकल जाता है तो हमें क्या तकलीफ है? अब आप खुद सोच लीजिए कि मंदिर में जाने की आपकी प्रक्रिया क्या है? आपमें से अधिकतर लोगों की प्रक्रिया चिंतन की, डूबने की नहीं है। और

ये बात सब लोग कहते हैं मगर कैसे डूबे? हम अपने आप में आनंदमग्न कैसे हों? किस तरीके से पूर्णता तक पहुँचे? तरीका कौन-सा है? ये तो किसी ने नहीं बताया। ये सब ऊपरी-ऊपरी बात तो सबने कही, मैं भी कहकर चला जाऊँगा। अभी एक घण्टा हो जाएगा, प्रवचन करके चला जाऊँगा। आप कहेंगे गुरुजी बहुत अच्छे बोले और मैं कहूँगा चलो, मैं भी बोल कर आ गया।

मगर उस रास्ते को नहीं बताएंगे जिस पर चलकर हम पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं तो आपके पास उस अंधेरे में टटोलने के अलावा कुछ नहीं रहेगा जो मैं आपको अंधेरा दे रहा हूँ। मैं भी आपको अंधेरा ही दे रहा हूँ। जो बाकी साधु-संन्यासियों ने आपको दिया कि जाओ बस मंदिर में दर्शन कर लो, रामलला के दर्शन करके खड़े हो जाओ बस रामलला तुम्हारे पास आ जाएंगे। ऐसे तो रामलला नहीं आ सकते। ऐसे तो प्रभु नहीं आ सकते न आप प्रभु के पास पहुँच सकते हो आपके बीच में गैप है। मैं और तुम्हारे बीच में एक ही कड़ी है मैं इसको बंद कर दूँ तो मैं आप तक नहीं पहुँच सकता। ये बीच का मीडियम आप को बीच का आधार नहीं बताएगा तब तक आप गुरु के पास पहुँचेंगे नहीं, पहुँचेगे नहीं तो पूर्णता नहीं मिल सकती। ये मीडियम, ये माध्यम इसको कहते है साधना। साधना का मतलब है।

जो शरीर को साधता है वह साधना है। शरीर को कंट्रोल करता है, शरीर को नियंत्रित करता है और आपका शरीर नियंत्रित है नहीं, इसलिए शरीर नियंत्रित नहीं है कि आप दो घण्टे एक जगह आराम से बैठ नहीं सकते। हाथ-पैर हिलाने पड़ते है। कभी इस पांव को इधर करना पड़ता है, कभी उस पांव को, कभी हाथ हिलाना पड़ेगा, कभी विश्राम करना पड़ेगा, कभी जम्बाई लेनी पड़ेगी। दो घण्टे आप प्रभु के चरणों में बैठ नहीं सकते। 15 मिनट आँख बंद करके उनमें लीन नहीं हो सकते। सास ज्योंही आँख बंद करके बैठी और मुख से हे राम, हे राम जी . . . बहू थोड़ा दूध उफन जाएगा, ध्यान रखना, हे राम, राम-राम. . .। "अब दूध उफने, नहीं उफने तुम्हें क्या? तुम प्रभु के चरणों में बैठी हो, उफन जाएगा तो, उफन जाएगा, नहीं उफनेगा तो नहीं उफनेगा। बहू की ड्यूटी है तुम्हारी क्या गलती?"

"मगर अब दूध 20 रुपए किलो है गुरु जी आप तो अब बैठे-बैठे बोल जाएंगे। 20 रुपये बर्बाद हो जाएंगे हमारे। तो बताना पड़ता है आप तो उठके चले जाओगे तो 20 रुपये का कौन हिसाब करेगा और बहू में ज्यादा अक्ल नहीं है। गुरु जी बहू में होता तो मझे फिर ये करना क्यों पड़ता?" "और कल आपकी आँख बंद हो जाएगी और दूध उफनेगा, तब क्या करोगे? फिर कौन कहने को आएगा? मगर वो प्रभु के चरणों में तो बोले।"

मर जाएंगे तो तब देखा जाएगा। दूध उफनेगा तब देखा जाएगा मगर हम उस मृत्यु को याद नहीं कर पाते और हमारे पास जो भी समय बचा है और कितना समय बचा है? ये तो आपको पता ही नहीं?

जब महाभारत का युद्ध हो रहा था। कौरवों और पाण्डवों का युद्ध हो रहा था। वो धर्मयुद्ध था। छल-युद्ध नहीं था, झूठ युद्ध नहीं था और धर्म युद्ध का तात्पर्य था सूर्यास्त होने के बाद युद्ध नहीं करेंगे, लड़ेंगे नहीं।

वापिस सूर्योदय होने के बाद में ही कौरव और पाण्डव आपस में युद्ध करते थे और दिनभर युद्ध करते थे और शाम को दुर्योधन, अर्जुन और भीष्म सब पास में बैठकर भोजन करते थे। एक ही भोजनशाला में। युधिष्ठिर बैठा हुआ है और दुर्योधन भी बैठा हुआ और भोजन कर रहे हैं और वो अपने कौरव के खेमे में चला जाता है और वो पांडव के खेमे में चला जाता है। दूसरे दिन युद्ध करते थे इसलिए इसे धर्म युद्ध कहा गया। और एक दिन शाम को, रात को आठ बजे की बात है युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव और अर्जुन पांचों भाई मिलकर ये मंत्रणा कर रहे थे कि कल कैसे युद्ध करें? किस पर प्रहार करे? किस तरफ जाए? क्या करें? कौन से शस्त्रों का प्रयोग करे और तभी कोई एक साधु आया और अलख लगाई और भिक्षामदेही की आवाज लगाई पांचों पांडव निर्णय कर रहे थे कि कल युद्ध में कैसे करना है? बीच में वो साधु आ गया तो युधिष्ठिर ने कह दिया कि महाराज, कल सुबह आना कल सुबह आपको भिक्षा देंगे। युधिष्ठिर का कहना हुआ और भीम उठा और ढोल बजाना शुरू किया जोर-जोर से। अर्जुन ने कहा 'भीम क्या कर रहे हो? इतने जोर-जोर से रात्रि को युद्ध का नगाड़ा क्यों बजा रहे हो? क्या है ये? नगाड़ा क्यों बजा रहे हो?'' उसने कहा, ''अब निश्चय हो गया है कल सुबह तक हम, कम से कम युधिष्ठिर नहीं मरेंगे। ये गारण्टी हो गई। युधिष्ठिर झूठ बोलते नहीं। इसे कल भिक्षा देनी है। इसलिए सुबह तक मर ही नहीं सकते ये।''

युधिष्ठिर ने कहा ''कितनी बड़ी गलती हो गई। मुझे क्या मालूम घण्टे भर बाद में जीवित रहूँगा या नहीं रहूँगा? मैंने एक सत्यवादी होने के बावजूद ये आश्वासन कैसे दे दिया कि मैं कल तुम्हें भिक्षा दूँगा? सुबह क्या होगा? मैं जीवित रहूँगा कि नहीं।''

इसलिए पूछ रहा हूँ कि आपका समय कितना है आपको ज्ञात नहीं। संसार में कोई मशीनरी नहीं बता सकती कितना समय है आपके पास आयु कितनी है? कोई विज्ञान नहीं बता सकता, कोई साइंटिस्ट नहीं बता सकता, कोई डॉक्टर नहीं बता सकता। मैं भी नहीं बता सकता, आप भी नहीं बता सकते और यदि आप सोचें कि गुरु जी ये ध्यान दो-तीन साल बाद लगाना शुरू कर देगें और ये साधना जो अभी आप कह रहे हैं थोड़े बेटे की शादी हो जाए और बहू आ जाए उसको काम-धाम सौंप दे फिर आपके पास आएंगे गुरुजी और वो सब ध्यान आदि सब लगाएंगे गुरुजी।

अब कब शादी होगी, कब बहू आएगी, कब आप उसको सिखाएंगे रसोई बनाना और फिर आप मेरे पास आएंगे। तब तो इस बीच में कब क्या हो जाए, मौत कब झपट्टा मार देगी आपको कुछ पता नहीं। इसलिए जो क्षण आपके पास में है वो आपके हैं उन क्षणों का उपयोग करेंगे तभी आपके जीवन में पूर्णता आ पाएगी और मैंने ये बताया कि उस पूर्णता तक पहुँचने के लिए जो कुछ ऊपरी बातचीत की जाती है, उस बातचीत से पूर्णता नहीं मिल सकती। साधना के माध्यम से। साधना एक ऐसा माध्यम है आपके और प्रभु के बीच में। उस साधना के माध्यम से उस जगह पहुँच सकते हैं। दान देने से प्रभु प्राप्त नहीं हो सकते, सुख मिल सकता है, संतोष मिल सकता है। एक मंदिर बनाने से संतोष मिलता है कि मैंने एक मंदिर बनाया। एक प्रभु को स्थापन किया। ये पूर्णता तक पहुँचने का रास्ता नहीं है। ये क्रिया नहीं है, यह एक परोपकार है एक सामाजिक सेवा है, इसको समाज सेवा कहते हैं आप प्रवचन सुनते हैं। यह एक मन की तुष्टि है। वो साधना नहीं है। साधना एक अलग चीज है। साधना का उस मंदिर जाने या नहीं जाने से, इस बगीचे में बैठने से, नहीं बैठने से कोई संबंध नहीं है। साधना बिल्कुल एक अलग तथ्य है, प्रार्थना अलग है, राम नाम जपना एक अलग चीज है। आँखें बंद करना एक अलग चीज है, दान देना एक अलग चीज है। इनका साधना से कोई संबंध नहीं है। साधना बिल्कुल अलग चीज है। साधना एक ऐसी चीज है जिसके माध्यम से आप उस जगह पहुँच सकते है जहाँ परमानंद की प्राप्ति होती है।

ब्रह्मानंद परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति ।
द्वन्द्वातीतं गगन-सदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।।

जहाँ कोई धुंध नहीं है, जहाँ कोई भय नहीं है, जहाँ मृत्यु का भय नहीं है, जहाँ मृत्यु झपट्टा मार ही नहीं सकती। आप मर नहीं सकते ये गारण्टी है। एक हजार साल तक भी मर नहीं सकते क्योंकि राम अगर नहीं मरे तो आप भी नहीं मर सकते, कृष्ण नहीं मरे तो आप भी नहीं मर सकते, यदि गौतम बुद्ध नहीं मर सकते, महावीर स्वामी नही मर सकते तो आप भी नहीं मर सकते। क्यों नहीं? राम का नाम तो आपको ज्ञात है कि एक रामचंद्र जी थे, दशरथ जी के पुत्र थे इतना तो आपको भी ज्ञात है। दशरथ जी के पिता जी का नाम क्या था? वो आपको ज्ञात है ही नहीं और उनके दादा जी का नाम क्या था? ये आपको ज्ञात है ही नहीं, क्योंकि वे मर गए। वो मर गए, राम मरे नहीं इसलिए राम जी हमें आज भी याद हैं। राम जी के जो दादा जी थे वो मर गए, अगर आपको भरोसा नहीं है तो आपको अपने पिता जी का नाम ज्ञात है इतना मुझे ज्ञान है और आपको अपने दादा जी का नाम मालूम है तो ये भी मुझे ज्ञात है। आप में से 50 प्रतिशत लोगों को परदादा का नाम मालूम नहीं है और परदादा के पिता जी का नाम तो आपमें से किसी को भी ज्ञात नहीं है।

केवल चार पीढ़ी पहले आदमी मर गया तो चार पीढ़ी बाद आप भी मर जाएंगे। आपके बेटे आपका नाम याद रखेंगे, पोते नाम याद रखेंगे। अगले पोतों के बेटे नाम याद नहीं रखेंगे। क्योंकि आपने अपने परदादा के पिता जी का नाम याद रखा ही नहीं है। आदमी इतनी जल्दी मर जाता है और नहीं मरे इसलिए बेचारा बहुत
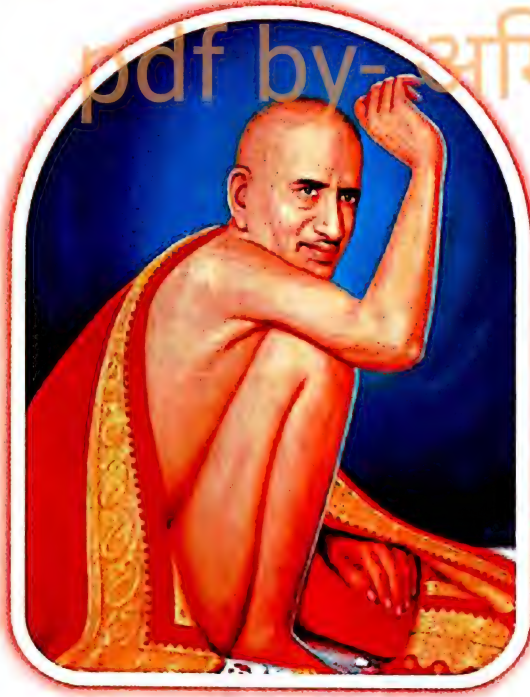
कोशिश करता है। यहाँ लिख देता है लक्ष्मीनाथ मार्ग। कुछ नहीं करेंगे तो शायद मर जाएंगे, तो लोग लक्ष्मीनाथ मार्ग लोग याद रखेंगे। कोई ताजमहल बना कर मर जाते है, कोई मंदिर बना कर मर जाते हैं, कोई धर्म ध्वजा लगा के मर जाते हैं, केवल इसलिए कि शायद मेरे मरने के बाद मैं जिन्दा रह सकूँ। बाकि ये सब लक्ष्मीनाथ मार्ग लिखकर के, पट्टी लगा करके और घर के बाहर कौशल्या भवन। इस कौशल्या भवन लिखने से कौशल्या जिन्दा नहीं रह सकती। वो तो आपकी बहू आएगी तो कौशल्या हटाकर के सुमित्रा भवन लिख देगी, फिर तुम क्या करोगे? तुम लगा के तख्ती चले जाओ। उस पर लिख दो सुमित्रा मार्ग वो पट्टी हटाकर वो कौशल्या मार्ग लिख देगी और कोई बेटा आएगा। तुम्हारा नाम हटा कर अपना नाम लगा देगा क्योंकि उसको भी जिन्दा रहना है। इससे जिन्दा नहीं रह सकते। ये संभव नहीं है, ये तरीका नहीं है।

ये हम अपने आपको एक छल में डाल रहे हैं कि शायद इससे जिन्दा रह जाए। इससे जिन्दा नहीं रह सकते। राम जी ने कोई पट्टा नहीं लगाया था, कृष्ण जी ने कोई ऐसा बोर्ड नहीं लगाया था कि ये बोर्ड लगाने से जिन्दा रहेंगे। गौतम बुदुध ने कोई ऐसा पट्टा नहीं लगाया, कोई ऐसा बोर्ड नहीं लगाया। मगर वे फिर भी जिन्दा है। आपको मुझको नाम मालूम है और संसार के 27-28 देशों में भगवान बुद्ध अपने शिष्यों के बीच जिन्दा है, मरे नहीं। शरीर मर गया पर व्यक्ति जिन्दा है और आप भी जिन्दा रह सकते हैं और जिन्दा रह सकते हैं - साधना के माध्यम से।

हिटलर का नाम सुना होगा - एक बहुत बड़ा, बहुत खतरनाक राजा हो चुका। लाखों लोगों का कत्ल करवा चुका था। उसने एक प्रयोग किया। उसने अपने देश के पाँच मौलवियों को और पाँच पंडितों को बुलाया और पूछा कि भगवान कैसे होते हैं? तुम्हारे खुदा कैसे होते हैं?

उन्होंने कहा, "खुदा कैसे होते हैं! ईश्वर कैसे होते हैं! क्या हिटलर ये तुम्हें कैसे बताएं? वो राम के रूप में भी होते है, धनुष-बाण लिए होते है, वे बाँसुरी लिए हुए भी होते है। उनके अलग-अलग रूप हैं।"

"खुदा व भगवान तो एक ही होगा, ऐसे पचास तरह थोड़े ही होते हैं? वो तो कपड़े अलग-अलग पहने हुए हैं। आप ये बताएं कि खुदा कैसा होता है? ईश्वर कैसा होता है?" उन्होंने कहा कि हम आपको समझा चुके हैं, भई अलग होते हैं। मुरली लिए हुए हो सकते हैं, भगवान धनुष बाण लिए हुए भी हो सकते हैं ओर भी कई रूप हो सकते हैं, नटवर-नागर हो सकते हैं और दुर्गा-भगवती जगदम्बा भी हो सकती है हाथ में तलवार लिए हुए, अष्ट भुजा वाली भी हो सकती है।

उसने कहा ऐसा तो नहीं हो सकता। मुझे आप सब मिल कर ये बताएं कि राम कैसे होते हैं या ईश्वर कैसा होता है? ईश्वर क्या है? वो कैसा होता है? एक ही तो होता होगा, ब्रह्म तो एक ही है न? और वे नहीं समझा सके तो उनको कैद में डाल दिया। उन मौलवियों को, पंडितों को कैद में डाल दिया और पीने के लिए केवल पानी दिया गया। खाना दिया ही नहीं। एक दिन बीत गया गया तो मौलवियों ने खुदा से इबादत की।

एकदम से घुटने टेक करके। सब पंडितों ने राम-राम-राम, कृष्ण-कृष्ण . . .किया। वो दिन तो बीत गया। अब तक तो खाना आया ही नहीं। क्या हुआ? क्या करूँ? ये साला हिटलर तो बहुत बदमाश है, खाना ही नहीं दिया है और सुबह हुई उन्होंने नमाज पढ़ी, भगवान की इबादत की, शाम हुई। दूसरी शाम होते ही राम-राम जप करने का समय आधा हो गया, पाँच बार नमाज के स्थान पर दो बार नमाज पढ़ना शुरू किया। कहा, "खाना तो आना चाहिए। बिना खाने के कैसे चलेगा। ये कोई तरीका हुआ। हमने कोई पाप किया था, कोई गालियाँ दी थी हिटलर को। ये कोई तरीका है?"

उसने फिर पानी पिला दिया, पानी भिजवा दिया कैद में। रोज खाने को कुछ नहीं। तीसरा दिन हो गया। अब वे चीखने लगे। पहले खाना दीजिए, बाकी सब बात बाद में। ये तुम क्या कर रहे हो? मुझे कैद क्यों कर रखा है? हमें कैद क्यों किया? वे नमाज भूल गए। राम-राम करना भूल गये अब रोटी-रोटी करने लगे। तीसरे दिन भी रोटी उन्हें नहीं मिली। शाम को सिर्फ चावल खिलाए। अब न खुदा से लड़ाई न ईश्वर से लड़ाई। चौथा दिन पूरा बीत गया और पाँचवां दिन हो गया। एकदम पस्त आँख बंद करें, सामने गोल-गोल रोटी दिखाई देने लगी। मुसलमान को भी और हिन्दू को भी। दोनों को वहाँ से बुलाया कि ईश्वर कैसा होता है? ईश्वर गोल-गोल होता है बिल्कुल फूला हुआ। तो ये मुसलमानों को भी खुदा वैसा हुआ, हिन्दुओं का भी ईश्वर वैसा हो गया। और अगर तुम्हारे पेट में रोटी ही नहीं है तो मैं तुम्हें कितनी ही साधना सिखाऊँगा। साधना की शक्ल भी तुम्हें रोटी की तरह ही दिखाई देगी तो पहले साधना के माध्यम से तुम्हारे जीवन के अभाव दूर होने चाहिए।

जब जीवन की आवश्यक जरूरतें पूरी होगी, तब जीवन में पूर्णता आ पाएगी। पहले तो ये आवश्यक है क्योंकि हम गृहस्थ है यदि हम साधु होते तो बच्चा कुछ नहीं ऑल राइट मैं तुम्हें कह दूँगा चलो कुछ नहीं ये घर बार क्या है? चलो मेरे साथ चलो हरिद्वार तट पर। तुम कहोगे, "महाराज आप तो लंगोट लगाए हुए है। ठीक है, मेरे घर में बच्ची बड़ी हो गई 24 साल की। शादी तो करें पहले। तुम्हारे बच्ची नहीं तुम्हें मालूम नहीं दुनियादारी क्या कहती है? साधु को मालूम नहीं भगवा कपड़े पहनने वाला नहीं बता सकता कि ये घर में जो टेंशन है लड़की 24 साल की हो गई। कितनी परेशानी है नहीं समझ सकता। भूख है उसको साधु नहीं समझ सकता। वह तो कहीं खड़ा होकर महाराज आशीर्वाद दे देंगे उसको घी पकवान खिला देंगे। हमसे मोटे-ताजे लाल सुर्ख हैं। हमारा चेहरा पिचका हुआ उनका चेहरा पिचका हुआ नहीं है कोई साधु-संन्यासी भूखा नहीं मर रहा है। एकदम लाल सुर्ख अंगारे की तरह बैठे हैं और हम बहुत पीले पड़े हुए दुःखी और तनाव में है इसलिए कि उनको मुफ्त की रोटियां मिल जाती हैं और हमें बहुत मेहनत करनी पड़ती है बड़ी मुश्किल से दो रोटी का जुगाड़ हो पाता है।

इसलिए साधना का तात्पर्य यह है कि हमारे जीवन में जो भी अभाव है, रोग अगर जीवन में रोग है आपको बहुत ज्यादा खाँसी बहुत बीमार हैं तो मैं साधना कितनी बताऊँगा उस साधना में आपको सफलता

नहीं मिल सकती। साधना कर ही नहीं सकते। खाँसी करेंगे या साधना करेंगे। घर में संतान नहीं है तो मैं साधना नहीं कर सकता हरदम एक टेंशन है। लड़की बड़ी है तो भी साधना में आपका ध्यान नहीं लग पाएगा। घर में पत्नी लड़ाई-झगड़ा कर रही है या पति लड़ाई-झगड़ा कर रहा है और मैं कहूँगा अभी आप जाकर आँख बंद करके बैठेंगे तो घर वाले बोलेंगे मैंने तो पहले ही कहा था कि मत जाओ, वहाँ कुछ नहीं सिखाते। फालतू में ये आँख बंद करके बैठेंगे। दुकान जाना है कि ये आँख बंद करके बैठ गए। क्या कर रहे हो तुम?

इसलिए साधना का उस श्लोक में जो श्लोक पहली बार मैंने आपको कहा तात्पर्य है कि उस साधना के माध्यम से गुरु उनकी उन समस्याओं का निराकरण करे जो उनके जीवन के अभाव है। जो जीवन के आपके अभाव है वो गुरु दूर करे तब वो गुरु है। उपदेश देकर जाने वाला गुरु नहीं हो सकता। तुम्हें उपदेश देकर फिर कहीं और। वो तो उसकी रोजी-रोटी का साधन है जब मैं तुम्हें उपदेश दूँगा, तुम दस रुपये पचास रुपये चढ़ाओगे ही चढ़ाओगे और दिन में 1000-2000 रुपये भी चढ़े तो मुझे हजारों मिल जाएगा और मुझे काम करना नहीं पड़ता। आपको दुकान पर बैठना पड़ता है। उनका तो बिजनेस हो गया, पेशा हो गया और आपको भी मालूम पड़ गया। 20-50 रुपये देने से साला क्या फर्क पड़ेगा चलो दे ही देते हैं। इससे अभाव दूर नहीं होंगे। उसे गुरु नहीं कह सकते। गुरु वह है जो आपकी समस्याओं को समझें, गुरु वह है जो आपकी तकलीफों में साथ हो, गुरु वह है जो आपकी तकलीफों को दूर करने के लिए उस साधना को समझाए जिसके माध्यम से वो तकलीफ दूर हो। आपके प्रयत्नों से तकलीफ दूर नहीं हो सकती। होती तो आप कर लेते फिर मेरे पास आते ही नहीं।

आपके प्रयत्नों से अगर आपकी गरीबी दूर हो जाती या कर्ज दूर हो जाता तो फिर मेरे पास क्यों आएंगे? जरूरत क्या है गुरु की? आप 45 साल मेहनत कर चुके हैं। सब कुछ करके देख लिया है कर्जा नहीं उतर रहा है। 45 साल करके देख लिया कि बेटा कहना नहीं मान रहा है आप कितना ही समझाए। बेटा कहना नहीं मान रहा है आपका लड़का नहीं पढ़ रहा है तो नहीं पढ़ रहा है, पति-पत्नी में लड़ाई-झगड़े हैं तो हैं, बीमारी अगर है तो आप सैकड़ों बार दवाई ले चुके हैं अब आपके और डॉक्टर के प्रयत्नों से बीमारी नहीं मिट रही है तो क्या तरीका है? वो तरीका ये हैं कि सही गुरु हो जो आपकी समस्याओं को समझ सके और वह खुद पूर्ण हो। वह खुद ही अधूरा और भीखमंगा होगा तो आपको क्या देगा जो खुद ही आप से 50-100 रुपये की इच्छा रखेगा वह आपको सम्पन्न बनाएगा भी कैसे? मैं उम्मीद करूँ कि आप 100 रुपये चढ़ाएंगे मैं आपको क्या सम्पन्न बनाऊँगा। मैं खुद भिखारी हूँ कैसे करूँगा? मुझमें खुद में साधना में पूर्णता होनी चाहिए जो आप पूजा पाठ करते हैं वो करें, जो भक्ति करते हैं वो करें, मगर भक्ति के माध्यम से 10 साल भक्ति करने के बाद भी जीवन की समस्याएं नहीं सुलझी तो अगले 20 साल भी नहीं सुलझ पाएंगी।

उसके लिए रास्ता अलग है। कनॉट प्लेस का रास्ता अलग है, करोल बाग का रास्ता अलग है। आप करोल बाग जाना चाहे तो करोल बाग जाए मगर कनॉट प्लेस जाना चाहे तो उसके लिए दूसरा रास्ता चुनना पड़ेगा आपको और चुनेंगे तो वहाँ पहुँच पाएंगे। पहुँच पाएंगे तो समस्याएं दूर हो पाएंगी। दूसरी सीढ़ी उस ब्रह्मत्व को प्राप्त करने की है और तीसरी सीढ़ी अपने आपमें पूर्ण आनंदमग्न होने की क्रिया है ये तीनों सीढ़ियां साधना के माध्यम से है। इस छोटे से प्रवचन में ये संभव नहीं था कि मैं साधना की बारीकियाँ समझाता आपको, फिर भी मेरी कुछ पुस्तकें हैं जिनके माध्यम से आपको प्रारंभिक ज्ञान हो सकता है कि साधना क्या है? अपने जीवन के अन्य क्रिया-कलाप करते हुए भी, भक्ति करते हुए भी, मैं भक्ति के बारे में भी आपको इतना अच्छा बोल सकता था जो ये बोला।

वेद पर भी उपनिषद पुराण पर भी बोल सकता था और ब्रह्म पर भी बोल सकता था जहाँ आपको कुछ समझ में नहीं आता। वह तो बहुत उच्चकोटि के विद्वान होते, उनके बीच में ब्रह्मत्व का उपदेश भी देता था। ब्रह्म क्या है? ब्रह्मत्व क्या है? मगर आपके जीवन में जो आवश्यक है, उसके बारे में मुझे बोलना था। और अगली बार मुझे आने का मौका मिला तो मैं साधना की बारीकियाँ स्पष्ट कर सकूँगा कि वह साधनाएँ क्या हैं? किस प्रकार से की जा सकती हैं? मैं तो चाहता हूँ कि आपके जीवन में कोई अभाव रहे ही नहीं भौतिक भी, आध्यात्मिक भी। आप पूर्णता प्राप्त करें और आपके जीवन में वह सब कुछ प्राप्त करे जिसको धर्म कहा गया है या आपके हाथों से इतना पैसा आए कि आप मंदिर बना सके, देवालय बना सके, स्कूल बना सके और अर्थ की प्राप्ति हो। जहाँ आप सम्पन्न हो सके। काम की प्राप्ति हो, जहाँ आपकी पत्नी, पुत्र, बंधु-बांधव, सुख, सौभाग्य, ऐश्वर्य सब कुछ प्राप्त कर सके और ये सब हो तो आप शांति के साथ मुझको प्राप्त हो सकोगे। मगर इन सबके लिए गुरु की आवश्यकता है, इसलिए गुरु को कहा गया है-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

वह परब्रह्म दिखाई नहीं दे रहा है। मगर यदि गुरु है तो परब्रह्म है। पाखंडी है तो ब्रह्म नहीं हो सकता। गुरु पाखंडी भी हो सकता है, गुरु छलनी भी हो सकते हैं, गुरु धोखेबाज भी हो सकते हैं, विश्वासघाती भी हो सकते हैं, आपको लूटने वाले भी हो सकते हैं मगर वो गुरु नहीं हो सकते, वो पाखंडी हो सकते है। गुरु तो जो निश्चल भाव से आपको रास्ता बता सके, वह गुरु हो सकते है।

ऐसे ही जीवन में आपको गुरु मिले। आपको जीवन में सच्चा कोई गुरु प्राप्त हो सके, जीवन में पूर्णता प्राप्त हो सके, ऐसा ही मैं आपको आशीर्वाद दे रहा हूँ कि आपके जीवन में पूर्णता ऐश्वर्य आ सके। एक बार फिर हृदय से आशीर्वाद देता हूँ।

पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

सिद्ध महालक्ष्मी साधना

महालक्ष्मी सिद्धि दिवस-02.08.2018

सिद्ध महालक्ष्मी की साधना दु:ख दारिद्रय नाश हेतु और रुके हुए कार्यों की सिद्धि हेतु सम्पन्न की जाती है, देवी के इस स्वरूप के संबंध में लिखा है कि श्वेत वस्त्र धारण करने वाली शुभमयी चतुर्भुजा सिद्ध लक्ष्मी, कमल, कलश, बेल और शंख धारण किये हुए, बेल उन्नति प्रतीक है, शंख विजय प्रतीक, कमल धन प्रतीक, कलश पीड़ा निवारण का प्रतीक है।

सिद्ध महालक्ष्मी की साधना साधक को 2.8.2018 से या किसी भी बुधवार को प्रात: प्रारंभ कर 15 दिन तक निरंतर सम्पन्न करनी चाहिए।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीसिद्धमहालक्ष्मीमन्त्रस्य हिरण्यगर्भऋषि: अनुष्टुप् छन्द: श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वती देवता: श्रीं बीजं ह्रीं शक्ति: क्लीं कीलकं मम सर्वक्लेशपीड़ापरिहारार्थं सर्वदु:खदारिद्रयनाशनार्थं सर्वकार्यसिद्धयर्थं च श्रीसिद्धलक्ष्मीमंत्रजपे विनियोग:।

इस प्रकार संकल्प लेकर ताम्र पात्र में अथवा थाली में सिद्ध महालक्ष्मी यंत्र स्थापित कर यंत्र को घी, दूध तथा जल से धो कर स्वच्छ वस्त्र से पौंछ कर स्वस्तिक बना कर मध्य में एक पुष्प रख कर निम्न आसन मंत्र से आसन देकर चार शक्ति चक्र स्थापित करें फिर ग्यारह बत्तियों का दीपक जलाएं, साधक 11 दीपक अलग-अलग भी जला सकते हैं-

आसन मंत्र

।। ॐ सिद्ध महालक्ष्मी पद्मपीठाय नम: ।।

पूर्व की ओर मुँह कर बैठे, सामने केवल यंत्र व चक्र ही स्थापित होने चाहिए तथा लक्ष्मी चित्र रखें, शास्त्रोक्त कथन है कि केवल शक्कर नैवेद्य ही महालक्ष्मी को अर्पित करें और अब इस सिद्ध महालक्ष्मी देवी का मंत्र नित्य 5 माला जप करना चाहिए, यह केवल स्फटिक माला से ही सम्पन्न करें -

सिद्ध महालक्ष्मी मंत्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धमहालक्ष्म्यै नम: ।।

इसी प्रकार यह विधान 15 दिन तक निरंतर मंत्र अनुष्ठान सम्पन्न कर ब्राह्मण भोजन कराएं और संभव हो तो मंत्र जप का दशांश हवन करें।

जैसा कि विनियोग में लिखा है, सिद्ध महालक्ष्मी साधना से सर्व क्लेश पीड़ा का परिहार्य होता है, दुख दारिद्रय का नाश होकर साधक के कार्य सिद्ध होते हैं, इसमें कोई संशय नहीं है, इस मंत्र को तो साधक नित्य प्रति जप करें तो और भी अधिक उत्तम है।

साधना सामग्री - 450/-

जलाओ ज्योत सौभाग्य की
क्योंकि मिटाना है अंधकार दुर्भाग्य का

इस भाग्योदय जयंती पर

सौभाग्य के क्षण जीवन में बहुत कम बार आते हैं, और जब ये क्षण आएं और व्यक्ति इन महत्वपूर्ण क्षणों को पकड़ ले तो अपने जीवन की दिशा को बदल सकता है क्योंकि जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप दुर्भाग्य है और जब तक यह दुर्भाग्य रहता है, व्यक्ति का जीवन बड़ा ही कष्टकारक बना रहता है, यह दुर्भाग्य मूलरूप से इन पांच कारणों से बनता है –

1. किसी के द्वारा तांत्रिक प्रयोग कर दिये जाने के फलस्वरूप।
2. अशुभ ग्रहों या पाप ग्रहों के फलस्वरूप।
3. पितृ दोष की वजह से।
4. पूर्व जन्म के पापों की वजह से।
5. अपने इस जन्म के कर्मों की वजह से।

दुर्भाग्य की वजह से व्यक्ति अपने जीवन में उन्नति नहीं कर पाता, वह परिश्रम तो पूरा करता है, परंतु उसे अपने जीवन में सुख नहीं मिलता, दुर्भाग्य की वजह से उसे निरंतर आर्थिक हानि होती रहती है, न तो व्यापार में वृद्धि होती है और न धन–संचय होता है, इस दुर्भाग्य की वजह से बराबर ऋण बना रहता है, दुर्भाग्य की वजह से व्यक्ति रोग–

ग्रस्त, बीमार और अशक्त तो रहता ही है, साथ ही साथ उसे परिवार में भी किसी प्रकार का सुख नहीं मिलता, चारों तरफ से परेशानियां उसे घेरे रहती हैं, वह एक परेशानी को मिटाता है, तो दूसरी स्वत: उपस्थित हो जाती है, इसके अलावा उसे शत्रु भय और राज्य भय बराबर बना रहता है।

यही दुर्भाग्य स्त्रियों के लिए भी दुखदायक होता है, दुर्भाग्य की वजह से स्त्री को अपने पीहर में या ससुराल में सुख नहीं मिलता, उसे पति का सुख नहीं मिलता, पति दूसरी स्त्री में अनुरक्त हो जाता है, जिसकी वजह से उसे पत्नी के रूप में जो सुख मिलना चाहिए, वह नहीं मिल पाता, स्वास्थ्य बराबर कमजोर बना रहता है, और उसे नित्य नई व्याधियां और तनाव प्राप्त होते रहते हैं।

इन्हीं सब तथ्यों को ध्यान में रख कर हमारे शास्त्रों में सौभाग्य प्रयोग सम्पन्न करने का उपक्रम रखा गया, और वह विधि ढूंढ़ निकाली जिसकी वजह से दुर्भाग्य की काली छाया पुरुष या स्त्री के जीवन पर न पड़े, उसके सभी पाप और दोष इस प्रयोग से समाप्त हो सकें, वह जीवन में पूर्ण अनुकूलता प्राप्त कर सके।

मेरे जीवन में यह अनुभव में आया है कि जो व्यक्ति पूरे वर्ष में एक बार इस अवसर पर सौभाग्य प्राप्ति प्रयोग को भली प्रकार से सम्पन्न कर लेता है, उसका पूरा वर्ष अपने आपमें ही सुखदायक और सौभाग्यशाली बना रहता है, उसके सारे ऋण समाप्त होने लगते हैं। आश्चर्यजनक रूप से आर्थिक उन्नति होने लगती है और वह पूर्ण स्वास्थ्य लाभ कर जीवन में निरंतर उन्नति करता रहता है।

यह मेरे जीवन का अनुभव रहा है कि वास्तव में ही हमारे ऋषि-मुनि श्रेष्ठ विद्वान थे और उन्होंने जिस विधि को ढूंढ़ निकाला है, वह अपने आपमें ही आश्चर्यजनक है, इस प्रयोग को सम्पन्न करते ही आश्चर्यजनक अनुभव होने लगते हैं, और वह सभी दृष्टियों से उन्नति करता हुआ पूर्ण सुखी होता है और उसका भाग्योदय हो जाता है।

सौभाग्य प्राप्ति प्रयोग

यह प्रयोग घर के प्रत्येक सदस्य को सम्पन्न करना चाहिए, यों तो शास्त्रों में लिखा है, कि घर के मुखिया को यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए जिससे कि उसके जीवन में सभी दृष्टियों से अनुकूलता प्राप्त हो सके, ज्यादा अच्छा यह होगा कि पति या पत्नी यह प्रयोग सम्पन्न करे, जिससे उन्हें जीवन में सभी दृष्टियों से सुख और सौभाग्य प्राप्त हो सके, अपने पुत्र व पुत्रियों का सुख मिल सके, उसकी पुत्रियों के शीघ्र विवाह सम्पन्न हो सकें, और वह अपने जीवन में जो चाहे वह प्राप्त कर सके।

आसान प्रयोग

यह प्रयोग अत्यंत आसान है, और इसमें कोई जटिल विधि विधान नहीं है, इसलिए कम पढ़ा-लिखा साधक भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है, इस प्रयोग को घर के मुखिया के अलावा, जो भी अपने जीवन में पूर्ण उन्नति चाहता है, जो भी निरंतर आगे बढ़ता हुआ पूर्ण सुख और सौभाग्य की इच्छा रखता है, उसे यह प्रयोग इस दिन अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, विद्यार्थियों के लिए तो यह प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण सफलतादायक और सौभाग्यवर्धक हैं

अतिश्रवा उपनिषद में बताया गया है कि इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न करने से सभी प्रकार की पूर्ण शांति प्राप्त होती है और मानसिक तनाव समाप्त हो जाता है, ऐसे व्यक्ति के सभी रोग दूर हो जाते हैं, धन, कीर्ति और आयु की वृद्धि होती है, तथा उसके पाप भी पूर्ण रूप से नष्ट हो जाते हैं, उसकी सारी आशाओं की पूर्ति होती है, चाहे उस पर तांत्रिक प्रयोग किया हुआ हो, तो वह प्रयोग भी निश्चय ही समाप्त हो जाता है, यही नहीं अपितु उसके सारे मनोरथ और सारे उद्देश्य सिद्ध हो जाते हैं तथा तेज एवं बल की वृद्धि होती है।

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आपमें महत्वपूर्ण है, यह भले ही सामान्य दिखाई दे, परंतु इसका फल अपने आपमें अचूक होता है, जिस प्रकार से एक छोटा सा अंकुश विशाल डीलडौल वाले हाथी को नियंत्रण में कर लेता है, उसी प्रकार से यह छोटा सा प्रयोग सभी प्रकार के दुर्भाग्यों को समाप्त कर सौभाग्य में परिवर्तित करने की क्षमता रखता है।

साधना प्रयोग

साधक इस दिन प्रात:काल उठ कर यह निश्चय करे कि मैं आज सौभाग्य प्राप्ति प्रयोग सम्पन्न करूँगा, इसके लिए वह स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर ले, यदि स्त्री इस साधना प्रयोग को सम्पन्न करना चाहती है, तो वह प्रात:काल उठकर अपना सिर धो ले और बाल खुले रखे।

इसके बाद साधक आसन पर पूर्व की ओर मुँह कर बैठ जाए, उसके लिए यह आवश्यक नहीं है, कि वह पीली धोती ही धारण करे, वह सफेद धोती भी पहिन सकता है, इसी प्रकार स्त्री साधिका भी किसी प्रकार के वस्त्र धारण कर यह प्रयोग सम्पन्न कर सकती है।

इसके बाद साधक सामने लकड़ी का बाजोट या तख्ता रख कर उस पर रेशमी वस्त्र बिछा दें, और उसके मध्य में चावलों की ढेरी बना दें, फिर चावल की ढेरी पर तांबे का, मिट्टी का, या पीतल का छोटा सा कलश स्थापन करें, और इस कलश पर केसर से त्रिकोण बनावें, फिर इस कलश में जल डालें यदि घर में गंगाजल हो तो थोड़ा सा गंगाजल भी डालें, इसके बाद कलश में अक्षत, सुपारी और थोड़े से पुष्प डाल दें तथा कलश के मुँह पर पांच पीपल के या आम के पत्ते रख दें, यदि इस प्रकार के पत्ते न मिलें तो किसी प्रकार के पांच पत्ते रख कर उसके ऊपर नारियल रख दें।

इसके बाद कलश पर अबीर गुलाल चढ़ा कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

मंत्र

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्म-कलश ! देवताभीष्ट - सिद्धिद्धः। सर्व तीर्थाम्बु-पूर्णेन पूरयास्य मनोरथम्। हं क्लीं लं ह्रीं ।

इस प्रकार से मंत्रोच्चारण करने के बाद सामने गुरु का चित्र स्थापित करें और गुरु का पूजन करें।

इसके बाद साधक सामने घी का दीपक लगावें और अगरबत्ती जलावें तथासामने किसी पात्र में 'सौभाग्य प्राप्ति यंत्र' (ताबीज) को स्थापित कर दें, यह यंत्र अपने आपमें अत्यंत श्रेष्ठ व मंत्र सिद्ध होता है, और इस पर पूर्ण ज्ञानाभिषेक और पूर्णाभिषेक सम्पन्न कर प्राण प्रतिष्ठा युक्त बनाया जाता है, जिसकी वजह से यह यंत्र, मंत्र सिद्ध और अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता हैं

इसके बाद साधक स्फटिक माला से इस कलश के सामने निम्न तीनों मंत्रों की ग्यारह-ग्यारह माला मंत्र जप करे, इस प्रकार मंत्र जप में ज्यादा से ज्यादा 2 घण्टे का समय लगता है।

प्रथम मंत्र

॥ ॐ ऐं ऐं श्रीं ह्रीं ह्रीं ॥

मंत्र सम्पन्न करने के बाद साधक निम्न प्रकार का यंत्र कलश पर केसर से अंकित करें, यह अंकन किसी तिनके से या चांदी की शलाका से किया जा सकता है, इस यंत्र को 'सौभाग्य यंत्र' कहते हैं, फिर इस यंत्र का अंकन कलश पर करके उसकी पूजा करें, और निम्न मंत्र जप स्फटिक माला से ही करें –
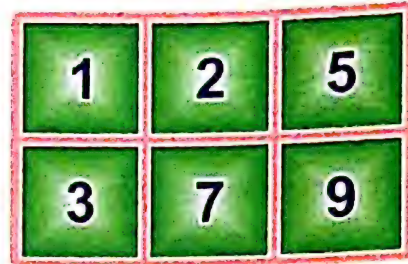
द्वितीय मंत्र

॥ ऐं ह्रीं ऐं ॥

इसके बाद साधक जो सामने पात्र में सौभाग्य यंत्र रखा है, उस यंत्र पर 'ह्रीं' अक्षर केसर से अंकित करें, और उसकी संक्षिप्त पूजा करें, संक्षिप्त से तात्पर्य यंत्र पर चावल चढ़ावें, पुष्प समर्पित करें और भोग लगावे, इससे संक्षिप्त पूजा सम्पन्न हो जाती है।

तृतीय मंत्र

॥ ॐ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ॐ ॥

ऐसा करने पर यह साधना प्रयोग सम्पन्न हो जाता है, तब साधक उस यंत्र को अपने गले में धारण कर ले, गले में पहनने के लिए साधक इस यंत्र में लाल या पीला धागा पिरो दें अथवा सोने या चांदी की चैन पिरो कर भी गले में धारण कर सकते हैं।

शास्त्रों में वर्णित है कि साधक पूरे वर्ष भर इस यंत्र को अपने गले में पहनें रहें, पर यदि ऐसा संभव न हो तो जिस दिन यह साधना सम्पन्न करें उससे अगले एक महिने तक तो अवश्य ही यह यंत्र गले में पहनें रहें, इसके बाद इस यंत्र को उतार कर अपने पूजा स्थान में रख सकते हैं।

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आपमें महत्वपूर्ण है, उससे भी ज्यादा यह यंत्र महत्वपूर्ण है, जो 'महाचिनाचार सार तंत्र' से अभिषेक युक्त और 'शक्ति संगम तंत्र' के अनुसार प्रभाव युक्त बनाया हुआ होता है, जिसकी वजह से इसका प्रभाव तुरंत ही प्राप्त होने लगता है।

वास्तव में ही वे साधक और साधिकाएं धन्य हैं, जो इस प्रकार के अवसर का लाभ उठा कर यह साधना सम्पन्न करते हैं, और अपने जीवन में सभी समस्याओं को समाप्त कर पूर्णता प्राप्त करते हैं।

साधना सामग्री – 600/-

श्रावण मास में

सर्व सिद्धि प्रदायक

भगवान सिद्धेश्वर प्रयोग

श्रावण मास भगवान शिव का सर्वाधिक अनुकूल मास है, शिव भक्त पूरे वर्ष भर श्रावण के महीने की प्रतीक्षा करते रहते हैं, फिर इस बार तो श्रावण मास का प्रारंभ मकर राशि से हो रहा है।

सर्व सिद्धि प्रदायक प्रयोग

सर्व सिद्धि प्रदायक प्रयोग का तात्पर्य उन समस्त कामनाओं की पूर्ति है, जो व्यक्ति की इच्छा होती है। साधक को चाहिए कि वह 'हर हर महादेव' का घोष करते हुए, पूर्ण श्रद्धा के साथ इस प्रयोग को सम्पन्न करें। इस प्रयोग से निश्चित रूप से पुत्र सुख और सौभाग्य वृद्धि तो होती ही है, रोगों के निवारण में भी यह प्रयोग अपने आपमें अचूक है। भगवान शिव को वैद्यनाथ कहते हैं और इस प्रयोग से सम्पन्न जल का पान यदि साधक एक महीने तक करे, तो निश्चय ही वह समस्त प्रकार के रोगों से मुक्त हो जाता है, भगवान शिव ने कामदेव पर विजय प्राप्त की थी और इसीलिए कमजोर और निर्बल मनुष्यों के लिए यह प्रयोग 'संजीवनी' की तरह है। जो इस प्रयोग को आजमा लेता है उसकी नपुंसकता, कमजोरी और शारीरिक क्षीणता दूर होती है और एक महीने के अंदर-अंदर वह पूर्ण पौरुषवान बन जाता है।

स्त्रियों के लिए तो यह 'हर गौरी' प्रयोग है, जिसके माध्यम से वे इस प्रयोग को सम्पन्न कर सौभाग्य की कामना करती हैं, इस प्रयोग से पति की दीर्घायु प्राप्त होती है, और उसके जीवन के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। कुंवारी कन्याएं इन प्रयोग को करने से मनोवांछित वर प्राप्त करने में सफल हो पाती हैं। भगवान शिव को 'रुद्र' कहते है जो कि शत्रुओं के पूर्ण संहारक है, इस प्रयोग को सम्पन्न करने से साधक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है, अपने विरोधियों पर हावी होता है और सभी दृष्टियों से सफलता प्राप्त करता है। वास्तव में ही यह प्रयोग पूरे वर्ष का सौभाग्य प्रयोग है, जिसे प्रत्येक पुरुष एवं स्त्री को सम्पन्न करना चाहिए।

प्रयोग विधि

श्रावण का प्रारंभ 28 जुलाई को हो रहा है, 28 जुलाई को परिवार का मुखिया, साधक या घर का कोई भी सदस्य स्नान कर शुद्ध, स्वच्छ वस्त्र धारण कर किसी पात्र में केसर से ॐ नमः शिवाय लिख दें और उस पर भगवान 'सिद्धेश्वर शिवलिंग' की स्थापना कर दें। जिसे घर में स्थापित करना ही जीवन की पूर्णता है। विशिष्ट मंत्रों से सिद्ध ऐसे सिद्धेश्वर ज्योतिलिंग को पात्र में स्थापित कर उनकी संक्षिप्त पूजा

करें, केसर, कुंकुम, गुलाल आदि चढ़ा कर यदि संभव हो तो बिल्व पत्र भगवान सिद्धेश्वर पर चढ़ाएं, इसके बाद हाथ में जल लेकर उस सिद्धेश्वर शिवलिंग पर ॐ नमः शिवाय का उच्चारण करते हुए जल चढ़ावें। धीरे-धीरे उस पात्र में इतना जल चढ़ा देना चाहिए कि भगवान सिद्धेश्वर का शिवलिंग उस जल में डूब जाए, उस पूरे दिन यह ज्योतिलिंग उस जल में डूबा रहे।

इसके बाद सामने दीपक, अगरबत्ती लगावें, और निम्न विशिष्ट गोपनीय मंत्र की पांच माला मंत्र जप सम्पन्न करें -

सिद्धेश्वर मंत्र

।। ॐ ह्रीं ऐं हर गौर्यै रुद्राय अनंग रूपाय सिद्धि प्रदाय सिद्धेश्वराय नमः।।

इस मंत्र को पुरुष या स्त्री कोई भी जप सकता है, रुद्राक्ष की माला से ही इस मंत्र का जप होना चाहिए, इसके बाद भगवान शिव की आरती करें और प्रसाद चढ़ावें, इस प्रसाद को पड़ोस के बालकों में बांट दें।

दूसरे दिन उस जल का पान थोड़ा-थोड़ा घर के सभी सदस्य करें जिससे उनके शरीर स्थित रोगों की निवृत्ति हो सके और बाकी जल को घर में छिड़क दें, इस प्रकार नित्य पूरे तीस दिन करें, इसका समापन 26 अगस्त को करें।

।। छोटे-छोटे बालको को भोजन करा दें और सिद्धेश्वर शिवलिंग को पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

यह इस वर्ष का श्रेष्ठतम और अद्वितीय प्रयोग है, जो सौभाग्य से प्राप्त होता है, प्रत्येक साधक को अपने घर में सिद्धेश्वर की स्थापना करनी ही चाहिए और इस प्रयोग को स्वयं या घर का कोई भी सदस्य सम्पन्न करें, आप स्वयं इस प्रयोग का चमत्कार और प्रभाव हाथों हाथ अनुभव करेंगे।

साधना सामग्री - 600/-

अपनी-अपनी दृष्टि

एक चोर था। चोरी करने गया। रात में काफी घूमा किन्तु कहीं चोरी का अवसर नहीं मिला। लोग जाग रहे थे। मौका मिला नहीं और आप जानते हैं कि चोरी वहाँ होती है जहाँ नींद होती है। जहाँ जागरण होता है, वहाँ चोरी नहीं होती। काफी लोग जाग रहे थे। चोर चोरी नहीं कर सका। घूमता रहा और घूमते घूमते थक गया। उसे चोरी करने का मौका नहीं मिला। काफी थकान के बाद गाँव के बाहर गया और एक पेड़ के नीचे जाकर लेट गया। रात भर का जागा हुआ था। काफी गहरी नींद में सो गया। सूरज निकल गया, फिर भी उठा नहीं।

जब सूरज निकला तो सुबह के वक्त लोग घूमने आने लगे। इतने में एक शराबी भी उधर से निकला। शराबी ने देखा कि एक आदमी पेड़ के नीचे सो रहा है। उसने घूमकर देखा और देखने के बाद बोला, "देखों, कितना बड़ा शराबी है। कितनी शराब पी है। नशे में कितना धुत है कि सूरज निकल आया किन्तु नशा अभी तक नहीं उतरा। पागल कही का, अभी भी सो रहा है।" अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर वो चला गया।

थोड़ी देर में एक दूसरा आदमी आया। वह था जुआरी। उसने भी उस आदमी को सोते देखा, देखकर कहा, "लगता है जुए में कुछ ज्यादा ही दाँव हार गया। रात भर जुआ खेलता रहा और हार गया। थका-माँदा सो रहा है। पहले तो खेला ही क्यों? और खेला तो दाँव को ठीक से क्यों नहीं खेला। बेवकूफ कहीं का। अभी सो रहा है।" उसने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की फिर वह भी चला गया।

थोड़ी देर बाद तीसरा आदमी आया। वह चोर था। उसने सोचा, "सो रहा है, लगता है कि जैसे आज रात्रि में असफल रहा हूँ, यह भी मेरा कोई भाई है। असफलता के कारण निराश होकर लेटा हुआ है।" प्रतिक्रिया व्यक्त कर वह भी चला गया।

थोड़ी देर बाद एक व्यक्ति आया। वह था योगी। उसने उसे देखा और देखकर बोला, "ओह! कितनी मस्ती में सो रहा है। कितना निश्चिंत है। कोई चिंता नहीं, लगता है कि कोई पहुँचा हुआ आदमी है, ऐसे ही लेट गया है। न कोई बिछौने की अपेक्षा और न किसी बात की चिंता। ऐसे ही भू-तल पर सो रहा है वाह! दीन-दुनिया से बेफिक्र अपनी ही मस्ती में, नमस्कार करना चाहिए ऐसे व्यक्ति को।" वह उसे नमस्कार करके चला गया।

दृश्य एक ही था, पर दृष्टिकोण अनेक थे। एक ही दृश्य पर अनेक व्यक्ति उसी दृश्य को देखने के बाद अलग-अलग प्रतिक्रियाएं व्यक्त कर रहे थे। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने दृष्टिकोण से, अपने स्तर से उस दृश्य को परिभाषित करता है जहाँ अन्य उसी दृश्य में न्यूनताएं खोज रहे थे वहीं एक योगी उसी व्यक्ति को प्रणाम कर रहा था उसे उसी दृश्य से एक सीख मिल रही थी।

यही जीवन का सत्य है। देखने के दृष्टिकोण को यदि बदल लें तो जीवन में आनंद का संचार स्वतः हो जाएगा।

हिमालयकृतं शिवस्तोत्रम्

जो मनुष्य श्रावण मास में नित्य इस श्लोक का पाठ करता है वह सभी बाधाओं से मुक्त हो जाता है एवं उसकी मनोकामना पूर्ण होती है।

त्वं ब्रह्मा सृष्टिकर्ता च त्वं विष्णु: परिपालक:।
त्वं शिव: शिवदोऽनन्त: सर्वसंहारकारक:।।1।।

त्वमीश्वरो गुणातीतो ज्योतीरूप: सनातन:।
प्रकृति: प्रकृतीशश्च प्राकृत: प्रकृते: पर:।।2।।

नानारूपविधाता त्वं भक्तानां ध्यानहेतवे।
येषु रूपेषु यत्प्रीतिस्तत्तद्रूपं बिभर्षि च।।3।।

सूर्यस्त्वं सृष्टिजनक आधार: सर्वतेजसाम्।
सोमस्त्वं शस्य पाता च सततं शीतरश्मिना।।4।।

वायुस्त्वं वरुणस्त्वं च त्वमग्नि: सर्वदाहक:।
इन्द्रस्त्वं देवराजश्च कालो मृत्युर्यमस्तथा।।5।।

मृत्युञ्जयो मृत्युमृत्यु: कालकालो यमान्तक:।
वेदस्त्वं वेदकर्ता च वेदवेदाङ्गपारग:।।6।।

विदुषां जनकस्त्वं च विद्वांश्च विदुषां गुरु:।
मन्त्रस्त्वं हि जपस्त्वं हि तपस्त्वं तत्फलप्रद:।।7।।

वाक् त्वं वागधिदेवी त्वं तत्कर्ता तद्गुरु: स्वयम्।
अहो सरस्वतीबीजं कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वर:।।8।।

इत्येवमुक्त्वा शैलेन्द्रस्तस्थौ धृत्वा पदाम्बुजम्।
तत्रोवास तमाबोध्य चावरुह्य वृषाच्छिवः॥9॥

स्तोत्रमेतन्महापुण्यं त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो भयेभ्यश्च भवार्णवे॥10॥

अपुत्रो लभते पुत्रं मासमेकं पठेद् यदि।
भार्याहीनो लभेद् भार्यां सुशीलां सुमनोहराम्॥11॥

चिरकालगतं वस्तु लभते सहसा ध्रुवम्।
राज्यभ्रष्टो लभेद् राज्यं शंकरस्य प्रसादतः॥12॥

कारागारे श्मशाने च शत्रुग्रस्तेऽतिसंकटे।
गभीरेऽतिजलाकीर्णे भग्नपोते विषादने॥13॥

रणमध्ये महाभीते हिंस्रजन्तुसमन्विते।
सर्वतो मुच्यते स्तुत्वा शंकरस्य प्रसादतः॥14॥

॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्तपुराणे हिमालयकृतं शिवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

भावार्थ

हिमालय ने कहा - (हे परम शिव!) आप ही सृष्टिकर्ता ब्रह्मा हैं। आप ही जगत् के पालक विष्णु हैं। आप ही सबका संहार करने वाले अनन्त हैं और आप ही कल्याणकारी शिव हैं॥1॥

आप गुणातीत ईश्वर, सनातन ज्योति स्वरूप हैं। प्रकृति और प्रकृति के ईश्वर हैं। प्राकृत पदार्थ होते हुए भी प्रकृति से परे हैं॥2॥

भक्तों के ध्यान करने के लिये आप अनेक रूप धारण करते हैं। जिन रूपों में जिसकी प्रीति है, उसके लिये आप वही रूप धारण कर लेते हैं॥3॥

आप ही सृष्टि के जन्मदाता सूर्य हैं। समस्त तेजों के आधार हैं। आप ही शीतल किरणों से सदा शस्यों का पालन करने वाले सोम हैं॥4॥

आप ही वायु, वरुण और सर्वदाहक अग्नि हैं। आप ही देवराज इन्द्र, काल, मृत्यु तथा यम हैं॥5॥

मृत्युञ्जय होने के कारण मृत्यु की भी मृत्यु, काल के भी काल तथा यम के यम हैं। वेद, वेदकर्ता तथा वेद-वेदाङ्गों के पारङ्गत विद्वान भी आप ही हैं॥6॥

आप ही विद्वानों के जनक, विद्वान तथा विद्वानों के गुरु हैं। आप ही मंत्र, जप, तप और उनके फलदाता हैं॥7॥

आप ही वाक् और आप ही वाणी की अधिष्ठात्री देवी हैं। आप ही उसके स्रष्टा और गुरु हैं। अहो! सरस्वतीबीजस्वरूप आपकी स्तुति यहाँ कौन कर सकता है॥8॥

ऐसा कहकर गिरिराज हिमालय उन (भगवान शिवजी) के चरणकमलों को पकड़ कर खड़े रहे। भगवान शिव ने वृषभ से उतरकर शैलराज को प्रबोध देकर वहाँ निवास किया॥9॥

जो मनुष्य तीनों संध्याओं के समय इस परम पुण्यमय स्तोत्र का पाठ करता है, वह भवसागर में रहकर भी समस्त पापों तथा भयों से मुक्त हो जाता है॥10॥

पुत्रहीन मनुष्य यदि एक मास तक इसका पाठ करे तो पुत्र पाता है। भार्याहीन सुशीला तथा परम मनोहारिणी भार्या प्राप्त होती है॥11॥

वह चिरकाल से खोयी हुई वस्तु को सहसा तथा अवश्य पा लेता है। राज्यभ्रष्ट पुरुष भगवान् शंकर के प्रसाद से पुनः राज्य को प्राप्त कर लेता है॥12॥

कारागार श्मशान और शत्रु-संकट में पड़ने पर तथा अत्यंत जलसे भरे गंभीर जलाशय में नाव टूट जाने पर, विष खा लेने पर, महाभयंकर संग्राम के बीच फंस जाने पर हिंसक जन्तुओं से घिर जाने पर इस स्तुति का पाठ करके मनुष्य भगवान् शंकर की कृपा से समस्त भयों से मुक्त हो जाता है॥13-14॥

॥ इस प्रकार श्रीब्रह्मवैवर्तपुराण में हिमालयकृत शिवस्तोत्र सम्पूर्ण हुआ॥

नारायण मेरे में नारायण का

जीवन में सफलता की कुंजी क्या है?

'प्रेम'

कितना छोटा सा शब्द है, जो अपने अन्दर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को समेटे है, जितने वेद, उपनिषद या धार्मिक ग्रंथ हैं, यदि उसमें गहराई में जाएं तो हमें प्रेम की ही शिक्षा मिलती है। यदि हृदय में प्रेम नहीं है, तो आप अपने आध्यात्मिक जीवन से लेकर भौतिक जीवन तक कहीं भी सफल नहीं हो सकते।

प्रेम ही वह साधना है, जो आपको ब्रह्म से साक्षात्कार करा सकती है, समाज में मान-मर्यादा से जीने का स्थान दिला सकता है। प्रेम करने के लिए या प्रेम को पाने के लिए हमें सबसे पहले क्षमा करना सीखना अनिवार्य है, क्योंकि क्षमा करना ही सबसे कठिन कार्य है। जब हम समाज के मध्य रह रहे हैं, तो हमारे सामने प्रतिक्षण छल, कपट, झूठ आते ही रहते हैं, और यहीं से आरंभ होती है हमारे जीवन की परीक्षा और एक अंतर्द्वन्द्व। यदि हम इस छल-कपट भरे समाज में रहते हुए भी क्षमाशील एवं सहनशील बने रह सके, तो हमारे जीवन का रुख ही बदल जाएगा और प्रेम के रास्ते पर आगे बढ़ सकेंगे।

अब प्रश्न यह उठता है, कि प्रेम का कौन सा स्वरूप ऐसा है, जो जीवन के अंतिम क्षण तक कायम रह सकता है, जिसके अंदर हम खो जाएं।

पति-पत्नी का या माता-पिता का अपनी संतान से प्रेम तो फिर भी स्वार्थ पर आधारित होता है। परंतु एक प्रेम ऐसा भी है, जिसके लिए यह जीवन भी छोटा पड़ जाता है, मन ऊबता ही नहीं और जब हम उसके प्रेम-पाश में बंधकर उसके लिए बेचैन होते हैं, उसकी एक झलक देखे बिना ऐसा लगता है, कि आज का दिन हमारे लिए कितना दुःखदायी है, कितनी बेचैनी है, कि बरबस ही होठों से यह शेर निकल पड़ता है -

दिल धड़कता है वहां, दवा क्यों होती नहीं।
उन्हें शाम को देखे बिना, शफा क्यों होती नहीं।।

इश्क तो एक दरिया है, जिसमें डूबकर ही जीवन का आनन्द पाया जा सकता है और यह प्रेम, यह मोहब्बत तो सिर्फ अपने इष्ट से ही की जा सकती है, अपने गुरुदेव से ही की जा सकती है, क्योंकि इस जहां में प्रेम करने के लिए, तो उनके अलावा कोई है ही नहीं।

प्रेम तो एक तपस्या है, साधना है, पूजा है। मीरा ने मारवाड़ में प्रेम की वीणा का ऐसा तार छेड़ा, कि पूरा मारवाड़ ही उस प्रेम में डूब

गया। हालांकि उन्हें इस प्रेम के रास्ते में बहुत-बहुत ठोकरें लगी, किन्तु ये तो प्रेम में इतनी मतवाली थीं, कि उन्हें समाज की ठोकरों से पीड़ा नहीं होती थी। अपने प्रियतम के प्रेम में इतनी दीवानी थीं, कि लोगों की गाली में उन्हें अपने कान्हा की बांसुरी सुनाई देती थी। इतिहास गवाह है, कि चाहे चैतन्य महाप्रभु हों, नरसी मेहता हों या संत तुकाराम, इन सभी ने प्रेम के बल पर ही प्रभु को पाया है।

प्रेम तो हम लोग भी करते हैं, किन्तु क्या प्रेम ऐसे ही होता है?

नहीं ! प्रेम ऐसे नहीं हो सकता, जिस प्रकार एक म्यान में एक ही तलवार रह सकती है, एक जंगल में एक ही शेर होता है और एक स्त्री का एक ही पति होता है, उसी प्रकार एक दिल में एक ही चीज हो सकती है, चाहे वह झूठ हो, छल हो, कपट हो, दिखावा हो या प्रेम हो और यदि ये सब हैं, तो इनके साथ प्रेम कैसे रह सकता है? क्या हमारे दिल में एक साथ इतनी चीजें रहते हुए, किसी से प्यार हो सकता है, कभी नहीं, और जब हम प्यार नहीं कर सकते, तो भला प्रभु को कैसे पा सकते हैं। प्यार तो अपने आपको अपने प्रियतम के प्रति कुर्बान कर देना है। जिस प्रकार एक पतंगा अपने को समाप्त कर देता है, उसी प्रकार शिष्य गुरु को प्यार करके अपने अस्तित्व को मिटा कर अपने प्रियतम सद्गुरुदेव के प्रति समर्पित हो जाए, उनके प्यार में अपने को डुबा दे, फिर भला आपको उस शक्ति पुंज में डूबने से कौन रोक सकता है। करते रहिए साधना आप वर्षों तक, क्या हो जाएगा उससे? कौन सी शांति आप प्राप्त कर लेंगे? शक्ति तो सद्गुरुदेव स्वयं है उन्हें प्रसन्न किए बिना कुछ भी प्राप्त करना संभव नहीं है और प्राप्त होगा भी तो क्षणिक लाभ के रूप में।

'शक्ति' को पवार या ताकत भी कह सकते हैं। आज के युग में बिना शक्ति के जीवन नहीं चल सकता है। विज्ञान ने विद्युत के रूप में शक्ति का अविष्कार किया। विद्युत का उत्पादन भाखड़ा नांगल से होता है, उस विद्युत शक्ति को रोकने के लिए या एकत्र करने के लिए पावर हाउस का निर्माण किया और फिर करोड़ों की संख्या में छोटे-बड़े ट्रांसफॉर्मरों का निर्माण किया, जिसे एक नहीं बल्कि करोड़ों उपायों से लोगों की जरूरत के अनुसार वितरण किया, यानि मानव द्वारा निर्मित शक्ति को संभालने के लिए इतनी व्यवस्था करनी पड़ती है, जो कि बहुत ही कण मात्र है।

अब जरा सोचिए, क्या उस ब्रह्माण्ड की शक्ति को प्राप्त करना हमारे बस की बात है? क्या सामान्य मानव उसे रोकने की शक्ति रखता है।

'नहीं', ब्रह्माण्ड की सम्पूर्ण शक्ति तो गुरु ही अपने अंदर समाहित कर सकता है। सृष्टि को चलाना तो सद्गुरु के हाथ में है, इसीलिए तो गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश कहा गया है, बल्कि गुरु तो इनसे भी बहुत-बहुत आगे होते हैं।

ब्रह्मा ने यदि नर के रूप में जन्म दिया, तो गुरु ने नारायण बना दिया, विष्णु यदि पालनकर्त्ता हैं, तो गुरु ने अपने ज्ञान से उस नर-नारी के अंदर तरह-तरह के ज्ञान प्रदान कर आविष्कारक बना दिया, शिव ने संहार का जिम्मा लिया, तो गुरु ने क्षमादान का। किन्तु जीवन का विशेष उपयोगी पाठ प्रेम का है, यह तो गुरु ने ही सिखाया, इसीलिए तो गुरु का स्थान सर्वोपरि है। और जब हमें यह मालूम होता है, कि गुरु में ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड है, तो फिर हम थोड़े की लालसा क्यों करे, हमें तो सब कुछ भूलकर अपने आपको सद्गुरुदेव के श्रीचरणों में विसर्जित कर देना चाहिए, गुरु की कृपा दृष्टि से ही हमारा कल्याण हो सकता है।

अत: प्रेम करना है, तो अपने नारायण को करो। मीरा अपने नारायण की दासी थी। फिर प्रेम के फुहार से सराबोर होने का समय आ गया है। आज 'निखिलं वन्दे जगद्गुरुं' के स्वर झंकृत हो रहे हैं।

यदि आज हम फिर चूक गए, अपने परिवार के बंधन में फंस कर, धन के लोभ में पड़कर, विकारों और अहंकारों में फंसकर, तो भला सद्गुरु को कैसे पाएंगे? कैसे हम यह कह पाएंगे, कि हम तो केवल आपके ही हैं।

गुरु पूर्णिमा – 2018

ॐ नमः निखिलेश्वर्यायै कल्याण्यै ते नमो नमः।
नमस्ते रुद्ररुपिण्यै ब्रह्म मूर्त्यै नमो नमः।।1।।

नमस्ते क्लेश हारिण्यै मंगलायै नमो नमः।
हरति सर्व व्याधिनां श्रेष्ठ ऋष्यै नमो नमः।।2।।

शिष्यत्व विष नाशिन्यै पूर्णतायै नमोऽस्तु ते।
त्रिविध ताप संहर्त्र्यै ज्ञानदात्र्यै नमो नमः।।3।।

शान्ति सौभाग्य कारिण्यै शुद्ध मूर्त्यै नमोऽस्तु ते।
क्षमावत्यै सुधावत्यै तेजोवत्यै नमो नमः।।4।।

नमस्ते मंत्र रूपिण्यै तंत्र रूपे नमोऽस्तु ते।
ज्योतिषं ज्ञान वैराग्यं पूर्ण दिव्यै नमो मनः।।5।।

य इदं पठते स्तोत्रं श्रृणुयात् श्रद्धयान्वितं।
सर्व पाप विमुच्यन्ते सिद्धयोगिश्व जायते।।6।।

रोगस्थो रोग तं मुच्येत् विपदा त्राणयादपि।
सर्व सिद्धिं भवेत्तस्य दिव्य देहश्च संभवे।।7।।

निखिलेश्वर्य पंचकं नित्यं यो पठते नरः।
सर्वान् कामान् अवाप्नोति सिद्धाश्रममवाप्नुयात्।।8।।

प्रयोग विधि : सहज प्रवाह से उद्भूत होने के कारण इस स्तोत्र में ऐसी कोई बाध्यता नहीं है कि इसका पाठ किसी विशेष विधि-विधान से किया जाए। बस स्तोत्र पाठ से पूर्व साधना स्थल को धूप, अगरबत्ती आदि से सुगंध युक्त कर लें और सद्गुरुदेव के चित्र के समक्ष उनके ध्यान में डूबते हुये पाठ करें।

'ॐ नमः शिवाय' अपने-आप में पूर्ण मंत्र है

'ॐ नमः निखिलेश्वर्यायै' भी तो योगियों व संन्यासियों का सर्वाधिक प्रिय मंत्र और अपने प्रिय गुरुदेव की स्तुति दोनों का ही प्रभाव समेटे है।

मूलतः इस पंचक में आठ श्लोक हैं, जिनमें पूज्य गुरुदेव की स्तुति परक श्लोक पांच हैं (इसी कारणवश इसे 'निखिलेश्वरानन्द पंचक' की संज्ञा दी गयी है) तथा शेष तीन श्लोकों में इस पंचक के पठन-श्रवण के महात्म्य का वर्णन किया गया है।

चारों तरफ भौतिकतायुक्त साम्राज्य में चारों तरफ व्यक्ति भोग-विलास को ही अपनी पूर्णता समझ रहे थे जहां हमारी संस्कृति का, हमारे मंत्र विज्ञान का मखौल उड़ाया जा रहा था, जहां पर वेदों की निन्दा हो रही थी। आयुर्वेद और अन्य हमारी उच्चकोटि की विद्याओं को समाप्त करने का षडयंत्र किया जा रहा था। ऐसे समय में इस पूरे भारतवर्ष को एक व्यक्तित्व मिला, एक अद्वितीय युग पुरुष मिला, एक प्रकाशपुंज प्राप्त हुआ जिसे हिमालय में 'परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द' कहा गया और उन्हें हम डा. नारायणदत्त श्रीमाली के नाम से जानते हैं।

वस्तुतः यह सद्गुरुदेव के सम्पूर्ण व्यक्तित्व की व्याख्या है और जब शिष्य एक प्रकार से गुरु के पूरे व्यक्तित्व को पी जाता है। अपने रोम-रोम, चक्षु, जिह्वा, हृदय मे पूरी तरह से उन्हें बसा लेता है। उनका ही प्रतिरूप बन जाता है, जिससे गुरु का गौरववर्धन हो सके तो गुरु की यही गुरु दक्षिणा होती है जब हम उनके मानस के अनुरूप बनने का प्रयास करते हैं और बन जाते हैं तो सबसे अधिक प्रसन्नता सद्गुरुदेव को ही होती है।

हमेशा यह कहना तो एक आत्म प्रवञ्चना है कि गुरु हम पर माया का आवरण डाल रहे हैं। यह तो एक स्थिति मात्र है क्योंकि सुनार जब सोने को तपाता है, तो वह जानता है कि यह सोना ही है किन्तु वह उसे उस स्थिति तक ले जाना चाहता है जब तक वह शुद्ध खरा चौबीस कैरेट का न हो जाए।

यह श्लोक हमें शुद्धता की पराकाष्ठा तक पहुंचा कर विशुद्ध बनाते हैं और फिर गुरु और शिष्य दो नहीं रहते, एक ही हो जाते हैं।

इन श्लोकों का नित्य पाठ शिष्य के जीवन का कायाकल्प करने में सहायक है। उसके अन्दर के अंधकार को मिटाकर एक दिव्य चेतना का जागरण होता है। जिसे नित्य पाठ करके स्वयं ही अनुभव किया जा सकता है। शिष्य को नित्य इसका पाठ करना ही चाहिए।

पुष्पदन्त ने महिम्न स्तोत्र में कहा है-'कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, कि पूरी पृथ्वी पर भी यदि उनकी यशोगाथा लिखी जाय, तो पूरी पृथ्वी छोटी हो जाती है, मगर फिर भी उनकी गाथा लिखी नहीं जा सकती।'

मैं सोचता हूँ कि कुछ ऐसी ही पंक्तियाँ परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी के बारे में कही जा सकती हैं।

पूज्यपाद गुरुदेव के सिद्धाश्रम स्थित शिष्य परमहंस स्वामी किंकर जी ने उनकी अभ्यर्थना में एक अत्यन्त मधुर पद 'निखिलेश्वरानन्द पंचक' की रचना की है, जिसका नित्य स्तवन करना सिद्धाश्रम के योगियों के लिए भी आह्लादकारी है।

उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का वर्णन इस पंचक में पूर्ण रूप से परिलक्षित होते हैं। हम उन स्वरूपों को बार-बार नमन करते हैं-

1. ॐ नमः निखिलेश्वर्यायै

यह पद केवल स्तोत्र का आरम्भ मात्र अथवा वंदना मात्र ही नहीं वरन सम्पूर्णता से एक अमोघ मंत्र तुल्य ही तो है। जिस प्रकार 'ॐ नमः शिवाय' अपने-आप में पूर्ण मंत्र है और भगवान शिव की स्तुति का ही प्रभाव समेटे है, उसी प्रकार 'ॐ नमः निखिलेश्वर्यायै' भी तो योगियों व संन्यासियों का सर्वाधिक प्रिय मंत्र और अपने प्रिय गुरुदेव की स्तुति दोनों का ही प्रभाव समेटे है। दुर्गम वनों, विपरीत परिस्थितियों में न केवल संन्यासी इस मंत्र के माध्यम से त्राण प्राप्त करते हैं, वरन एकांत ध्यान के अवसर पर इसी के माध्यम से अपने मन की गहराइयों में उतरने का भी तो प्रयास करते हैं।

2. कल्याण्यै ते नमो नमः

यह द्वितीय पद है। यदि पूज्य गुरुदेव के साधकों ने ध्यान दिया होगा, तो अनुभव किया होगा, कि वे आशीर्वाद स्वरूप केवल सुखमय जीवन, कष्टों की समाप्ति, प्रसन्नता आदि का ही आशीर्वाद नहीं देते वरन यह भी उच्चरित करते हैं-'कल्याण हो'। उनका यह उच्चरित करना ही स्पष्ट कर देता है, कि कोई दिव्यात्मा इस रूप में हमारे आपके समक्ष विद्यमान है, क्योंकि 'कल्याण' का एक अत्यंत गूढ़ अर्थ है। कल्याण का तात्पर्य योग-जगत में होता है-संसार के आवागमन के चक्र से मुक्त करा देना, साक्षात् मोक्ष ही उपलब्ध करा देना। इस प्रकार सहज कल्याण प्रदान करने वाले पूज्यपाद सद्गुरुदेव के चरणों में मैं भी शत्-शत् वंदन करता हूँ।

'देह और प्राण दो अलग-अलग तत्व नहीं हैं, इन दोनों के सामंजस्य से ही साधना में पूर्णता मिलती है'

3. नमस्ते रुद्र रुपिण्यै

जो साधक भारत की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित हैं, उन्हें ज्ञात होगा, कि प्रारम्भ में केवल रुद्र की ही उपासना होती थी तथा रुद्र की ही कालांतर में उपासना शिव रूप में प्रचलित हुई। रुद्र की धारणा से उपासकों का तात्पर्य उस भीषण शक्ति से होता था, जो विध्वंस करने में समर्थ हैं।

पूज्यपाद गुरुदेव का एक स्वरूप रुद्र भी तो है। अशुभ के समापन हेतु, विसंगतियों पर दावानल की भांति फैल जाने वाले गुरुदेव का यह स्वरूप किस प्रकार पौरुषता का एक जीवंत स्वरूप है—यह तो वर्णन से भी अधिक दर्शन की बात है।

4. ब्रह्म मूर्त्यै नमो नम:

किंतु इन्हीं रुद्र स्वरूप गुरुदेव का दूसरा पक्ष ब्रह्ममयता का भी तो है। मेरे कुछ पूर्व जन्म के पुण्य थे—ऐसा कहना तो किंचित अहं युक्त लगता है, किंतु कोई विशेष बात थी अवश्य जिससे मैं पूज्यपाद गुरुदेव के ब्रह्म स्वरूप का दर्शन कर सका.....

5. नमस्ते क्लेश हारिण्यै

गुरुदेव के इस स्वरूप को प्रणाम करने से पूर्व आवश्यक है, कि हम 'क्लेश' शब्द का अर्थ समझ लें, क्योंकि जब तक भाव-भूमि ही नहीं समझेंगे, तब तक प्रणाम केवल हमारे ओठों से ही उच्चरित होकर रह जायेगा। क्लेश शब्द का अर्थ है—जीव के विविध संस्कार। अनेक जन्मों में अनेक प्रकार से जीवन यापन कर अनेक मोहजालों में ज्ञात-अज्ञात रूप से बद्ध, पूर्व जन्म के संस्कारों-कुसंस्कारों से ग्रसित जीव तब तक मुक्ति लाभ नहीं कर सकता जब तक उसके इन संस्कारों को इस प्रकार न समाप्त कर दिया जाए जिस प्रकार जल के प्रवाह से भूमि की गंदगी स्वच्छ कर दी जाती है।

पूज्यपाद गुरुदेव इसी क्रिया को निरन्तर अपने शक्तिप्रवाह, वचनों आदि से सुसम्पन्न कर जीव को जाग्रत, स्वप्न एवं सुसुप्ति तीनों अवस्थाओं में अभय प्रदान करते हैं, जिससे वह न केवल प्रत्यक्ष दोषों से मुक्त हो सके वरन अनेक अज्ञात दबावों से जिस प्रकार निरन्तर क्लेश, खिन्नता का अनुभव करता रहता है, उससे भी त्राण पा सके।

6. मंगलायै नमो नम:

जिनकी पवित्र देह यष्टि से हवन-कुंड से नि:सृत सुगन्ध आ रही हो, जिनके वचन यज्ञ की पुष्ट धुम्र राशि के सदृश्य चारों ओर विकसित हो रहे हों, जिनके श्वास-प्रश्वास में आम्र-मंजरी की सुगन्ध हो, जिनका सु (सुवासित) मन (आत्म) सुमन के समूह की ही भांति वातावरण को भी सुगन्धित कर रहा हो, उन्हें उनका यह तुच्छ शिष्य प्रणाम ही निवेदित कर सकता है।

7. हरति सर्व व्याधिनां,

प्रथम स्वरूप तो वह—जहाँ वे भवरोग-वैद्य बन कर अपने शिष्य की अनेक मोह-माया जनित 'व्याधियों' का शमन करते हैं।

द्वितीय स्वरूप वह—जहां वे प्रखर आयुर्वेदज्ञ बनकर इस प्राचीन विद्या को संरक्षण एवं नव जीवन देने के लिए अवतरित हुए हैं।

यही कारण है, कि उनके सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में न केवल अपूर्व मानसिक शांति वरन आरोग्य का भी अनुभव करता है। 'देह और प्राण दो अलग-अलग तत्व नहीं हैं, इन दोनों के सामंजस्य से ही साधना में पूर्णता मिलती है'—ऐसा कहने वाले पूज्यपाद गुरुदेव की यदि फिर दोनों रूप में वंदना की जाए तो विचित्र ही क्या?

8. श्रेष्ठ ऋष्यै नमो नम:

यदि हम पूज्यपाद गुरुदेव के संन्यस्त जीवन पर दृष्टिपात करें, तो क्या ऐसी ही स्थितियाँ सम्पूर्णता से नहीं मिलतीं? अपने गुरुदेव की आज्ञा से बद्ध होकर भौतिक जीवन में विवशतापूर्वक रहने वाले पूज्यपाद गुरुदेव का प्रकृति से क्या सम्बन्ध है, यह तो उनके ही एक वचन से स्पष्ट हो जाता है—'प्रकृति मेरे लिए मां और बहन के समान मधुर है।'

इतनी उच्च भावभूमि का ही तो परिणाम है, कि वे इस सांसारिक जीवन के विषयों के मध्य भी उदार मना बने – ठीक प्रकृति की ही भांति।

9. शिष्यत्व विष नाशिन्यै

यों तो इस लेख में वर्णित प्रत्येक पद अपने आप में एक पृथक ग्रंथ की ही अपेक्षा करता है, किन्तु इस प्रस्तुत पद विशेष के संदर्भ में तो यही आवश्यकता और भी अधिक मुखरित हो जाती है। गुरुदेव अपने शिष्यों का विष निरन्तर किस प्रकार से समाप्त कर रहे हैं, किस प्रकार उन्हें संदेह, तर्क, अश्रद्धा, निर्लज्ञता आदि विषों से बाहर निकाल कर अमृत घट की ओर ले जाने को तत्पर हैं, वह यदि न ही वर्णित करें तो उचित होगा, क्योंकि यह विवरण पीड़ाओं की एक गाथा ही तो है।

षोडश कला युक्त भगवान श्रीकृष्ण की भी तो यही विशेषता थी, कि बाल-वृद्ध ही नहीं, पशु-पक्षी और वनस्पति तक उनसे स्पंदित हो उठते थे।

गुरुदेव के इस रूप को वंदन करने से अधिक उचित तो यह होगा कि हम सभी अपने आचरण द्वारा उन्हें तृप्ति देने का प्रयास करें।

10. पूर्णतायै नमोऽस्तु ते

पूज्यपाद गुरुदेव के अवतरण का रहस्य ही है, अपने शिष्यों को पूर्णता प्रदान करना अर्थात् जो भोगार्थी हैं उन्हें भोग की पूर्णता प्रदान करना तथा मोक्षार्थी शिष्यों को जीवन मुक्ति का लाभ उपलब्ध करा देना।

षोडश कला युक्त भगवान श्रीकृष्ण की भी तो यही विशेषता थी, कि बाल-वृद्ध ही नहीं, पशु-पक्षी और वनस्पति तक उनसे स्पंदित हो उठते थे। पूज्यपाद गुरुदेव को इस लीलामय कृष्ण स्वरूप में प्रणाम!

11. त्रिविध ताप संहर्त्र्यै

त्रिविध ताप का अर्थ है–दैहिक, दैविक एवं भौतिक स्वरूप में मनुष्य के कर्मफलस्वरूप आने वाली बाधाएं। गुरु का दायित्व यह नहीं होता कि वह अपने शिष्यों के कर्मफल से आबद्ध हो, किन्तु पूज्यपाद गुरुदेव ने सर्वथा नूतन परम्परा डालकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है, कि सद्गुरुदेव तो वही है जो शिष्य के साथ उसी के स्तर तक अपने को झुका कर, उसके दु:ख, दोष, दारिद्र्य, पाप-ताप को समाप्त कर उसे ज्ञान मार्ग पर ले चले।

12. ज्ञानदात्र्यै नमो नम:

मैं नहीं जानता, कि कितने शिष्यों ने इस तथ्य को अनुभव किया होगा, किन्तु जब-जब पूज्यपाद गुरुदेव के समक्ष ज्ञान-चर्चा छिड़ती है अथवा कोई शिष्य वास्तव में किसी गूढ़ जिज्ञासा को प्रकट करता है, (केवल बुद्धि का बल नहीं दिखाता है) तो उनके मुखमण्डल पर अमृत जैसा कुछ झलक उठता है और वे सब कुछ विस्मृत कर, उस विषय विशेष की पर्त-दर-पर्त इतनी सटीक विवेचना करते हैं, कि मन नर्तन कर उठता है।

–क्योंकि गुरुदेव का मूल स्वरूप तो ज्ञानमयता का ही है।

13. शान्ति सौभाग्य कारिण्यै

सामान्य जन तो पूज्यपाद गुरुदेव के व्यक्तित्व के उस पक्ष को ही देख पाते हैं, जो उनके समक्ष प्रात: दस बजे से रात्रि दस बजे तक विविध लोगों से मिलता-जुलता, सामान्य जन की ही भांति विविध समस्याओं आदि में संलग्न रहता है, किन्तु इसके उपरांत उनकी रात्रि के पल किस प्रकार बीतते हैं, इसकी तो कोई चर्चा ही नहीं।

–किन्तु मैंने स्वयं देखा है कि, किस प्रकार वे पूरी की पूरी रात उथल-पुथल में काटते हैं और यह घटना प्राय: ही होती रहती है। अपने शिष्यों को शांति एवं सौभाग्य प्रदान करने का मूल्य वे इसी प्रकार साधनाओं एवं स्वयं के ऊपर तनाव के माध्यम से कितने ही वर्षों से चुकाते आ रहे हैं।

14. शुद्ध मूर्त्यै नमोऽस्तु ते

गुरु तत्व जो स्वत: ही शुद्ध होता है।

पूज्यपाद गुरुदेव इसी शिशु स्वरूप में अवतरित हुए हैं। यह रहस्य भी मुझे उन्हीं संन्यासी बंधु से मिला। जब ईश्वर को इस जगत में निर्मलत्व, साधुत्व और कोमल भावनाओं का ही प्रसार करना सर्वोपरि होता है, तभी वह इस प्रकार शिशु रूपात्मक सद्गुरु बनकर अवतरित होता है और उनके इसी स्वरूप की ही महत्ता है, कि बिना किसी पात्रता आदि का विचार किए सभी उन तक उपस्थित होने के अधिकारी हैं, जिस प्रकार शिशु द्वेष रहित शुद्ध होता है, पूज्यपाद गुरुदेव ने भी बहुजन हिताय इसी प्रकार का स्वरूप प्राप्त किया है।

15. क्षमावत्यै–सुधावत्यै

प्रभु में क्षमा किस प्रकार विद्यमान है, इसके संदर्भ में मुझे एक घटना याद आती है–''कोई साधु जल में बहते बिच्छु को बार-बार निकाल रहा था, किंतु वह बिच्छु निकलते ही डंक मार देता, फलत: हाथ से छूट पुन: गिर जाता। अंत में जब यही घटना कई बार दोहराई गयी, तो किनारे पर खड़े एक व्यक्ति ने इसका कारण पूछ ही लिया।'

उत्तर में साधु ने मुस्करा कर कहा–'अपना-अपना स्वभाव है।'

इसी प्रकार वे भी बार-बार हमको जीवन चक्र से निकाल रहे हैं और हम डंक मार रहे हैं, किन्तु फिर वही बात कि अपना-अपना स्वभाव है।

16. तेजोवत्यै नमो नम:

तेज के समानार्थक योग की भाषा में एक अन्य शब्द का प्रयोग किया जाता है–'ऊर्ध्वमूर्धिन:' अर्थात् जिनका सहसार तप की अधिकता से प्रदीप्त एवं उत्तप्त हो! ऐसे ही व्यक्ति केवल अपनी

शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं महितां विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

इस श्लोक में बताया गया है कि जीवन का श्रेष्ठ तत्व शिष्य होता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में यदि सबसे उच्च कोटि का कोई शब्द है तो वह शिष्य है। शिष्य का मतलब यह नहीं है कि वह गुरू से दीक्षा लिया हुआ व्यक्ति हो, शिष्य का मतलब है कि जो प्रत्येक क्षण नवीन गुणों का अनुभव करता हुआ अपने जीवन में उतारता हो वह शिष्य है बालक भी शिष्य है, जो मां के गुणों को अपने जीवन में उतारता है, देख करके अनुरूप बनता है।

- जिस प्रकार शरीर की सुविधा के लिए, उसे नित्य स्वच्छ करना आवश्यक है, उसी प्रकार मन और मस्तिष्क को नित्य स्वच्छ करना आवश्यक है। जब तक मन नकारात्मक विचारों से भरा है, तब तक वह एक लक्ष्य की ओर ध्यान नहीं कर सकता है।
- हर शिष्य का रक्त लाल है और हर शिष्य के आंसू खारे हैं। हर शिष्य को ऐसा मार्ग अवश्य ही खोजना चाहिए, जिससे उसके सम्मान की रक्षा और अनन्त सम्भावनाओं की पूर्ण प्राप्ति हो सके।
- आत्म मुक्ति से जो आनन्द प्राप्त होता है, वही सच्चा अखण्ड आनन्द है। यह आनन्द कभी नष्ट नहीं होता, इसी आनन्द की प्राप्ति की सदैव आकांक्षा करनी चाहिए।
- अतीत का पीछा न करो और भविष्य के भ्रम जाल में न फंसो। अतीत व्यतीत हो गया है और भविष्य अभी अनागत है। यहाँ अभी इस क्षण जीवन जैसा है, उसी की धारणा करो। साधनाभ्यासी शिष्य स्थिरता और मुक्त भाव से जीता है।
- जो अपने धन को ज्ञान प्राप्ति में लगा देता है, वह धन सुरक्षित हो जाता है, इससे यह ज्ञान धन कोई नहीं छीन सकता। ज्ञान प्राप्ति में किया गया यह निवेश फल देता ही रहता है।
- यदि हम गन्दे वस्त्रों और गन्दी वस्तुओं से घृणा कर सकते हैं, तो निश्चय ही हमें गन्दे विचारों और गन्दे सिद्धान्तों से घृणा करनी ही चाहिए।
- 'शिष्य धर्म' का अर्थ है 'वृक्ष की जड़ के समान कार्य करना' अर्थात् वृक्ष को स्थायित्व देना, विकास करना और उसे स्थिर रखना। शिष्य ही आधार शक्ति है।
- वास्तविकता को केवल शब्दों के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता। आम का स्वाद, उसे चख कर ही जाना जा सकता है। साधना द्वारा विकसित ज्ञान से ही परम सत्य का साक्षात्कार सम्भव है।
- शिष्य को सदैव समय का उपयोग करना चाहिए क्योंकि समय किसी का इंतजार नहीं करता, जिसने समय को पहचान लिया सफलता उसके कदम चूमती है।
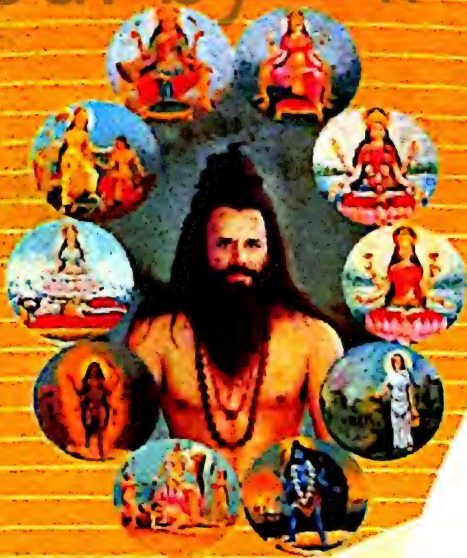
गुरु वाणी

- परन्तु गुरु से प्रेम का यह रास्ता इतना आसान नहीं है, यह तो तलवार की एक धार है जिस पर चलने से पैर लहूलुहान हो जाते हैं। यह ऐसी पगडण्डी नहीं है जिसके नीचे पुष्प बिछे हों... प्रेम करना तो बहुत कठिन है, तकलीफदायक है। पूर्ण हृदय से प्रेम करने की क्रिया किसी बिरले को ही आ पाती है।
- मैंने अपने इष्ट से प्रेम किया है, अपने गुरु से प्रेम किया है, ईश्वर से प्रेम किया है, मैंने उस प्रेम के आनन्द को अनुभव किया है और मैं उस आनन्द को तुम्हारे अन्दर भर देना चाहता हूँ। मैं तुम्हें ठूंठ नहीं, एक मुस्कुराता हुआ शिष्य बनाना चाहता हूँ जो प्रेम से सराबोर हो।
- जो भी इष्ट के समीप पहुँचा है, इष्ट से साक्षात्कार किया है, उसने प्रेम की ए.बी.सी.डी. सीखी ही है, प्रेम की परिभाषा को पढ़ा ही है।
- मीरा को कोई मंत्र विधि ज्ञात नहीं थी, पर आज उसका नाम सभी को याद है, क्योंकि उसने अपने इष्ट के लिए अपने को मिटाया, समाज की परवाह नहीं की।
- यदि मैं चारों वेदों के अर्थ स्पष्ट करूँ, तो चारों वेदों का सारभूत तथ्य एक ही है कि–जीवन का प्रारम्भ प्रेम है और जीवन का अन्त भी प्रेम ही है।
- मैं प्रतिपल तुम्हारे साथ बहता हुआ, समुद्र के उस किनारे तक तुम्हें पहुँचाने के लिए तैयार खड़ा हूँ। मुझे विश्वास है, कि तुम अवश्य ही पार हो सकोगे और एक बार पुनः आशीर्वाद प्रदान करता हूँ कि तुम जीवन में प्रेम और आनन्द को प्राप्त कर सको।
- अन्दर उतरने की क्रिया या मन के परे पहुँचने की क्रिया ध्यान है। जहाँ ध्यान है, वहाँ और कोई चीज नहीं रह सकती। ध्यान के लिए न निराकार की आवश्यकता है, न साकार की आवश्यकता है... जहाँ आकार है ही नहीं वहीं ध्यान है। आकार तो हमने बनाया है, हमने राम को देखा नहीं है, पोथी में जो लिखा है उसके अनुसार चित्र बनाया है और उसी को राम की संज्ञा दे दी गई। आकार के माध्यम से ध्यान की स्थिति नहीं हो सकती।
- जो निराकार को मानते हैं वे कहते हैं कि एक ज्योति है, एक दीपक की लौ है, वह आँख बंद करता है तो चारों ओर लाली सी दिखाई देती है–वह उसी को ध्यान समझ बैठता है, पर ये भी ध्यान नहीं है।
- ध्यान तो बुद्धि से परे हटने की क्रिया है। बुद्धि ही सगुण और निर्गुण में भेद करती है। जहाँ बुद्धि है, वहीं निराकार या साकार का प्रश्न है, वहीं छल-झूठ, ढोंग-पाखण्ड भी है। ध्यान तो अन्दर उतरने की क्रिया है।
- जब व्यक्ति ध्यानावस्था में पहुँच जाता है, तो फिर जीवन में किसी अन्य प्रकार का सुख उसे रास नहीं आता, फिर समस्त सिद्धियाँ उसके सामने नृत्य करती रहती हैं।

सूर्यग्रहण या काली जयंती (02.09.18) पर सम्पन्न करें

भगवती दिगम्बरी

दक्षिण काली साधना

यों तो काली, महाकाली और दक्षिण काली से संबंधित कई साधनाएं साधना ग्रंथों में प्रकाशित हैं, परंतु दिगम्बरी दक्षिण काली साधना, साधना क्षेत्र में अत्यंत उच्चस्तरीय साधना मानी गयी है. वामा खेपा जैसे तांत्रिक ने भी स्वीकार किया है कि दिगम्बरी दक्षिण काली साधना सर्वाधिक गुह्य, गुप्त, अलौकिक, अद्वितीय और अनुपम है, पूरे जीवन काल में विरले लोगों को ही यह सौभाग्य प्राप्त होता है, कि वे ऐसी उच्च स्तरीय साधना को प्राप्त करें, इसके अलावा रहस्य को समझें, जब जीवन में पुण्योदय होते हैं तभी ऐसी साधना साधक सम्पन्न करता है।

त्रिजटा अघोरी तो विश्व के अद्वितीय आचार्य है और उन्होंने साधनाओं के क्षेत्र में कीर्तिमान कायम किये हैं, उसने भी अपने 'तंत्र समुच्चय सपर्या' ग्रंथ में स्वीकार किया है कि कई वर्ष भटकने के बाद और हजारों तांत्रिकों से मिलने के उपरांत ही स्वामी निखिलेश्वरान्द जी से मुझे दिगम्बरी दक्षिण काली साधना प्राप्त हुई और मेरे पास तंत्र के हजारों रत्नों में से यह अपने आपमें अलौकिक अनुपम रत्न है।

दिगम्बरी दक्षिण काली साधना जन साधारण में कम प्रचलित है, इसका कारण इस साधना का महत्वपूर्ण होना है, यह साधना एक प्रकार से पूरे जीवन का वरदान है और उच्च स्तरीय योगी उसी शिष्य को यह साधना प्रदान करते थे जो जीवन भर उनकी सेवा करता था, और जो मन-वचन-कर्म से उनके प्रति अनुरक्त रहता हुआ साधना मार्ग पर अग्रसर होता था, जीवन के अंतिम समय में उसी को यह दिव्य साधना प्रदान की जाती थी।

काली का तात्पर्य

भारतीय आचार्यों ने भगवती काली को दस महाविद्याओं में सर्व प्रमुख स्थान दिया है, आचार्य भट्ट ने काली के तेरह अर्थ बताये हैं -

1. जिसकी साधना करने से काल का क्षय होता है, और व्यक्ति दीर्घायु हो जाता है।
2. काली का तात्पर्य है काल की पहिचानने की क्षमता प्राप्त करने वाला, ऐसा साधक भूत भविष्य और वर्तमान को पहचानने की योग्यता प्राप्त कर लेता है।
3. काली का तात्पर्य जीवन में शत्रुओं पर प्रबल रूप से प्रहार करने वाली और शत्रुओं को समाप्त करने वाली महादेवी।
4. काली जीवन के समस्त विकारों, दोषों, अपराधों को समाप्त करने वाली है, शराब का व्यसन औरअन्य बुरी आदतों को एक ही क्षण में समाप्त कर काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार से परे हटा कर साधक को मोक्ष के मार्ग की ओर प्रवृत्त करने वाली है।
5. काली को राज राजेश्वरी भी कहा गया है, इसका तात्पर्य यह उच्च स्तरीय लक्ष्मी प्रदाता है, काली की साधना करने से साधक के जीवन में स्वत: व्यापार वृद्धि एवं आर्थिक उन्नति होती ही रहती है।
6. काली विन्ध्यवासिनी है, इसका तात्पर्य जीवन में यह साधना पूर्ण भोग और मोक्ष को प्रदान करने वाली है।
7. इसे 'शरण्य' कहा गया है, यह जीवन के समस्त दु:खों को समाप्त कर पूर्ण ध्यान लगाने में समर्थ और सहायक है।
8. यह विज्ञान रूपा है और इसकी साधना से जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता और साधक सभी क्षेत्रों में निरंतर उन्नति करता रहता है।
9. यह दुर्गा स्वरूप है, अत: जीवन में आने वाली बाधाओं को तुरंत समाप्त करने में सहायक है।
10. यह आपत्ति उद्धारक महादेवी है, इसकी साधना करने से पूरे जीवन काल में किसी प्रकार की कोई बाधा या अड़चन नहीं आती है।
11. यह सर्व सिद्धि प्रदायक है, छोटी-मोटी साधनाओं या विविध साधनाओं में समय बरबाद करने की अपेक्षा एक ही साधना में पूर्णता प्राप्त करने से समस्त रूपों में अनुकूलता प्राप्त हो जाती है।
12. काली को प्रबल रोग मुक्ता कहा गया है यह समस्त प्रकार के रोगों को समाप्त करने वाली और वृद्धावस्था को यौवनावस्था में बदलने वाली है, यही एक मात्र ऐसी साधना है, जिसके द्वारा व्यक्ति सभी प्रकार के रोगों से मुक्त हो सकता है।
13. यह महाविद्याओं में प्रमुख है, इसकी साधना करने से अन्य सभी महाविद्याएं में स्वत: अनुकूलता प्राप्त होती है।

सूर्य ग्रहण

यह सौभाग्य है कि इस वर्ष सूर्य ग्रहण का योग बन रहा है और ग्रहण के संबंध में शास्त्रोक्त कथन है कि जो साधना सौ बार करने पर भी सिद्ध नहीं होती वह ग्रहण के अवसर पर विधि-विधान सहित सम्पन्न कर दिया जाए तो निश्चित रूप से फल प्राप्त होता है। इसीलिए तीव्र साधनाओं के लिए सूर्य ग्रहण तथा प्रेम, सौन्दर्य की साधनाओं के लिए चन्द्र ग्रहण की प्रत्येक साधक को प्रतीक्षा रहती है, जब ये दोनों अवसर आते है तो साधना के लिए किसी अन्य मुहूर्त को देखना व्यर्थ है।

सूर्य अग्नि युक्त तेजस्वी ग्रह है और इस सृष्टि का संचालन कर्ता है, जिसके चारों ओर पृथ्वी चक्कर लगाती है, सूर्य की शक्ति से ही सभी प्राणियों को शक्ति प्राप्त होती है, यह वैज्ञानिक मत है और आज से हजारों वर्ष पहले हमारे ऋषि-मुनियों ने इस मत को जानते हुए सूर्य की उपासना पर विशेष जोर दिया तथा पंचदेव उपासना में शिव, गणेश, विष्णु, शक्ति के साथ सूर्य उपासना को प्रधानता दी गयी है।

इस वर्ष सूर्य ग्रहण शनिवार 11.8.2018 को है। भारत में यह सूर्य ग्रहण नहीं दिखाई देगा, लेकिन साधना के क्षेत्र में इसका प्रभाव उतना ही रहेगा जैसा कि साक्षात ग्रहण दिखाई देने पर रहता है।

यह सूर्य ग्रहण दोपहर 1.32 से प्रारंभ होगा तथा 5 बजे समाप्त होगा, परंतु सूर्यकालिक ग्रहण साधना नियमों के अनुसार सूर्य ग्रहण उदय होने से 12 घण्टे पूर्व तथा ग्रहण समाप्ति तक साधना योग माना गया है। अत: साधक ग्रहण प्रारंभ के 12 घण्टे पूर्व से साधक प्रारंभ कर सकते हैं।

सूर्य ग्रहण के समय सबसे प्रधान साधना तो दिगम्बरी दक्षिण काली की ही साधना है। अत: साधक को ऐसा महत्वपूर्ण अवसर गंवाना नहीं चाहिए।

दिगम्बरी दक्षिण काली

वशिष्ठ, विश्वामित्र, ब्रह्मा सहित शंकराचार्य तथा अन्य महत्वपूर्ण योगियों ने, तांत्रिकों ने दक्षिण काली साधना के संबंध में जो वर्णन किया है, उस वर्णन से यह स्पष्ट है कि यह साधना कल्याणकारी और मनोवांछित पूर्णता सिद्धि साधना है, शक्ति तथा लक्ष्मी के साथ-साथ तेजस की साधना मूल रूप से दिगम्बरी दक्षिण काली साधना है।

इस साधना को सम्पन्न करने में न तो आयु का बंधन है और न ही गृहस्थ अर्थात् विवाहित, अविवाहित, स्त्री अथवा पुरुष का बंधन है।

साधना विधान

मंत्र जप अधिक होने के कारण साधक यह साधना अनुष्ठान 11 तारीख को प्रात: से भी प्रारंभ कर सकते हैं।

साधना में साधक लाल वस्त्र धारण करें, नीचे लाल धोती पहिनी हुई हो, और लाल धोती ही ऊपर कंधों पर डाली हुई हो, इसी प्रकार साधिकाएं भी लाल साड़ी और लाल कंचुकी ही धारण करें।

इस साधना में पूर्ण सिद्धि प्राप्ति के लिए पांच दुर्लभ वस्तुओं की आवश्यकता होती है, जिसके माध्यम से यह साधना पूर्ण सिद्ध की जा सकती है।

इस दिन साधक-साधिका लाल आसन पर दक्षिण की ओर मुँह कर बैठ जाए और सामने तेल का दीपक लगा लें, फिर सामने ही लाल वस्त्र बिछाकर दीपक के आगे ही तांत्रोक्त नारियल रख दें और उस पर सिन्दूर का तिलक लगाएं, फिर अपने ललाट पर भी सिन्दूर का तिलक लगाएं, इसके बाद सामने ही दिगम्बरी दक्षिण काली यंत्र और चित्र को स्थापित कर दें, और उसके सामने मधुरूपेण एकमुखी रुद्राक्ष एवं काल यंत्र को स्थापित कर इन दोनों पर भी सिन्दूर का तिलक करें।

इसके बाद सभी तत्वों का सामूहिक पंच पूजन करें, पंच पूजन में जल, केसर, अक्षत, पुष्प एवं प्रसाद समर्पित करें, पुष्प यथा संभव लाल रंग के ही उपयोग में लाने चाहिए और प्रसाद दूध का बना हुआ किसी भी प्रकार का पदार्थ भोग में रखा जा सकता है।

इस पूरे साधना काल में केवल इक्यावन माला मंत्र जप करने का विधान है, मंत्र जप काली हकीक माला से करना है साधक चाहें तो इससे ज्यादा भी मंत्र जप सम्पन्न कर सकते हैं।

दिगम्बरी दक्षिण काली मंत्र

|| ॐ क्रीं क्रीं क्लीं क्लीं दिगम्बरी दक्षिण कालिके क्लीं क्लीं क्रीं क्रीं फट्||

यह मंत्र अपने आपमें अत्यंत गोपनीय और दुर्लभ है, साधकों को चाहिए कि वे मंत्र को गलत लोगों के हाथ में न दें, और कुकर्मी, आलोचक और निन्दक लोगों को भी इस साधना का रहस्य नहीं समझाएं।

यह साधना इस मुहुर्त के बाद आने वाली काली जयंती को 2 सितम्बर की रात्रि में भी सम्पन्न की जा सकती है।

इस प्रकार सूर्य ग्रहण की यह साधना साधक के लिए शीघ्र फलदायी सिद्ध होती है, दरिद्रता निवारण, विकार निवारण, पाप दोष निवारण, शक्ति प्राप्ति, शत्रु भय शांति हेतु सूर्य ग्रहण पर यह साधना सर्वश्रेष्ठ है।

एक बात विशेष रूप से ध्यान रखनी है, कि ग्रहण काल के दौरान सूर्य की ओर नहीं देखना है, ऐसा करने से नेत्रों को हानि पहुँच सकती है, और साथ ही साधनात्मक दोष भी बनता है।

साधना की पूर्णता के पश्चात् चित्र, रुद्राक्ष और काल यंत्र को पूजा स्थान में ही रख दें, तांत्रोक्त नारियल साधक काले कपड़े में बांध कर अपने घर में रुपये पैसे के स्थान पर अर्थात् तिजोरी की जगह रखना चाहिए। ऐसा करने से धन की अभिवृद्धि होती है।

साधना सामग्री - 660/-

16.8.2018

जीवन की पूर्णता का प्रतीक

मनुष्य सही दृष्टि से तो अधूरा ही है, क्योंकि वह अपने शरीर के बाहरी रूप को सजाता संवारता है, परंतु उसके अंदर के रूप का उसे ज्ञान नहीं है,उसे यह भी ज्ञान नहीं है कि शरीर के अंदर क्या-क्या हलचल होती है, शरीर में जीव और ब्रह्म की स्थिति कहाँ पर है, किस प्रकार से जीव को ब्रह्म से मिलाया जा सकता है और पूर्णता प्राप्त की जा सकती है।

इसके अलावा मानव शरीर जड़ है, उसका कुछ हिस्सा ही चैतन्य है, पश्चिम और भारतीय दर्शन का मूलभूत अंतर यही है कि पश्चिम ने शरीर के बाहरी रूप को पहिचाना, सजाया संवारा और ज्यादा से ज्यादा सुंदर दिखाने का प्रयत्न किया, इसके विपरीत भारतीय दर्शन अंदर की ओर पहुँचने में सक्षम हो सका, उसने आंतरिक जीवन को पहिचानने की क्रिया की, बाहरी दृष्टि से उसने कपड़ों का मोह नहीं किया, सुस्वादु भोजन की ओर उसकी प्रवृति नहीं बढ़ी, देह को सुंदर बनाने के लिए साधनों का उपयोग और प्रयोग नहीं किया, अपितु शांत नदी के किनारे या एकांत स्थान में बैठ कर मनन चिंतन और स्वाध्याय किया, उससे अनुभव किया कि अंदर की ओर प्रवेश करने से सारा जड़ शरीर अपने आप में ही चैतन्य हो जाता है और इस शरीर को चैतन्य होने पर अद्भुत दृश्य दिखाई देने लगते है, उसका हृदय शुद्ध परिष्कृत और व्यापक हो जाता है, वह सारे संसार को परिवार की तरह मानने लगता है, उसे पूर्ण रूप से काल ज्ञान हो जाता है और वह भूत और भविष्य को पूर्णता के साथ देखने में समर्थ हो पाता है।

सिद्ध साधकों ने कुण्डलिनी जागरण के छः तथ्य बताये है, जो कुण्डलिनी जाग्रत कर प्राप्त किये जा सकते हैं।

1. कुण्डलिनी जागरण में सारा शरीर पवित्र, दिव्य और चेतनायुक्त हो जाता है और शरीर के अंदर की सारी ग्रंथियां जाग्रत होने लगती हैं।
2. कुण्डलिनी जागरण से देह के सभी रोगों को समाप्त किया जाता है और वह पूर्णतः रोग मुक्त हो कर सुंदर, आकर्षक एवं दिव्य देह प्राप्त करता हुआ पूर्ण आयु प्राप्त करने में समर्थ होता है।
3. कुण्डलिनी जागरण से साधक को भूत भविष्य वर्तमान सिद्धि प्राप्त हो जाती है और वह किसी भी व्यक्ति के भूतकाल को आसानी से देख सकता है साथ ही उसके जीवन में भविष्य में आने वाली घटनाओं को भी भली प्रकार से पहिचान सकता है।

शरीर के अंदर हजारों नाड़ियां है, पर इसमें तीन नाड़ियां मुख्य हैं, जिसे इडा, पिंगला और सुषुम्णा कहते है, मानव शरीर में रीढ की हड्डी के बाईं ओर इडा नाड़ी और दाहिनी ओर पिंगला नाड़ी होती है, रीढ़ के छल्लों में से बलखाती हुए सुषुम्णा नाड़ी ऊपर की ओर बढ़ती है और सिर के मध्य तक पहुँच कर समाप्त होती है, इसे पूर्ण रूप से जाग्रत करने की क्रिया को पूर्ण कुण्डलिनी जागरण कहा जाता है।

4. कुण्डलिनी जागरण से साधक को वचन सिद्धि हो जाती है और वह मुँह से जो भी कहता है, वह पूरा हो जाता है।

5. कुण्डलिनी जागरण से शरीर स्थित सभी चक्र जाग्रत होने लगते हैं और वह सिद्ध योगी एवं परमहंस की अवस्था प्राप्त करने की ओर अग्रसर हो जाता है।

6. कुण्डलिनी जागरण से मानसिक तनाव हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है और चेहरे के चारों ओर प्रकाश का आभामण्डल स्थापित हो जाता है, जिससे उसे देखने वाला व्यक्ति स्वयं प्रभावित एवं सम्मोहित हो जाता है।

कुण्डलिनी जागरण

शरीर के अंदर हजारों नाड़ियां है, पर इसमें तीन नाड़ियां मुख्य हैं, जिसे इडा, पिंगला और सुषुम्णा कहते है, मानव शरीर में रीढ की हड्डी के बाईं ओर इडा नाड़ी और दाहिनी ओर पिंगला नाड़ी होती है, रीढ़ के छल्लों में से बलखाती हुए सुषुम्णा नाड़ी ऊपर की ओर बढ़ती है और सिर के मध्य तक पहुँच कर समाप्त होती है, इसे पूर्ण रूप से जाग्रत करने की क्रिया को पूर्ण कुण्डलिनी जागरण कहा जाता है।

षट चक्र भेदन

मानव शरीर में स्थित चक्रों में नीचे से ऊपर की ओर यह प्रथम चक्र है और यहीं से आगे छः चक्रों की ओर साधक सुषुम्णा को बढ़ाता हैं

1. मूलाधार - प्रथम चक्र

इसका आकार कमल की तरह होता है और यह मानव के गुदा और लिंग के बीच में सुषुम्णा नाड़ी से वेष्टित होता है, इसे मूलाधार कहते है, जब साधक इस स्थान पर चिंतन करता है और भावना देता है तो यह चक्र जाग्रत होने लगता है, साथ ही साथ भस्त्रिका तथा प्राणायाम के द्वारा इस चक्र को जाग्रत किया जाता है, और यही से सुषुम्णा नाड़ी ऊपर की ओर बढ़ती है, इस चक्र के जाग्रत होने से व्यक्ति का ध्यान लग जाता है और वह समाधि अवस्था में पहुँचने की तैयारी करती है।

2. स्वाधिष्ठान - द्वितीय चक्र

जिस स्थान पर लिंग स्थित है, उसके मूल में यह चक्र स्थापित है, जो कि अर्द्धचन्द्र के समान कमल के आकार का है।

जब सुषुम्णा नाड़ी आगे की ओर बढ़ती है तो यह चक्र स्वतः जाग्रत हो जाता है, इसके जाग्रत होने से व्यक्ति के चेहरे पर तेजस्विता और पूर्णता आने लगती है, उसके मुँह से

कविता का प्रवाह होने लगता है और वह स्वतः घण्टों भाषण या प्रवचन देने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है।

3. मणिपुर – तृतीय चक्र

यह नाभि के मूल में श्याम वर्ण का दस पंखड़ियों में बने हुए कमल के आकार का चक्र है, जिसका लाल रंग है, साधक आगे जब बढ़ता है तो स्वाधिष्ठान चक्र के बाद यह चक्र स्वतः जाग्रत हो जाता है, इस चक्र के जाग्रत होने से साधक में आशीर्वाद देने की क्षमता आ जाती है और वह किसी का भी कल्याण कर सकता है, या उसका संहार कर सकता है।

4. अनाहत – चतुर्थ चक्र

यह हृदय के नीचे लाल पुष्प के समान बारह पंखुड़ियों से युक्त कमल के आकार का अनाहत चक्र है जो कि अपने आप में महत्वपूर्ण है, मणिपुर चक्र जाग्रत होने के बाद उसका अनाहत चक्र स्वयं जाग्रत होने लगता है, इसके जाग्रत होने से व्यक्ति योगी की अवस्था प्राप्त कर लेता है और परकाया प्रवेश से सिद्धि एवं योग्यता प्राप्त कर लेता है।

5. विशुद्ध – पंचम चक्र

इसका स्थान कण्ठ के नीचे धुएं के आकार का सोलह पंखुड़ियों वाला कमल के समान है जिसका रंग लाल है, धीरे-धीरे प्रयत्न करने पर यह चक्र जाग्रत हो जाता है, इसके जाग्रत होने से व्यक्ति सभी रोगों से मुक्त हो कर इच्छा मृत्यु धारण करने वाला हो जाता है और वह सही अर्थों में त्रिकालदर्शी बन जाता है।

6. आज्ञा – षष्ठ चक्र

दोनों भौहों के बीच में चन्द्रमा के समान सफेद वर्ण का आज्ञा चक्र है, जिसकी दो पंखुड़ियां होती है, यह चक्र जब जाग्रत होता है तो व्यक्ति पूर्ण रूप से परमहंस की अवस्था प्राप्त कर लेता है और वह सिद्धाश्रम में प्रवेश करने की स्थिति प्राप्त कर लेता है।

7. सहस्रार – परम चक्र

आज्ञा चक्र के ऊपर सिर के मध्य में मधु मक्खियों के छत्ते के आकार का यह सहस्रार चक्र होता है जो एक हजार कमल की पंखुड़ियों से युक्त होता है, जब साधक आज्ञा चक्र के बाद सहस्रार चक्र जाग्रत कर लेता है, तो सहस्रार से अमृत टपकने लगता है और वह सारे शरीर को भिगो देता है, जिससे व्यक्ति मृत्यु से परे अमर हो कर अनन्त काल तक सिद्धाश्रम में आनन्द युक्त रहता है।

वास्तव में ही कुण्डलिनी अपने आप में एक महाशक्ति है, जिसको जाग्रत करने से ही जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता और सफलता प्राप्त होती है।

साधक को चाहिए कि वह योग गुरु के निर्देशन में नेति, धोती, वस्ती आदि क्रियाओं से देह शुद्धि करे प्राणायाम सम्पन्न करें, भस्त्रिका के द्वारा शरीर के चक्रों को चैतन्य करने की क्रिया करनी चाहिए, ऐसा करने पर कुछ ही समय में साधक को विविध प्रकार के अनुभव होने लगते है, और वह कुण्डलिनी जाग्रत करने में समर्थ हो पाता है।

कुण्डलिनी शक्ति जागरण साधना

गुरु की अन्यतम कृपा हो जाय, तो वे साधक को कुण्डलिनी जागरण की साधना प्रदान करते हैं। कुण्डलिनी जागरण का अर्थ है – साधक या शिष्य शनैः शनैः लक्ष्य की पूर्णता की ओर अग्रसर हो जाता है और उस परम तत्व से साक्षात्कार कर लेता है।

साधना विधान

यह साधना प्रातःकालीन है, साधक को चाहिए कि वह ब्रह्म मुहूर्त में स्नानादि कर, श्वेत वस्त्र धारण कर यह साधना आरंभ करें। इस साधना को 16.8.2018 से या किसी भी गुरुवार से आरंभ करें। यह ग्यारह दिन की साधना है। साधना से पूर्व साधक कुछ देर तक प्राणायाम का अभ्यास करें। लकड़ी के बाजोट पर लाल रंग का वस्त्र बिछाएं, उस पर छः पुष्प एक लाइन में रखें, चौथे पुष्प पर 'कुण्डलिनी यंत्र' का स्थापन करे। यंत्र पर कुंकुम, अक्षत तथा पुष्प चढ़ायें। घी का दीपक प्रज्वलित करें।

गुरुदेव का ध्यान करें –

आदोवदानं परमं सदेहं
प्राण प्रमेयम् परसंप्रभूतं
पुरुषोत्मां पूर्ण मदैव रूपं
निखिलेश्वरोयं प्रणामं नमामि।
गुरु चित्र के समक्ष पुष्प चढ़ाये।

फिर मूंगे की माला से निम्न मंत्र का नित्य 21 माला जप 11 दिनों तक करें –

मंत्र

।। ॐ ह्रीं कुल कुण्डलिन्यै फट् ।।

मंत्र जप समाप्त होने के पश्चात् माला को यंत्र के ऊपर रख दें। ग्यारह दिन भी इसी प्रकार मंत्र जप करें। साधना समाप्त होने पर माला को धारण कर लें तथा सवा महीने तक प्रातः काल प्राणायाम करने के उपरांत यंत्र को देखते हुए नित्य 3 माला उपरोक्त मंत्र का जप करे। सवा महीने बाद यंत्र तथा माला को पवित्र जल में ही प्रवाहित करें।

इस मंत्र जप काल में प्रायः ऐसा देखा जाता है कि साधक का ध्यान स्वतः एकाग्र होने लगता है और कोई विम्ब या दृश्य स्पष्ट होने लगे तो यह प्रारंभिक सफलता का सूचक है। इस मंत्र जप को नियमपूर्वक करने से कुछ दिनों में भावी घटनाएं स्पष्ट होने लगती हैं।

कुण्डलिनी जागरण की साधना से साधक के आत्मविश्वास में वृद्धि होने लगती है उसके चेहरे का तेज बढ़ जाता है। साधक को अपनी बाधाओं का समाधान प्राप्त होने लगता है तथा वाणी में प्रभाव तथा वशीकरण की शक्ति प्राप्त होती है।

साधना सामग्री – 450/

शास्त्रों में बताया गया है कि हमारा शरीर मात्र एक ही नहीं है, अपितु इसके अलावा कई शरीर इस शरीर के अन्दर समाहित है, एक शरीर के भीतर दूसरा शरीर, दूसरे के भीतर तीसरा शरीर है और जब तक इन सभी शरीरों की सीमाओं को हम पार नहीं कर लेते, तब तक ब्रह्माण्ड को स्पर्श नहीं किया जा सकता, अपने अन्दर ब्रह्माण्ड की स्थापना नहीं की जा सकती। जब अन्दर ब्रह्माण्ड की स्थापना हो जाती है, तब फिर बाहर देखने की कोई जरूरत ही नहीं होती। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को ब्रह्माण्ड को दिखा कर इसी बात को सिद्ध किया था, कि ये सात शरीरों की सीमा से परे हैं और उनके अन्दर पूरा ब्रह्माण्ड व्याप्त है।

एक अद्भुत और तेजस्वी लेख आपके लिए......

सात शरीर.....

यह समस्त अंतरिक्ष अत्यंत विस्तारित है . . .इसका कोई ओर-छोर नहीं. . .अनन्त-अनन्त ब्रह्माण्डों से निर्मित हुआ है यह अत: इसकी सीमा अपार है . . .इसीलिए ऋषियों ने इसे महाशून्य की संज्ञा से विभूषित किया है . . .अनगिनत रहस्य छुपे हुए हैं इसमें . . .

और इन विभिन्न रहस्यों में से सबसे अधिक रहस्यमय है मानव शरीर। स्वयं कृष्ण ने गीता में कहा है-

इहैकस्थं जगत्कृतस्नं पश्याद्य सचराचरम।
मम देहे गुडोश यधान्यद्रष्टुमिच्छिसि।।

जैसे यह ब्रह्माण्ड बाहर है, वैसे ही पूर्ण सौन्दर्य के साथ पूरी तरह से शरीर में भी स्थापित है . . . सब कुछ !

और ऐसा नहीं, कि यह वक्तव्य केवल कृष्ण ने ही दिया हो, ऐसा नहीं कि केवल कृष्ण ने ही ऐसी बात कही हो, क्योंकि ठीक इसी बात की ओर जीसस भी इंगित करते हैं, जब वे कहते हैं-

"The kingdom of God is within you".

इसलिए वास्तविक रूप में जो कुछ भी बाहर दृष्टिगोचर होता है, वही हमारे शरीर में भी स्थापित है और अगर ब्रह्माण्ड अनन्त है, तो हमारा शरीर की सीमाएं भी अनन्त हैं . . .

परंतु आजकल लोग अत्यधिक 'धार्मिक' (धर्म संकीर्ण) हो गए हैं, और धर्म से उनका सहज-मतलब होता है 'सम्प्रदाय' जैसे हिन्दू, मुस्लिम, जैन क्रिश्चियन. . .और ये जो सम्प्रदाय हैं, केवल बाहरी धार्मिक लोगों के हैं, आप जितने भी ऐसे धार्मिक लोगों को देखेंगे, उनकी आत्मा मरी हुई है, वह गहरी मूर्च्छा में हैं, वह अचेतन पड़ी हुई है . . .

तभी तो उनके लिए हिंसा, लूटमार, दंगे एक सहज कार्य हैं . . .पर वास्तव में धर्म का अर्थ होता है खुद को जानना, स्वयं के स्वभाव से अवगत होना, अपने असली स्वभाव में जीना, क्योंकि आप जब तक स्वयं को नहीं जानेंगे, तब तक कृष्ण, महावीर, बुद्ध, क्राइस्ट को जानने से भी क्या हो जाएगा? और ये नाम उन गिने-चुने लोगों के हैं, जिन्होंने दूसरे को जानने की अपेक्षा स्वयं को ही जाना था, जो अपने वास्तविक स्वभाव को जान सके थे, उसमें स्थिर हो सके थे. . .

और यह स्थिरता तभी पाई जा सकती है, जब व्यक्ति केवल बाहर न भटक कर अपने अन्दर उतरने की क्रिया करता है, अपनी ही खोज करने की दिशा में अग्रसर होता है, क्योंकि जो यह भौतिक शरीर है, इसके अन्दर सात शरीर और हैं, जिन्हें हमने पहले कभी अनुभव नहीं किया और जिनका अनुभव ही स्वयं को जान लेने की प्रक्रिया है . . .

और ठीक ऐसे ही सात शरीर हमारी देह के बाहर भी हैं, और इन दोनों में अंतर यह है, कि जहाँ देह के अन्दर वाले शरीर आध्यात्मिक यात्रा के परिसूचक हैं, वहीं बाह्य सात शरीर भौतिक यात्रा की सीढ़ियां हैं।

आज के युग में मानव के बाह्य शरीर ही अधिक जाग्रत रहते हैं, क्योंकि जन्म से लेकर मृत्यु तक उसकी सारी खोज बाहर की ही हैं, बाह्य है . . . .

फिर भी चाहे वह कितनी ही कोशिश कर ले, उसके ये शरीर भी पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाते और इसलिए वह जीवन से चाहे कितना ही प्राप्त कर ले, उसकी लिप्सा कभी समाप्त नहीं होती, उसकी दौड़ कभी खत्म नहीं होती। उसे और अधिक धन चाहिए, और बड़ा पद चाहिए और अधिक प्रतिष्ठा चाहिए तथा ऐसे ही वह अपना सारा जीवन एक मृगतृष्णा में बिता देता है।

पर यह उसकी सबसे बड़ी बेवकूफी होती है, क्योंकि वह हवा में महल खड़ा करना चाहता है, क्योंकि वह एक-एक पत्ते को पानी देकर वृक्ष को छायादार करना चाहता है।

जब कोई इमारत बनती है, तो पहले नींव खोद कर

मनुष्य का शरीर सात शरीरों से बना है

भौतिक शरीर, आकाश शरीर, सूक्ष्म शरीर, मनस शरीर, आत्म शरीर, ब्रह्म शरीर, निर्वाण शरीर,

व्यक्ति बाहर की दौड़ में ही लगा हुआ है. . .जो भी काम करता है, बाह्य करता है, उसका सारा व्यक्तित्व बाह्य है, ऊपरी है, सारहीन है . . .लेकिन वह हमेशा असंतुष्ट ही रह जाता है, क्योंकि वह नींव को भूल ही जाता है, जड़ों का भूल ही जाता है . . .

उनकी बुनियाद तैयार की जाती है और जितनी गहरी और मजबूत नींव होती है, उतनी ही मजबूत इमारत बनती है . . .अर्थात् धरती के अन्दर जितनी गहरी और मजबूत नींव होगी, उतनी ही मजबूत इमारत धरती के बाहर होगी।

इसी तरह व्यक्ति को छायादार वृक्ष प्राप्त करने के लिए पत्ते-पत्ते में पानी देने की आवश्यकता नहीं है। इसकी अपेक्षा अगर जड़ों में ही पानी दे दिया जाय, तो वृक्ष स्वत: ही घना और छायादार हो जाएगा, उसकी जड़ें जितनी ही स्वस्थ एवं गहरी होंगी, उतनी ही ऊंचाई वह वृक्ष प्राप्त करेगा। ठीक इसी प्रकार व्यक्ति बाहर की दौड़ में ही लगा हुआ है. . .जो भी काम करता है, बाह्य करता है, उसका सारा व्यक्तित्व बाह्य है, ऊपरी है, सारहीन है . . इसलिये वह हमेशा असंतुष्ट ही रह जाता है, क्योंकि वह नींव को भूल ही जाता है, जड़ों को भूल ही जाता है।

मूर्खता में वह यह भूल जाता है, कि बाहर जो कुछ भी है, मात्र अंदर का प्रतिबिम्ब है। यदि वह अपने आंतरिक शरीरों को ही जाग्रत कर लें, पोषण दे, तो फिर अनेक प्रतिबिम्ब जो बाहर दिखाई देते हैं, स्वत: ही सुदृढ़ हो जायेंगे. . .

पर ये सात शरीर कौन से हैं और इन्हें किस प्रकार से जाग्रत किया जा सकता है?

वे सात शरीर और उनके रंग निम्न हैं -

भौतिक शरीर	-	(Physical body) Violet colour
आकाश शरीर	-	(Etheric body) Blue colour
सूक्ष्म शरीर	-	(Astral body) Yellow colour
मनस शरीर	-	(Mental body) Organge colour
आत्म शरीर	-	(Spiritual body) White colour
ब्रह्म शरीर	-	(Cosmic body) Silvery colour
निर्वाण शरीर	-	(Absolute body) Golden colour

तो यह जो देह है, यह ठीक मध्य में है और इसके अन्दर सात सूक्ष्म शरीर हैं, जो कि ऊपर उल्लेख किए जा चुके हैं और ठीक इस शरीर के बाहर भी आभा मण्डल की सात परतें हैं, जिनके रंग ऊपर बताए जा चुके हैं . . .

तो जो व्यक्ति भौतिकता में ज्यादा लिप्त है, या यों कहें, कि जा व्यक्ति भौतिक शरीर (physical body) में है, उसका आभामण्डल बैंगनी रंग लिए होगा . . .अगर व्यक्ति मनस शरीर (mental body) में है, तो उसका रंग नारंगी होगा आदि।

व्यक्ति यदि चाहे तो इच्छानुसार अपने आंतरिक शरीरों को जाग्रत कर सकता है और ऐसा करने से स्वत: ही उसका आभामण्डल पूर्ण विकसित हो जाएगा, उसे आध्यात्मिक उत्थान के साथ-साथ सांसारिक ऊंचाइयां भी प्राप्त हो सकेंगी. . .और यह सब संभव है कुण्डलिनी जागरण साधना से. . .

इस साधना से एक-एक तह पार करता हुआ व्यक्ति अपने आंतरिक शरीर में उतर सकता है, यह कोई बड़ी बात नहीं है और जैसे-जैसे वह अंदर उतरेगा, वैसे-वैसे वह -अवेयर' होता जाएगा, अपने वास्तविक स्वरूप को पहिचान लेगा और आध्यात्म की सबसे बड़ी घटनाएं ध्यान एवं समाधि के रूप में स्वत: घट जाएंगी। जब आंतरिक शरीर विकसित एवं पुष्ट होंगे, तो स्वत: ही आभामण्डल भी पूर्ण विकसित हो जाएगा। फिर व्यक्ति के अंदर अपूर्व सम्मोहन की स्थिति हो जाएगी, बुद्ध के समान ही उसकी वाणी अत्यंत मधुर हो जाएगी और सारे शरीर से एक अपूर्व गंध नि:सृत होने लगेगी, उसका सारा शरीर, निरोग, दर्शनीय बन जाएगा, लोग उसके पास आने के लिए, उससे बात करने के लिए लालायित होंगे और हमेशा उसके इर्द-गिर्द मंडराने लगेंगे, उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व अनिवर्चनीय बन जाएगा।

ऐसे व्यक्ति को यश, सम्मान, धन, ऐश्वर्य सहज ही प्राप्त हो जाएगा। सांसारिक पराकाष्ठा प्राप्त होने पर भी वह उसमें अलिप्त रहता है, भोगों को भोगता हुआ भी अछूता रहता है और सबसे बड़ी बात यह है, कि पहली बार संतुष्टि प्राप्त करता है, पहली बार असीम आनन्द का अनुभव करता है।

और केवल तब ही व्यक्ति सही अर्थों में मनुष्य बन पाता है, सही अर्थों में मानव कहला पाता है।

मनुष्य हमेशा अपने अभावों एवं दु:खों के लिए भगवान से शिकायत करता रहता है क्या आपने कभी सोचा कि भगवान को भी आपसे शिकायत हो सकती है।

भगवान की शिकायत

मेरे प्रिय,

सुबह तुम जैसे ही सो कर उठे, मैं तुम्हारे बिस्तर के पास ही खड़ा था। मुझे लगा कि तुम सबसे पहले मुझे याद करोगे, मुझसे कुछ बातें करोगे। तुम कल या पिछले हफ्ते तुम्हारे जीवन में हुई किसी सुखद बात या घटना के लिये मुझे धन्यवाद कहोगे। लेकिन तुमने सबसे पहले चाय के लिए आवाज लगाई और फटाफट चाय पी कर तैयार होने चले गए और मेरी तरफ देखा भी नहीं। फिर मैंने सोचा कि तुम शायद नहा के मुझे याद करोगे। पर तुम उसके बाद इस उधेड़बुन में लग गये कि तुम्हें आज कौन से कपड़े पहनने हैं – किसमें मैं सुन्दर एवं आकर्षक दिखूँगा। फिर जब तुम नाश्ता कर रहे थे और अपने ऑफिस के कागज इक्कठे करने के लिये घर में इधर से उधर दौड़ रहे थे, तो भी मुझे लगा कि शायद अब तुम्हें मेरा ध्यान आयेगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। फिर जब तुमने ऑफिस जाने के लिए ट्रेन पकड़ी तो मैं समझा कि इस खाली समय का उपयोग तुम मुझसे बातचीत करने में करोगे पर तुमने थोड़ी देर पेपर पढ़ा और फिर खेलने लग गए अपने मोबाइल से और चैटिंग करने लगे अपने दोस्तों के साथ और मैं खड़ा का खड़ा ही रह गया। मैं तुम्हें बताना चाहता था कि दिन का कुछ हिस्सा मेरे साथ बिता कर तो देखो, तुम्हारे काम और भी अच्छी तरह से होने लगेंगे, तुम और भी आनंद और प्रसन्नता अनुभव करने लगोगे लेकिन तुमने मुझसे बात ही नहीं की।

ऑफिस में एक मौका ऐसा भी आया जब तुम बिल्कुल खाली थे लेकिन उस समय में भी तुम सिर्फ दूसरों के विरुद्ध द्वेष पूर्ण बातें ही सोचते रहे और कुर्सी पर पूरे 15 मिनट यूँ ही बैठे रहे, लेकिन तब भी तुम्हें मेरा ख्याल नहीं आया। दोपहर के खाने के वक्त जब तुम इधर-उधर देख रहे थे, तो भी मुझे लगा कि खाना खाने से पहले तुम एक पल के लिये मुझे अवश्य याद करोगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। दिन का अब भी काफी समय बचा था। मुझे लगा कि शायद इस बचे समय में हमारी बात हो जायेगी, शायद वापस लौटते वक्त ही सही ट्रेन में तुम मुझे याद करोगे लेकिन तुम सुबह वाले रूटीन में ही व्यस्त रहे, और घर पहुँचने के बाद तुम फिर रोजमर्रा के कामों में व्यस्त हो गये। जब वे सब काम निबट गये तो तुमने टीवी खोल लिया और सीरियल देखने में व्यस्त हो गये और घंटों टीवी देखते रहे। देर रात थककर तुम बिस्तर पर आ लेटे। मैंने तब तक आस नहीं छोड़ी थी और सोच रहा था कि किसी न किसी बहाने तो तुम मुझे याद करोगे लेकिन शायद ये मेरी भूल थी, और तुमने अपनी पत्नी, बच्चों को शुभरात्रि कहा और चुपचाप चादर ओढ़कर सो गये।

मेरा बड़ा मन था कि मैं भी तुम्हारी दिनचर्या का हिस्सा बनूँ, तुम्हारे साथ कुछ वक्त बिताऊँ, तुम्हारी कुछ सुनूँ, तुम्हें कुछ सुनाऊँ। कुछ मार्गदर्शन करूँ तुम्हारा, ताकि तुम्हें समझ आए कि तुम्हारा जन्म क्यों हुआ है? तुम किसलिए इस धरती पर आए हो? और किन कामों में उलझ गए हो, इन कार्यों को करना सिर्फ तुम्हारी ड्यूटी है न कि जीवन का लक्ष्य। लेकिन तुम्हें समय ही नहीं मिला और मैं मन मार कर ही रह गया। मैं तुमसे बहुत प्रेम करता हूँ। हर रोज मैं इस बात का इंतजार करता हूँ कि तुम मेरा ध्यान करोगे और अपनी छोटी-छोटी खुशियों के लिए मेरा धन्यवाद करोगे और मैं तुम्हें इस दुर्लभ जीवन का सही अर्थ समझा सकूँगा। पर तुम सिर्फ तब ही मेरे पास आते हो तब ही मुझे याद करते हो जब तुम्हें कुछ चाहिए होता है या परेशानियां से घिरे होते हो परंतु उस वक्त भी तुम जल्दी में होते हो और अपनी माँगें मेरे आगे रख के चले जाते हो और साथ ही व्यापारियों की तरह मोलभाव भी करते हो कि मेरा यह काम कर दो मैं इतने रुपयों का प्रसाद चढ़ाऊँगा या आपको वस्त्र या सोने-चाँदी का मुकुट चढ़ाऊँगा आदि-आदि और ऐसा कहकर एडवांस में कुछ रुपये मेरे चरणों में डालकर चले जाते हो। तुमने कभी सोचा

कि यह संसार जो मैंने बनाया है इसमें सब कुछ मेरा ही बनाया हुआ है उसमें से चंद कागज के छपे नोट एवं कुछ मिठाईयों का लालच देकर तुम मुझसे कार्य करवाना चाहते हो वाह! क्या लेन-देन की भाषा है तुम्हारी, क्या गणित है, मेरे पास आकर भी तुम्हारी बुद्धि गणित ही करती रहती है क्या तुम्हें पता नहीं कि यह सब यहीं पर छूट जाने वाला है और जो तुम मुझे भेंट करना चाहते हो चांदी के चंद टुकड़े या फल, मिठाईयां आदि कभी सोचा है, वो सब मेरा ही है मेरी इच्छा के बिना इनका उद्भव संभव नहीं, परंतु इन सबके मालिक तुम हो ऐसा सोचकर सिर्फ एक घमण्ड में जी रहे हो, यह सिर्फ तुम्हारा भ्रम है यदि यह सब कुछ तुम्हारा होता तो तुम साथ ले जा सकते लेकिन क्या कभी ऐसा हो सका है? इस पर गंभीरता से चिंतन करो और सोचों कि तुम मुझे क्या दे सकते हो?

तुम्हारा सिर्फ मैं हूँ और तुम मेरे ही अंश हो आत्मा के रूप में, तब तुम मुझे क्या दे सकते हो मुझे तो सिर्फ विकार रहित पवित्र हृदय से तुम्हारा प्यार, तुम्हार विश्वास, तुम्हारा भाव एवं मुझे याद करके तुम्हारी निर्मल आँखों से निकले, आँसू ही चाहिए बाकी धन-दौलत से तो तुम मेरे स्वरूप में उन गरीब असहाय लोगों की एवं मेरी बनाई इस सृष्टि में अन्य जीवों की सेवा सहायता करो जिनमें भी मैं ही बसता हूँ तो मैं स्वत: ही प्रसन्न हो जाऊँगा जब तुम ऐसा कर सकोगे, जब सभी में मेरा ही प्रतिबिम्ब देखने लग जाओगे तब तुम्हारे प्रत्येक कार्य की सफलता में मैं स्वयं खड़ा मिलूँगा तब मैं तुम्हें भटकने नहीं दूँगा, तब तुम्हें थकान नहीं होगी, मन में द्वेष नहीं होगा, सभी से अपनत्व होगा, छोटे बड़े का भेद नहीं होगा, स्वयं में कोई अहंकार नहीं होगा, काल तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकेगा और तब सही रूप में जीवन के लक्ष्य को समझ सकोगे अन्यथा एक नर के रूप में सिर्फ परिवार वृद्धि करके, कुछ धन इकट्ठा करके काल के ग्रास बन जाओगे और जिनके लिए आज तुम परेशान हो व्यथित हो उनमें से कोई भी तुम्हारा साथ नहीं देगा चंद कदम साथ चलकर फिर वापस अपने आपमें व्यस्त हो जाएगा। अभी भी समय है संभलने का।

बस तुम्हें मेरे पास आने के लिए कुछ ही कदम बढ़ाने हैं। तुम मेरी ओर दो कदम बढ़ा कर तो देखो, मुझे अपनी दिन-प्रतिदिन की दिनचर्या में शामिल करके तो देखो मैं आगे का तुम्हारा सफर आसान बना दूँगा। आखिर सिर्फ मैं ही तो तुम्हारा अपना हूँ।

तुम इस चकाचौंध भरी नश्वर दुनिया में फंसकर मुझसे सिर्फ कुछ क्षण के लिए दूर हो गये हो। जहाँ तुम्हें सुख तो मिल सकता है लेकिन आनंद नहीं। सुख सिर्फ कुछ मिनटों का अहसास है जबकि आनंद शाश्वत है और तुम्हारे अंदर ही है और जो शाश्वत है वहीं मैं हूँ क्योंकि मैं शाश्वत हूँ बाकी सब नश्वर है और तुम नश्वर चीजों में शाश्वत की आस लगाये उसे तलाश रहे हो जो कि असंभव है, इसी आस में कितनों ने जीवन का पूरा समय नष्ट कर दिया और दुनिया की चकाचौंध भरी जिन्दगी में लिप्त होकर उसके शोर में मेरी आवाज को सुनने का कभी प्रयास नहीं किया। न जाने कितने मनुष्य स्वार्थ पूर्ण रिश्तों के मोह जाल में फंसे हुये अपने लक्ष्य से भटक कर आखिर में काल का ग्रास बन गये क्योंकि सभी रिश्ते कहीं न कहीं स्वार्थ की डोरी में बंधे हैं परंतु मेरा तुम्हारा रिश्ता स्वार्थ पर नहीं पवित्र आत्मिक प्रेम पर आधारित है।

तुम मुझसे बात करके तो देखों, मैं तो आज भी हर पल तुम्हारा इंतजार करता हूँ इस अहसास के साथ कि हो सकता है कि कल तुम्हें मेरी याद आ जाएं, मुझे तो तुम पर पूरी आस्था एवं विश्वास है क्योंकि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ क्योंकि तुम मेरे हो तुम्हें मैंने अपने खून से सींचा है और मैं तुमसे कहीं दूर नहीं स्वयं तुम्हारे भीतर ही हूँ तुम्हारे पास, तुम्हारे सबसे निकट।

क्योंकि तुम मेरा ही अंश हो।

■ राजेश गुप्ता 'निखिल'

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

जुलाई 2018

11. केसर का तिलक लगाकर कार्य पर जाएं।
12. आज पीपल के वृक्ष में जल अर्पित करें।
13. आज से गुप्त नवरात्रि प्रारंभ है माँ दुर्गा के मंदिर में दीपक लगाएं।
14. आज पूजन के बाद 21 बार निम्न मंत्र का उच्चारण करें- मंत्र - ।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।।
15. जल में पीले पुष्प डालकर भगवान सूर्य को जल अर्पित करें।
16. शिव मंदिर में दूध से बने प्रसाद का भोग लगाकर बाँट दें।
17. आज हनुमान चालीसा का एक पाठ करके जाएं।
18. आज सूर्य साधना करें। (जून पत्रिका में प्रकाशित)
19. बाहर जाने से पूर्व निम्न मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करें- मंत्र - ।।ॐ गं गणपतये नमः।।
20. आज अष्टमी है निम्न मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करें - मंत्र - ।।ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।।
21. सद्गुरुदेव जन्म दिवस पर प्रातः पूजन के बाद गुरु पादुका पूजन सी.डी. का श्रवण करें।
22. आज निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप अवश्य करें - मंत्र - ।।ॐ ह्रीं मम प्राण देह रोम प्रतिरोम चैतन्य जाग्रय ह्रीं ॐ नमः।।
23. प्रातः जाने के पूर्व निम्न मंत्र का ग्यारह बार जप करें - मंत्र- ।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।।
24. बाहर जाने से पूर्व निम्न दोहे का तीन बार उच्चारण करें- दोहा - जय जय जय हनुमान गोसाईं।
कृपा करहुं गरूदेव की नाईं।।
25. तीन गोमती चक्र (न्यौछावर 60/-) स्थापित करके संक्षिप्त पूजन करें एवं 108 बार लक्ष्मी मंत्र का जप करें- मंत्र - ।।ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।।
26. आज आप गुरु गुटिका (न्यौछावर 120/-) धारण करें सफलता मिलेगी।
27. आज गुरुपूर्णिमा है संभव हो तो गुरु पूर्णिमा शिविर लखनऊ में उपस्थित हो अन्यथा पत्रिका में दिया पूजन सम्पन्न करें।
28. आज बाहर जाने के पूर्व ॐ नमः शिवाय का 11 बार उच्चारण करें।
29. आज पूजन के बाद ग्यारह बार गायत्री मंत्र का जप करें।
30. प्रातःकाल सबसे पहले अपनी दोनों हथेलियों को देखकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें -
कराग्रे बसते लक्ष्मी कर मध्ये सरस्वती।
कर मूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम्।।
31. आज दुर्गा मंदिर में तेल का एक दीपक जलायें और अपनी कोई मनोकामना व्यक्त करें।

अगस्त 2018

1. आज प्रत्येक कार्य के पूर्व अपने इष्ट मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करें - सफलता मिलेगी।
2. महालक्ष्मी मंत्र - ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः का 21 बार उच्चारण करके जाएं।
3. आज दुर्गा मंत्र का जप करने के बाद अन्न दान करें।
4. आज सरसों का तेल दान करें।
5. आज आप सद्गुरुदेव की आवाज में प्रातःकालीन उच्चरित वेदध्वनि सी.डी. का श्रवण करें।
6. आज पक्षियों को दाना डालें।
7. हनुमान मंदिर में बेसन के लड्डूओं का भोग लगाकर बच्चों में बाँटे।
8. आज पूजन में महालक्ष्मी की आरती करें।
9. आज ॐ नमो नारायणाय का 21 बार जप करके जाएं।
10. आज "क्लीं" बीज का 11 बार उच्चारण करके जाएं।

सुदर्शन चक्र साधना

जीवन एक संघर्ष है – ये शब्द हैं ख्याति प्राप्त ब्रिटिश विचारक बर्टेड रसेल के, और वे एक हद तक सही भी हैं, क्योंकि मानव जीवन तो खासकर से एक संघर्ष तक सीमित हो गया है।

'Survival of the fittest', डार्विन जैसे वैज्ञानिक ने इसी तथ्य की पुष्टि करते हुए कहा है, कि वही जीवित रह सकता है, जिसमें परिस्थितियों से जूझने की क्षमता है अन्यथा उसका अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा।

इसी तरह के विचार पूर्व काल में भी प्रचलित थे – विश्वामित्र, दुर्वासा, परशुराम, कौटिल्य जैसे शक्ति के उपासक जहाँ इस बात को अपने ढंग से प्रस्तुत करते रहे, वही महावीर, बुद्ध, लाओत्से जैसी विभूतियों ने भी अपने अहिंसक विचारों में इसी बात को समाज के सामने रखा। फिर भी दोनों ही मतों में काफी भेद दिखता है, दोनों ही मतों में अतिवाद झलकता है – क्योंकि एक पूर्ण हिंसक ढंग से अपने अस्तित्व को बचा रहा है, तो दूसरा पूरी तरह से अहिंसा में उतर गया है . . .

- तो फिर मध्य का मार्ग क्या है?
- क्या व्यक्ति को इन दो परस्पर भिन्न मतों के बीच ही झूलते हुए अपने अस्तित्व की रक्षा करनी होगी?
  क्या इसके अलावा और कोई उपाय नहीं?
- क्या मानव की यही नियति है?

यही बात कृष्ण ने स्पष्ट की थी, कि संतुलन होना चाहिए, अति हमेशा ही दु:खकारक ही होता है। व्यक्ति हमेशा एक अति से दूसरी अति पर गतिशील होता रहता है और झूले की भांति एक अति से दूसरे अति के बीच झूलता रहता है।

कृष्ण को अपने समय में जितनी परेशानियां, वेदनाएं, पीड़ा एवं
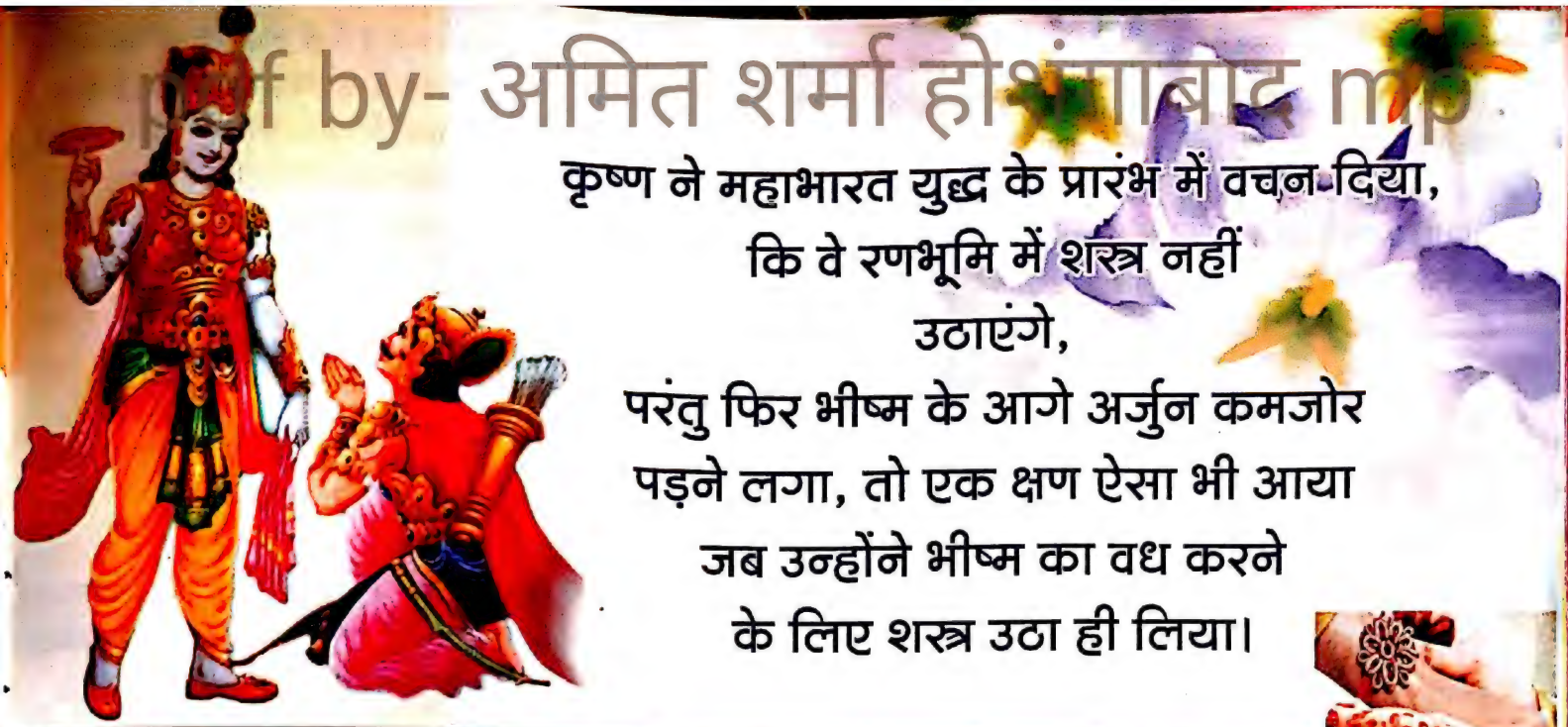
जीवन भर आपकी तथा पूरे परिवार की सुदर्शन चक्र अज्ञात रूप से रक्षा करता रहेगा और यह प्रयोग भगवान कृष्ण ने भी सम्पन्न किया था।

कृष्ण ने महाभारत युद्ध के प्रारंभ में वचन दिया, कि वे रणभूमि में शस्त्र नहीं उठाएंगे, परंतु फिर भीष्म के आगे अर्जुन कमजोर पड़ने लगा, तो एक क्षण ऐसा भी आया जब उन्होंने भीष्म का वध करने के लिए शस्त्र उठा ही लिया।

यदि व्यक्ति सुदर्शन चक्र साधना सम्पन्न कर लेता है, तो ये समस्याएं ऐसे समाप्त हो जाती हैं, जैसे अंगारों के मध्य गिरी पानी की एक बूंद। उसके चारों ओर एक शक्तिशाली सुरक्षा चक्र निर्मित हो जाता है, जिससे कोई भी रोग, शत्रु, तंत्र, मंत्र, मूठ, अकाल मृत्यु, दुर्घटना आदि उसका बाल भी बांका नहीं कर सकते। दुर्घटना और अकाल मृत्यु योग भी निष्प्रभावी से हो जाते हैं।

बाधाएं मिलीं, उतनी तो शायद ही किसी युग पुरुष को मिली हों। उनके जीवन का एक-एक क्षण चुनौतीपूर्ण होता था, परंतु फिर भी उन्होंने न कभी हिंसा को अपनाया और न ही अहिंसक होने का दंभ भरा।

हिंसा हमेशा दूसरे पर केन्द्रित रहती है, अपने स्वार्थ के लिए दूसरे का विनाश करना हिंसा का अर्थ है।

वहीं अहिंसा अपने आपको पूर्ण रूप से समेट लेने की क्रिया है, क्योंकि जब कोई स्वयं अनुपस्थित सा हो जाता है, तो कौन से शत्रु और कौन सी बाधाएं उसे छू सकती हैं। इस प्रकार अहिंसा दूसरे पर केन्द्रित न होकर स्व पर ही केन्द्रित होती है, जो कि पहली विधि से श्रेष्ठ है।

परंतु कृष्ण जैसे व्यक्तित्व ने इन दोनों ही धारणाओं को अछूता छोड़ दिया, उन्होंने कभी कोई धारणा नहीं बनाई और यही कारण था, कि वे बालक की तरह निश्चिंत, पवित्र एवं सरल थे। यही कारण था, कि वे मध्य में स्थित रहते थे और कभी भी अतियों में नहीं डोलते थे। एक उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाएगा – कृष्ण ने महाभारत युद्ध के प्रारंभ में वचन दिया, कि वे रणभूमि में शस्त्र नहीं उठाएंगे, परंतु फिर भीष्म के आगे अर्जुन कमजोर पड़ने लगा, तो एक क्षण ऐसा भी आया जब उन्होंने भीष्म का वध करने के लिए शस्त्र उठा ही लिया।

यह क्या? वे तो परब्रह्म थे, साक्षात् अवतार थे, उन्होंने वचन भी दिया था, तो क्या वे झूठे नहीं हो गए.....

ऐसा आपको लग सकता है, पर वास्तव में जो व्यक्ति बिना किसी एक धारणा को लिए हुए जीता है, वह प्रत्येक क्षण जीता है और क्षण की जैसी मांग होती है, उसी के अनुसार कार्य करता है। समय को देखते हुए जहाँ उन्होंने वचन दिया, वहीं जब ऐसी परिस्थितियां हुईं, की पाण्डव पक्ष भीष्म के आगे कमजोर पड़ने लगा, तो समय की मांग को देखते हुए उन्होंने उतनी ही सरलता से शस्त्र भी उठा लिया और युद्ध के लिए तत्पर हो गए।

आपने बालकों को देखा होगा, एक क्षण वे किसी से लड़ बैठते हैं और कहते हैं, कि जिन्दगी भर बात नहीं करेंगे, पर दूसरे ही क्षण वे सब कुछ भूलकर पुन: उसके साथ बाहों में बांह डालकर पूर्ववत् खेलने लगते हैं। तब आप बच्चों से कभी नहीं पूछते, कि तूने तो कहा वह क्यों नहीं किया, क्या तू झूठ बोलने लग गया है?

ऐसा आप नहीं पूछते, क्योंकि आप जानते हैं, कि बालक पूर्ण निर्दोष होता है, सरल होता

है, वही किन्हीं धारणाओं पर नहीं जीता। उसका जीवन धारणागत नहीं अपितु अस्तित्वगत होता है, उसमें एक निरहंकार की स्थिति रहती है और उसका किया गया हर कार्य प्रामाणिक होता है।

यही स्थिति कृष्ण ने स्पष्ट की, कि जैसा समय हो उसी के अनुसार आचरण करना श्रेष्ठ होता है। दूसरे उन्होंने इस बात को भी स्पष्ट किया, कि अपनी सुरक्षा के लिए हम दूसरे को समाप्त कर सकते हैं या फिर स्वयं को ही समेट सकते हैं पर ये दोनों ही स्थितियां पूर्ण नहीं हैं, क्योंकि हिंसा से तो हिंसा ही भड़कती है। यह हिंसा कभी भी खत्म न होने वाले दुश्चक्र के समान है। दूसरी ओर यदि हम अहिंसा को चुनते हुए अपने आपको समेट लें, तो समाज में रहना ही कठिन हो जाएगा, क्योंकि स्वयं को समेटना एक तरह से अपने आपको समाज से काटना भी है।

तो फिर कृष्ण ने एक मध्य स्थिति की भी चर्चा की, जिसमें अपने चारों ओर एक ऐसा सुरक्षा चक्र रच दिया जाता है, ताकि हमें कुछ करना भी न पड़े और दूसरा कोई हमारा कुछ अहित न कर सके। यदि कोई रोग ग्रस्त है, तो वह दवा इंजेक्शन आदि लेकर ठीक हो सकता है, दूसरा उपाय यह है, कि आप पहले से ही Vaccination करा लें, जिससे रोग होने का कोई प्रश्न ही न हो।

कृष्ण ने Vaccination वाले दूसरे उपाय को ही श्रेष्ठ बताया है, जिसमें रोग होने से पूर्व ही शक्ति का एक सुरक्षा चक्र व्यक्ति के चारों ओर निर्मित हो जाता है। फिर उसमें स्वयं को कुछ करना नहीं पड़ता, अपितु अपने आप ही उसके शत्रु तेजहीन, वीर्यहीन हो जाते हैं और वे उसका या उसके परिवार के किसी सदस्य का बाल भी बांका नहीं कर पाते हैं।

इसी संदर्भ में कृष्ण ने सुदर्शन चक्र साधना निर्मित की और उसे सम्पन्न किया, जिससे फिर वे जीवन भर अजेय रहे। बड़े से बड़ा शत्रु भी उनके सामने टिक नहीं पाता था।

आजकल भी व्यक्ति के जीवन में अनेक बाधाएं, परेशानियां बनी ही रहती हैं, जैसे –

1. शत्रु के द्वारा संताप, जिसमें मान–हानि मिलने के साथ–साथ कई बार उसे अपनी तथा परिवारजनों की जान का खतरा भी हो जाता है।
2. रोग भी शत्रु से कम नहीं होते और शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा होगा, जो रोगों से पूर्णत: मुक्त हो।
3. कई बार जन्म कुण्डली में दुर्घटना योग, अकाल मृत्यु योग होता है, जिसके फलस्वरूप व्यक्ति अपना स्वाभाविक जीवन जी ही नहीं पाता और असामयिक मृत्यु को प्राप्त हो अपने पीछे परिवार को बिलखता छोड़ कर चला जाता है।
4. कई बार ईर्ष्या वश कुछ लोग तंत्र प्रयोग व टोने–टोटके करके व्यक्ति के जीवन को बर्बाद कर देते हैं। वह समझ ही नहीं पाता, कि उसके जीवन में ऐसी विपरीत परिस्थितियां क्यों पैदा हो रहीं हैं, सब कार्य उल्टे क्यों हो जाते हैं?
5. शत्रुओं से तो फिर भी निपटा जा सकता है, परंतु कई बार तो हमारे अपने प्रियजनों में से ही कोई पीठ पर ऐसा वार कर जाता है, जो किसी शत्रु से भी ज्यादा घातक सिद्ध होता है।

ये स्थितियां प्राय: सभी के जीवन में किसी न किसी रूप में आती हैं, परंतु यदि व्यक्ति सुदर्शन चक्र साधना सम्पन्न कर लेता है, तो ये समस्याएं ऐसे समाप्त हो जाती हैं, जैसे अंगारों के मध्य गिरी पानी की एक बूंद। उसके चारों ओर एक शक्तिशाली सुरक्षा चक्र निर्मित हो जाता है, जिससे कोई भी रोग, शत्रु, तंत्र, मंत्र, मूठ, अकाल मृत्यु, दुर्घटना आदि उसका बाल भी बांका नहीं कर सकते। दुर्घटना और अकाल मृत्यु योग भी निष्प्रभावी से हो जाते हैं।

यदि कोई शत्रु ऐसे व्यक्ति का अनिष्ट करने की चेष्टा भी करता है, तो वह शत्रु स्वत: ही समाप्त हो जाता है। इसमें व्यक्ति को खुद कुछ भी नहीं करना पड़ता है।

इस दृष्टि से यह साधना अपूर्व है और जो व्यक्ति अपने जी[illegible] में निर्भयता के साथ मान, प्रतिष्ठा एवं उन्नति चाहते हैं, उन्हें तो [illegible] 'सुदर्शन चक्र साधना' सम्पन्न करनी ही चाहिए।

साधना विधि

यह साधना एक दिवसीय है और चूंकि यह रक्षा से संबं[illegible] प्रयोग है, अत: इसे रक्षा बंधन (26.8.2018) के अवसर पर ही क[illegible]। इस दिन व्यक्ति सवेरे छ: बजे स्वच्छ श्वेत वस्त्र धारण कर सफेद आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठ जाएं। अपने सामने सफेद वस्त्र से ढके एक बाजोट पर अक्षत की एक ढेरी बनाकर 'सुदर्शन चक्र यंत्र' को स्थापित करें। फिर यंत्र को पंचोपचार (चन्दन, पुष्प, अक्षत, दीप, गन्ध) पूजन करें। फिर 'नारायण फल' को स्थापित करें तथा उसका भी संक्षिप्त पूजन करें। यंत्र पर चन्दन से अपने परिवार के सभी सदस्यों के नाम के पहले अक्षर को लिखें (जैसे – रामसिंह नाम है तो आप यंत्र पर 'रा' लिखें) –

इसके पश्चात् ध्यान करें –

नारायण परंब्रह्म तत्वं नारायण: पर:।
नारायण परो ध्याता ध्यानं नारायण: पर:।

फिर 'दिव्य तेजस माला' से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें –

मंत्र

॥ ॐ क्लीं क्रीं ऐं सुरक्षां साधय सुदर्शनाय फट् ॥

Om Kleem Kreem Ayeim Surakshaam Saadhay Sudarshanaay Phat

साधना समाप्त कर अगले दिन यंत्र, फल तथा माला को उसी सफेद वस्त्र में बांधकर जल में विसर्जित कर दें या पीपल के वृक्ष के नीचे चढ़ा दें।

ऐसा करने से साधना सफल होती है एवं व्यक्ति निर्भय होकर गतिशील होता है। उसे व उसके परिवार की ओर शत्रु नजर उठाकर भी नहीं देखते हैं और उसे हर कार्य में सुरक्षा बनी रहती है।

प्रयोग सामग्री – 450/–

पुत्रदा एकादशी - 22.08.2017

संतान लक्ष्मी (ज्येष्ठा लक्ष्मी)

शिशुओं से मुखरित हो आपका आंगन

एक ऐसा उपवन हो जिसमें स्वस्थ और सुंदर हरे भरे पौधे तो हो लेकिन उन पौधे पर कलियां न आयें फूलों की सुगंध न बिखरे तो हरियाली होते हुये भी वह बगीचा अधूरा सा लगता है। ठीक ऐसे ही जिस परिवार में बच्चे न हों वह परिवार भी सूखा-सूखा और निर्जीव हो जाता है। यही है संतान लक्ष्मी का अर्थ, केवल यही नहीं संतान लक्ष्मी तो अपने अंदर सुयोग्य शिशु, निरोग शिशु, स्वस्थ चित्त शिशु जैसी कई बातें समाहित किए है। संतान लक्ष्मी की साधना केवल उन्हीं परिवारों की साधना का विषय नहीं है जो नि:संतान हैं, जिनके परिवार में अबोध शिशु है बल्कि प्रत्येक गृहस्थ को यह साधना करनी एक प्रकार से आवश्यक हो जाती है जिससे कि भावी जीवन में उनका बच्चा प्रसन्न व स्वस्थ चित्त बना रहे और जब तक बालक अपने पांवों पर खड़ा होने योग्य नहीं हो जाता है, तब तक उसके प्रत्येक भौतिक हित के साथ-साथ उसके आध्यात्मिक हित का दायित्व भी उसके माता-पिता पर ही होता है।

यद्यपि मूल रूप से तो यह प्रयोग नि:संतान दम्पतियों को ध्यान में रख कर ही रचा गया है लेकिन कोई भी प्रयोग अपने स्वरूप में एकांगी नहीं होता। इस प्रयोग का गूढ़ रहस्य यह है कि वह वस्तुत: लक्ष्मी नारायण प्रयोग है तथा इस प्रयोग की पूर्णता से जहां एक ओर व्यक्ति के जीवन में पुत्र सुख अथवा संतान सुख संभव होता है वहीं घर के धन-धान्य में भी वृद्धि हो जाती है।

भगवान लक्ष्मी नारायण का प्रकट स्वरूप होते हैं पूज्य गुरुदेव एवं गुरु माता। किसी भी सोमवार की प्रात: पांच बजे तक स्नान कर शुद्ध स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण कर पति-पत्नी दोनों पूर्वाभिमुख होकर एक साथ साधना में प्रवृत्त हों, पत्नी को अपनी दाहिनी ओर स्थान दें, सामने श्रेष्ठ लकड़ी की बनी चौकी पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर जो भी आपके गुरु हों उनका व गुरु माता का चित्र संयुक्त रूप से प्राप्त कर गुरु माता को पूर्ण रूप से भगवती लक्ष्मी मानते हुए एवं अपने गुरुदेव में भगवान श्री नारायण की धारणा रखते हुए दोनों का संयुक्त एवं विधिवत् पूजन करें, उनके श्री चरणों में केसर, सुगंध, गुलाल, कुंकुम, अक्षत, चंदन, श्रेष्ठ सुगंधित पुष्प, घी का दीप, धूप एवं दूध का बना प्रसाद अर्पित करने के उपरांत भावनापूर्वक प्रणाम करें तथा अपने जीवन में संतान सुख के लाभ की कामना व्यक्त करें। चित्र के सामने ही चावलों की ढेरी बना कर उस पर दो लघु नारियल स्थापित करें तथा निम्न मंत्र का जप स्फटिक माला से करें। पति और पत्नी एक ही माला का प्रयोग बारी-बारी से कर सकते हैं लेकिन माला किसी साधन में प्रयुक्त न हुई हो। इस मंत्र की केवल पांच-पांच माला मंत्र जप पति व पत्नी द्वारा करनी है।

मंत्र

॥ ॐ ऐं ह्रौं पुत्र लक्ष्म्यै नमः ॥

मंत्र जप के उपरांत माला व सम्पूर्ण पूजन सामग्री शुद्ध पीले वस्त्र से ढांक दें और घी का दीपक अखण्ड रूप से जलते रहने दें। यह पांच दिनों की साधना है। मंत्र जप के उपरांत पूर्ण विधि विधान से अपने गुरु व गुरु माता का पूजन एवं आरती करें तथा साष्टांग प्रणाम कर स्थान छोड़ें। इन पांच दिनों में पूर्ण सात्विक और ब्रह्मचर्य पूर्वक जीवन व्यतीत करना है। भूमि शयन करें, यथासंभव कम से कम अन्न ग्रहण करें, अत्यधिक आवश्यक होने पर वार्तालाप करें। पांच दिन की साधना के उपरांत पत्नी उस माला को अपने गले में धारण कर लें तथा रात्रि में सोने से पहले उतार दे, दोनों लघु नारियलों को पीले वस्त्र में बांधकर अपने शयन कक्ष के किसी स्वच्छ कोने में स्थापित कर दें। पत्नी यदि चाहे तो आगे भी उपरोक्त मंत्र का जप करती रह सकती है। यह एक अनुभूत प्रयोग है और अल्प समय में ही मनोवांछित परिणाम के संकेत मिलने लग जाते हैं। यह प्रयोग सात बजे के पहले ही पहले पूर्ण कर लें।

साधना सामग्री - 390/-

प्राणायाम और कुण्डलिनी जागरण

गुरु दीक्षा प्राप्त कर आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ने वाले हर योगी, तपस्वी, साधक, साधिका, मांत्रिक और तांत्रिक शिष्य और शिष्याओं का हर पल भरसक प्रयास यही रहता है कि येन-केन प्रकारेण जैसे भी और जितनी जल्दी संभव हो सके कुण्डलिनी जागरण में सफलता प्राप्त कर वे भोग और मोक्ष दोनों में पूर्णता प्राप्त करके अपने सद्गुरु का नाम रोशन करते हुए अपना जीवन सफल और साकार कर सके, अनेक विद्याओं के माध्यम से साधक साधना रत रहते हुए इसमें सफलता प्राप्त करना चाहते है, गुरु कृपा प्राप्त कर शक्तिपात के लिए वह चातक सा निर्निमेष बाट जोहता रहता है।

प्राणायाम और कुण्डलिनी जागरण

कुण्डलिनी जागरण में सहायक अनेक विद्यायें

1. सक्षम गुरु के द्वारा शक्तिपात क्रिया
2. मांत्रिक साधना एवं चेतना मंत्र अनुष्ठान द्वारा
3. तांत्रोक्त क्रिया एवं मंत्र साधना द्वारा
4. लामा प्रणाली से ब्रह्म रंध्र भेदन क्रिया द्वारा
5. आसन, बंध एवं मुद्राओं द्वारा
6. हठयोग पद्धति एवं सूर्य साधना द्वारा
7. ध्यान एवं नाद योग से चक्र भेदन द्वारा
8. नाड़ी शोधन एवं सुषुम्ना ताड़न विधि द्वारा
9. षट कर्म एवं भस्त्रिका अभ्यास द्वारा
10. सतत ''हुं'' हुंकार ध्वनि द्वारा
12. विशिष्ट प्राणायाम प्रक्रिया द्वारा।

ये सभी विद्यायें अपने आपमें पूर्ण एवं प्रामाणिक है, अनुभव गम्य एवं साधकों की सफलता का आधार भूत माध्यम रही है, किसी भी एक या अनेक पद्धतियों का आश्रय ले साधक अपनी सुषुप्त सुषुम्ना को मूलाधार से उठाकर सतत अभ्यास करता हुआ सहस्रार तक सभी चक्रों को जाग्रत कर सफलता प्राप्त कर लेता है, यहां पर हम प्राणायाम के माध्यम से कैसे शीघ्र सफलता प्राप्त कर सकते है, इस विषय पर सूक्ष्म विवेचन के द्वारा प्रकाश डालने का प्रयास कर रहे हैं।

प्राणायाम शब्द और क्रिया का तात्विक विवेचन

प्राणायाम का शाब्दिक और सीधा सादा अर्थ है – प्राण को आयाम देना अर्थात् विश्राम देना, रोकना, एक विशिष्ट पद्धति से प्राण पर नियंत्रण पाने की क्रिया एवं अभ्यास को प्राणायाम कहा गया है, इसके तात्विक विवेचन से पूर्ण पंच प्राण को समझ लेना आवश्यक है, पुन: प्राण को पांच उपविभागों में भी विभाजित किया गुया है।

(1) प्राण, (2) अपान, (3) समान, (4) उदान, (5) ध्यान

1. प्राण – प्राण एक वायवीय शक्ति जो समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त है, श्वास द्वारा ली जाने वाली वायु से उसका घनिष्ठ संबंध है, किन्तु हवा की अपेक्षा अधिक सूक्ष्म है इसीलिए प्राण मूल शक्ति के रूप में वायु तथा समस्त सृष्टि में व्याप्त शरीर में नहीं वरन् कण्ठ नली तथा श्वास पटल के मध्य में स्थित है।
2. अपान – यह नाभि प्रदेश में स्थित होकर बड़ी आंत को बल प्रदान करता है।
3. समान – इसका संबंध छाती एवं नाभि के मध्यवर्ती क्षेत्र से है।

4. उदान – इससे कंठनली के ऊपर के अंगों का नियंत्रण होता है।
5. ध्यान – यह जीवन शक्ति सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त है।

शरीर में प्राण के अतिरिक्त पांच उपप्राण भी बताये गये है, जिनके नाम क्रमशः (1) नाग, (2) कूर्म, (3) किंकर, (4) देवदत्त तथा (5) धनंजय है।

''भौतिक स्तर पर प्राण गति एवं क्रियाओं के रूप में तथा मानसिक स्तर पर विचार के रूप में दिखाई देता है, प्राणायाम वह माध्यम है जिसके द्वारा योगी अपने छोटे से शरीर में समस्त ब्रह्माण्ड के जीवन अनुभव का प्रयास करता है तथा सृष्टि की समस्त शक्तियां प्राप्त कर पूर्णता की प्राप्ति का प्रयत्न करता है।''

कुण्डलिनी जागरण से पूर्व विकारों का क्षय

योग सिद्धि एवं मनु स्मृति में भी प्राणायाम की महिमा का मुक्त कण्ठ से गुणगान किया गया है।

आसन की स्थिरता होने पर श्वास-प्रश्वास की स्वाभाविक गति का नियमन करना रोक कर सम कर देना, प्राणायाम क्रिया की प्रथम आधार भूत सफलता है, दूसरा काल संख्या के आधार पर श्वास प्रश्वासों की स्वाभाविक गतियों को दीर्घ और सूक्ष्म गति से बाह्य वृति (रेचक) आभ्यन्तर वृत्ति (पूरक) और स्तम्भ वृत्ति (कुम्भक) में नियमित करना ये मुख्य तीन भेद है।

मनु के शब्दों में प्राणायाम के लाभ स्पष्ट है–

''जैसे अग्नि से तपाये हुए स्वर्ण, रजत आदि धातुओं के मल जल जाते है, वैसे ही प्राणायाम के अनुष्ठान से इन्द्रियों में आ गये दोष, विकार आदि नष्ट हो जाते है, केवल इन्द्रियों के दोष ही दूर नहीं होते प्रत्युत देह, प्राण, मन के विचार भी दूर होकर उन पर आधिपत्य प्राप्त हो जाता है।''

प्राणायाम के अभ्यास से अंधकार पर पड़ा आवरण दूर हो जाता है, विवेक बुद्धि जाग्रत हो जाती है, मन को जहां तहां अन्दर बाहर किसी भी स्थान विशेष पर ठहराने की शक्ति आ जाती है, इससे प्रत्युहार सिद्धि में भी सहायता मिलती हैं

कुण्डलिनी जागरण में सहायक विशिष्ट प्राणायाम

घेरण्ड संहिता तथा हठयोग प्रदीपिका में इस विशिष्ट प्रक्रिया के लिए कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण प्राणायाम प्रयोग इस प्रकार बताये है।

1. नाड़ी शोधन अथवा नाड़ी शुद्धि प्राणायाम

पद्मासन में बैठकर दाये हाथ के अंगूठे से दबाकर प्राण वायु को धीरे-धीरे मूलाधार तक भर ले, बिना कुम्भक किये ही दायें नथुने से शनै शनै रेचक करें, अर्थात् सांस बाहर निकाल दे, इसी प्रकार नासिका के बायें छिद्र से पूर्ववत प्राण का पूरक करके बिना कुम्भक किये रेचक कर दें, इसी प्रकार नित्य अभ्यास से इनकी संख्या बढ़ाते हुए 60 तक ले जायें।

यह अभ्यास सिद्ध होने पर छोटी बड़ी सभी नाड़ी तथा शिराओं की शुद्धि होकर देह में सर्वत्र रक्त, प्राण, ज्ञान, क्रिया का यथावत संचार होने लगता है, सुषुम्ना मूलाधार से उठकर ऊर्ध्वमुखी हो जाती है, कुण्डलिनी जाग्रत होने का क्रम प्रारंभ हो जाता है, ध्यान की स्थिरता तथा प्राण की सूक्ष्मता और दीर्घता हो जाती है।

2. भस्त्रिका प्राणायाम

यह प्राणायाम खड़े तथा बैठे दोनों स्थितियों में किया जा सकता है सिर्फ ध्यान रखने की बात यह है कि सामर्थ्यानुसार साधक लुहार की धौकिनी के समान श्वास प्रश्वास की गति को वेग पूर्वक लयात्मक स्थिति रखते हुए उस समय तक करता रहे जब तक वह पसीने पसीने न हो जाये, श्वास प्रश्वास लम्बा और पूरा होना चाहिये, दोनों नथुनों से एक साथ भी यह क्रिया की जा सकती है या अपने अभ्यस्त आसन में बैठकर अंगुलियों से बायें नथुनों को बन्द करके बिना कुम्भक किये दायें नथुने से शब्द ध्वनि उत्पन्न करते हुए बल पूर्वक रेचक और पूरक को बिना रुके लम्बे लम्बे श्वास-प्रश्वास द्वारा करें, इस प्राणायाम के अभ्यासी को दूध और घी का सेवन करते हुए धीरे-धीरे अभ्यास बढ़ाते रहना चाहिए, हठ योग प्रदीपिका में इस प्राणायाम के लिए स्पष्ट लिखा है –

कुण्डली-बोधकं क्षिप्रं पवनं सुखदं हितम।
ब्रह्मनाघी मुखे संस्थ-कफाद्यर्गलनाशनम्।
सम्यग् गात्र समुद् भूतं ग्रन्थि त्रय विभेदकम्...

यह प्राणायाम कुण्डलिनी को शीघ्र जगाता, प्राण को सुखद बनाता और सुषुम्ना के द्वार को खोलता है, प्राण तथा कुण्डलिनी के ऊर्ध्व गमन में होने वाली सुषुम्ना गत रुकावट को हटाता है, सुषुम्ना में पड़ी ब्रह्म ग्रन्थि विष्णु ग्रन्थि, रुद्र ग्रन्थियों को खोल देने में अति सहायक सिद्ध होता है।

यदि पूर्ण श्रद्धा और समर्पण से दीक्षा ली जाए

तो ऐसा हो ही नहीं सकता, कि कार्य सिद्ध न हो...

क्योंकि दीक्षा जीवन का अमृत है

महर्षि गौतम अपने आश्रम में बैठे थे, कि उनके समक्ष एक ब्राह्मण कुमार ने उपस्थित होकर अत्यंत विनीत स्वर से प्रार्थना की – ''ऋषि श्रेष्ठ! आप मुझे अपना शिष्य बनाकर ब्रह्मज्ञान प्रदान करें, ब्रह्मत्व प्राप्ति दीक्षा दें, जिससे कि मैं अपने लक्ष्य को पूर्णता से प्राप्त कर सकूँ।''

महर्षि गौतम ने शांत भाव से उसे देखा और पूछा – ''तुम्हारा नाम क्या है? तुम्हारा गोत्र क्या है?''

ब्राह्मण कुमार ने उत्तर दिया – ''मेरी माँ द्वारा दिया गया नाम 'सत्यकाम' है, नाम व गोत्र तो मुझे तब प्राप्त होगा, जब आप मुझे दीक्षा प्रदान करेंगे।

महर्षि इस उत्तर को सुनकर अत्यंत प्रसन्न हो गये तथा उसे अगले दिन आने के लिए कहा। अगले दिन जब सत्यकाम उपस्थित हुआ, तो महर्षि ने उसे बिना कुछ कहे गौओं को चराने की आज्ञा प्रदान की और कहा – ''जब इनकी संख्या एक हजार हो जाए, तब मेरे सामने उपस्थित होना।''

ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करने आया सत्यकाम बिना कोई प्रश्न किये गौओं को लेकर घने जंगल में चला गया तथा वहां नित्य गुरु ध्यान करते हुए गुरु आज्ञा पालन करने लगा। जब वह गौओं की सेवा कर रहा था, तो उसकी लगन और गुरु भक्ति को देखकर विभिन्न देवताओं ने अपना स्वरूप बदल-बदल कर उसे ज्ञान प्रदान किया।

निरंतर गुरु ध्यान तथा देवों द्वारा प्राप्त ज्ञान का चिंतन करने से सत्यकाम का आभामण्डल दैदीप्यमान हो उठा। जब गौओं की संख्या एक हजार हो गई, तो वह उनको लेकर आश्रम में उपस्थित हुआ।

महर्षि से कुछ भी गुप्त तो था नहीं, उन्होंने सत्यकाम के आभामण्डल युक्त चेहरे की ओर देखते हुए कहा – ''सत्यकाम! तुम्हारे मुख मण्डल से ब्रह्म ज्ञान की झलक स्पष्ट मिल रही है। तुम्हारे लिए अब कुछ भी जानना शेष नहीं रहा, अतः तुम घर जा सकते हो।''

सत्यकाम ने विनम्रता पूर्वक पुनः प्रार्थना की – ''गुरुदेव! मैंने तो निरंतर सिर्फ आपका ही ध्यान और चिंतन मात्र ही किया, इसके अतिरिक्त क्या हुआ, वह तो आपको ज्ञात होगा; लेकिन मैंने आपको अपना गुरु माना है, अतः जब तक आप मुझे ब्रह्मत्व प्राप्ति दीक्षा नहीं प्रदान करेंगे, तब तक मेरा ज्ञान व्यर्थ है, जब तक आप पूर्ण तपस्या से

जीवन में गुरु का आगमन व्यक्ति के लिए अत्यंत सौभाग्य का सूचक होता है और जब गुरु दीक्षा प्रदान करता है, तो वह क्षण उसके जीवन में श्रेष्ठतम क्षण बन जाता है, उसके जीवन की निधि बन जाता है।

युक्त दीक्षा प्रदान नहीं करेंगे, तब तक मेरा ज्ञान अधूरा ही रहेगा।'

उसकी श्रद्धा और गुरु के प्रति निष्ठा को देखकर महर्षि गौतम ने अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक उसे 'ब्रह्मत्व दीक्षा' प्रदान कर ब्रह्मर्षि की उपाधि प्रदान की।

यह लघु कथा शिष्य की गुरु के प्रति श्रद्धा विश्वास व समर्पण की भावना को स्पष्ट करती है। ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करने आये सत्यकाम को गुरु ने गौओं को चराने की आज्ञा प्रदान की, तो उसने बिना कुछ सोचे-विचारे गुरु आज्ञा का पालन किया, क्योंकि उसके हृदय में एक ही चिंतन था, कि गुरु जो भी आज्ञा देंगे, मेरे हित-चिंतन को ध्यान में रखकर ही देंगे और जब तक गुरु मुझे दीक्षा प्रदान नहीं करेंगे, तब तक मेरा जीवन अधूरा है।

तात्पर्य सत्यकाम के मन में मूल भाव यही था, कि दीक्षा ही जीवन का अमृत है, इसके बिना सारा ज्ञान अधूरा है, व्यर्थ है।

शिष्य जब सत्यकाम की भांति अपने गुरु पर पूर्णत: आश्रित हो जाता है, कि गुरु ही एकमात्र मेरा कल्याण करने में सक्षम हैं, तो वह स्वयं अनुभव करता है, कि उसके जीवन में एक विशिष्टता आ गई है। वह अपने लक्ष्य की ओर शीघ्रता से बढ़ रहा है।

यहां पर गुरु पर आश्रित होने के लिए कहा गया है, आश्रित होने का यह अर्थ कदापि नहीं है, कि व्यक्ति अपने कर्त्तव्यों से च्युत होकर बैठ जाये, कि सारे कार्य तो गुरु ही करेंगे, मुझे क्या करना है? ऐसा नहीं हो, कि वह यह सोच ले -

अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम,
दास मलूका कह गये सबके दाता राम।

राम तो हैं ही सबको प्रदान करने वाले, लेकिन यदि व्यक्ति कर्मशील नहीं हो, तो राम भी उसे कुछ प्रदान करने में समर्थ नहीं हो सकेंगे।

यहां आश्रित का अर्थ यह है कि मानव अपने भावों से, अपने विचारों से गुरु के प्रति जो दृढ़ता का भाव उत्पन्न हो, उस पर स्थिर रहे। सत्यकाम ने भी निरंतर अपने गुरु का ध्यान करते हुए कार्य सम्पादित किया, परिणामत: उसे दिव्य ज्ञान तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति हुई।

जीवन में गुरु का आगमन व्यक्ति के लिए अत्यंत सौभाग्य का सूचक होता है और जब गुरु दीक्षा प्रदान करता है, तो वह क्षण उसके जीवन में श्रेष्ठतम बन जाता है, उसके जीवन की निधि बन जाता है।

दीक्षा आत्म संस्कार की क्रिया है, जिसके माध्यम से 'गुरु' शिष्य के मानव जीवन से संबंधित पाप, दोष, झूठ, प्रपंच, मानसिक दोष, पूर्वजन्मकृत दोष आदि को दूर करते हैं, क्योंकि इन दोषों के कारण ही व्यक्ति को पूर्णता प्राप्त नहीं हो पाती।

यह मात्र कहने की ही बात नहीं है अपितु यह अनुभव की बात है, कि साधक जब प्रारंभ में दीक्षा लेता है, तो उसके अंदर गुरु के प्रति श्रद्धा, उनके प्रति विश्वास, उनके प्रति समर्पण का भाव उत्पन्न होता है; लेकिन धीरे-धीरे जब वह साधना पथ पर अग्रसर होता है, तो वह अपने ही दोषों के कारण सफलता नहीं प्राप्त कर पाता और गुरु के प्रति संशय करने लगता है - ''मैंने तो दीक्षा ली है, फिर भी मेरा कार्य सम्पन्न नहीं हो रहा है?''

वह यह नहीं समझ पाता है, कि जंग लगी मशीन अचानक ही कार्य नहीं करने लग जाती है अपितु पहले उसकी जंग समाप्त करनी पड़ती है, फिर वह उपयोग के लिए तैयार होती है। इसी प्रकार से दीक्षा द्वारा प्राप्त ऊर्जा उसके अवरोधों को समाप्त करने में ही क्षय हो सकती है।

प्रारंभ में जो उदाहरण प्रस्तुत किया गया है, उसके पीछे मंतव्य यही है, कि यदि शिष्य अपने गुरु के प्रति श्रद्धा भाव रखे, उनके प्रति समर्पण का भाव रखे, तो स्वत: ही उसको वह सब कुछ प्राप्त हो जाता है, जिसकी वह आकांक्षा रखता है।

आज व्यक्ति दीक्षा लेता है और सोचता है, कि पन्द्रह दिन या एक माह हो गया, मेरा कार्य क्यों नहीं पूर्ण हुआ?

....अगर आपने पूर्ण मनोयोग से दीक्षा ली है, तो उसका परिणाम अवश्य ही प्राप्त होगा, ऐसा हो ही नहीं सकता, कि आप कार्य सम्पन्न करें और उसका फल प्राप्त न हो, आवश्यकता है धैर्य, श्रद्धा, विश्वास और समर्पण की।

दीक्षा आज के भौतिकता के युग में अमृत के समान है, जिसे व्यक्ति यदि पूर्ण श्रद्धा, विश्वास और समर्पण के साथ ग्रहण करता है, तो यह संभव ही नहीं है, कि लक्ष्य की प्राप्ति न हो।

वर्तमान समय में व्यक्ति शुद्धता से साधनाओं को सम्पन्न नहीं कर पाता, अत: गुरु दीक्षा के माध्यम से उसके अंदर बीज डाल देते हैं और दीक्षा के माध्यम से 80 प्रतिशत कार्य पूरा कर देते हैं। शेष 20 प्रतिशत कार्य शिष्य पर छोड़ देते हैं, वह 20 प्रतिशत शिष्य अपने अंदर गुरु के प्रति विश्वास और श्रद्धा के साथ साधना करने पर प्राप्त कर पाता है।

दीक्षा जीवन का सबसे बड़ा वरदान है, सम्पूर्ण जीवन में समस्त प्रकार से पूर्णत्व के सम्पूर्ण विधान से युक्त है, गुरु द्वारा शिष्य को दिया गया उपहार है, जीवन को गतिशील करने के लिए ठोस नींव का निर्माण है।

Bhagyoday Sadhana

Rising sun of fortunes

Some years back as I stood in the small garden overlooking Gurudev's house, I saw a white ambassador pull over next to the gate and a middle aged man emerge from it. Something told me that he was a high-ranking government official. There was nothing odd about high-ranking officials, politicians and businessmen visiting Gurudev except that it was eleven in the night and time for Gurudev to call it a day. The harassed look on his face and his insistence however saw him into the house. I too followed.

Falling into Gurudev's feet he introduced himself and then started his tale of woes. It was clear that he was a very dedicated and honest official, yet according to him in spite of his achievements in the face of all odds, he had been superseded by his subordinates who continued to get promotions and important posts, while he was denied what was due to him. And this meant not just stagnation in status but also deprivation of pay perks.

Gurudev silently meditated on his words for sometime and when he spoke his voice was grave, "Your stars are not favouring you. Hard work won't get you anywhere. You better go in for *Bhagyoday Sadhana*." It was a new world opening up for the officer as *Gurudev* elucidated the *Sadhana* in detail and assured him of success. With the Yantra and rosary the officer returned home and it came as no surprise to me when a few weeks later he called on the phone to relate the joyous news that he had been given a double promotion and a very lucratives post. It sure was news for him but not for me, for this was not the first time I had seen this magic work.

"And yet when I remember all those success stories, those sighs of reliefs, my mind also boggles at the cut-throat competition that has proved to be a boon for some but a bane for the majority of people, more so for the youth who are easily disillusioned once their dreams fade in the harsh glare of reality. And then they fall easy prey to drugs, drinks, terrorism and wrong company.

Or if it is a mature person who has been disfavoured by the stars he or she become depressed, worried, angry and frustrated leading to disharmony, loss of health, enmity and jealousy. There are very few who are lucky enough financially and otherwise to pursue their dreams; rest are condemned to a life of hard, back-breaking labour to provide for one's family. And the needs never seem to end except when one has breathed one's last. Yet this vicious cycle does not really end here, it goes on and on crushing other victims from one generation to the other and the next. Childhood blooms into youth and youth withers away into old age and then death, yet the dreams remain what they are — just dreams!

If hard work and honesty were everything then how come an unlettered man wallows in millions, the proud owner of luxurious houses and vehicles, while a very highly educated man can't save enough even to buy a small flat or a scooter? It's this discrepancy that leads one to look for the cause elsewhere — in the stars and the planets that can make or mar one's fortunes.

It's very common today to get horoscopes cast and natal charts studied but these exercises prove futile when it comes to remedying the evil influence of planets. Moreover there can be more than just baleful planets behind one's bad luck. Bad Karmas from previous births, wrong use of Tantra by adversaries, genetic drawbacks or even evil influence over the place where your home stands can be behind your failure to make it big in life or fulfil your dreams. And you don't know what competition and enmity can lead people to do — adopt ways to ruin one's life, use evil power and intentions to harm one and even hinder one's progress in life.

But anger or retaliation won't get you

anywhere. There is a better and more potent way to ensure the rising of the sun of your fortunes and this Sadhana ensures no less than fourteen certain boons besides fulfilling any specific wish which you might have and which might not be covered by them.

There are a healthy, handsome physique, riddance from diseases, wealth and prosperity, fearlessness and manliness, property and vehicles, sons and daughters beautiful spouse, victory over enemies, prevention of untimely death, monetary gains, respect in the society, foreign travels, fulfilment in life and a peaceful end.

If you are severely lacking in any of these know it that the Gods of fortune are not favouring you and the best way of removing all obstacels from life is this Sadhana. Our Rishis were the first to recognise the fact that without nullifying the negative influences in life due to evil planets or otherwise one cannot get rid of paucity poverty and unfulfilment and if these are not remedied they can continue to haunt lifelong. For this they devised this wonderful Sadhana which, as I have myself experienced, if accomplished once in a year can ensure 365 days of success, fulfilment, peace and joy. That's the only way of enjoying life to the full. It's a divine gift for everyone, whatever your age, sex, caste or religion.

The best day for this practice is Sunday. A very special occasion shall present itself for this Sadhana on **13.07.2018**. You need a ***Bhagyoday Siddhi Yantra,*** consecrated ***Bhagyoday Mala*** and two ***Sukh-shanti Gutikas***.

Rise early in the morning at 4 O' clock. Take a bath and get into yellow dhoti/saree. the worship place must be cleaned and a yellow worship-mat spread. Sit on it. Place a wooden seat before yourself and cover it with a yellow cloth. On it place the Yantra and Gutikas in a copper plate. On the right side of the plate place the Guru's picture. Light a ghee lamp and incense.

Pavitrikaran (consecration of the self)

Take water in the cup of your right hand and chant — ***Om Apavitrah Pavitro Va sarvaavasthaam Gatopi Vaa Yah Smaret Pundareekaaksham Sa Baahyaabh yantar Shuchih.***

Sprinkle this water over your body.

Aachman (Inner consecration)

Take water in a copper spoon and chant ***Om Amritopastarannmasi Swaha.*** Drink the water and fill the spoon again and chant ***Om Amritaapidhaanamasi Swaha.*** Take a spoon full of water and chant — ***Om Satyam Yashah Shreermayi Shreeh Shrayataam Swaha.*** Drink it.

Put your right hand on your head and chant — ***Chidroopinni Mahaamaaye Divya Tejah Samanvite. Tishtth Devi ! Shikhaamadhye Tejo Vriddhim Kurushva Me.***

Take some rice grains in the right hand. While chanting the following verses throw them in all directons.

Om Apsarpantu Ye Bhootaah Te Bhootaa Bhoomisansthitaah. Ye Bhootaah vighnakartaaraste Nashyantu Shivaagyaa. Apkraamantu Bhootaani Pishaachaah Sarvato Disham. Sarveshaamvirodhen Pooja Karma Sammarabhe.

Thereafter pound hard on the ground with your left heel. Next make a mark of vermilion on your forehead chanting thus —

Kaantim Lashmeem Dhritim Soukhyam
Soubhaagyamtulam Dhanam Dadaatu,
Chandanam Nityam Satatam
Dhaarayaamyaham.

Take water in the hollow of right palm and pledge thus — I (name) am accomplishing this Bhagyoday Sadhana for a successful, wealthy and healthy life.

Chant one round of the Guru Mantra or simply pray to the Guru for sucess. Next chant 51 rounds of the undergiven Mantra with the Bhagyoday Mala.

Mantra

Om Ayeim Soubhaagya Siddhim rog Dosh Naashay Phat

After the ritual place the Yantra, rosary and the two Gutikas in the worship place or at your work place. Let them remain there for 11 days after which disperse them in a river or pond.

While doing the Sadhana do not let your spirit flag. Chant the Mantra with full devotion and sure enough positive results shall begin to accrue within some time.

Sadhana Articles : 450/-

प्रत्येक साधना निःशुल्क

सिद्धाश्रम दिल्ली

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और दीक्षाएं सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारंभ हुई है। इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं। यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

13.08.18 (सोमवार)

भाग्योदय साधना

जब जीवन पर दुर्भाग्य की छाया होती है, जीवन में रोग, शोक, दुःख, दारिद्र्य, कष्ट, शत्रु, परेशानी, असफलता, निराशा आदि का साम्राज्य हो जाता है, कदम-कदम पर तिरस्कार और अपमान का कड़वा घूंट पीना पड़ता है, जीवन में आनन्द, आह्लाद, प्रसन्नता जैसा कोई शब्द नहीं रह पाता... तब आप संशयग्रस्त हो जाते हैं कि—मैं क्या करूँ?—आपके संशय का निवारण कर, जीवन के दुर्भाग्य को मिटाकर सौभाग्य और चतुर्दिक सफलता व आनन्द प्रदान करने वाली एक अद्भुत और आश्चर्यजनक साधना... जो प्रत्येक गृहस्थ के लिए आवश्यक है...

मंत्र : ।। ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ ।।

14.08.18 (मंगलवार)

तंत्र बाधा निवारण हनुमत प्रयोग

जीवन में बल, बुद्धि, साहस, कर्मठता, तेजस्विता और संकटों पर विजय प्राप्त कर लेने का साहस यदि कहीं है, तो उसे हनुमान कहते हैं। जीवन में सैकड़ों बाधाएं, परेशानियां, अड़चनें आ जाती हैं, और पग-पग पर शत्रु हम पर वार करने के लिए तैयार खड़े रहते हैं। घर में कलह, बीमारी, मन में उदासी व निराशा की भावना—ये सब आप पर कराए गए किसी तंत्र प्रयोग के कारण भी हो सकते हैं। हनुमान साधना द्वारा ऐसी कोई भी बाधा टिक नहीं सकती है, क्योंकि इस साधना के बाद हनुमान सदैव अपने साधक की प्रतिपल रक्षा करते हैं।

मंत्र :

।। ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय तंत्र बाधा
निवारणाय राम दूताय स्वाहा ।।

15.08.18 (बुधवार)

तीव्र बटुक भैरव प्रयोग

भैरव को भगवान शिव का ही एक रूप माना गया है। बावन भैरव की साधना मुख्यतः इन कारणों से की जाती है–1. मुकदमे में विजय प्राप्ति के लिए, 2. पूर्ण पौरुषता प्राप्ति के लिए, 3. किसी भी प्रकार की बाधा की निवृत्ति हेतु तथा 5. शत्रुओं को निष्प्रभावी करने हेतु। इसके अलावा बटुक भैरव निरन्तर एक रक्षक की भांति साधक की हर आसन्न संकट से रक्षा भी करते रहते हैं, जिसका कि साधक को आभास तक नहीं होता। और इस प्रकार यह अकाल मृत्यु निवारण प्रयोग भी है।

मंत्र :

।। ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय
कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ ।।

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्क्लेव (गुरुद्वारे के पास), पीतमपुरा, नई दिल्ली-34
फोन नं. : 011-27354368, 27352248

Printing Date : 15-16 June, 2018
Posting Date : 21-22 June, 2018
Posting Office At Jodhpur RMS

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2016-2018
Licensed to post without prepayment
License No. RJ/WR/WPP/14/2018
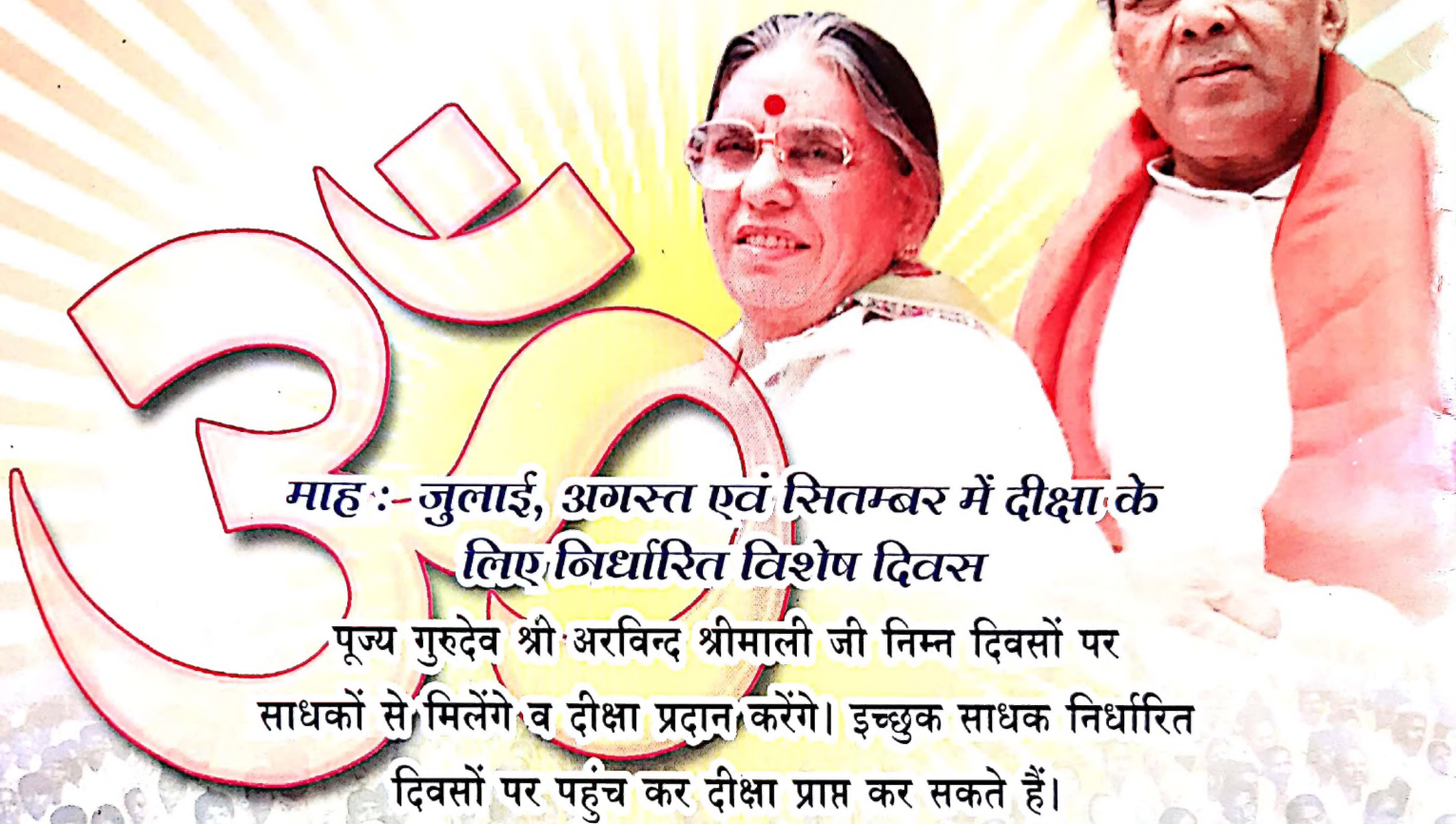
माह :- जुलाई, अगस्त एवं सितम्बर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान गुरुधाम (जोधपुर)	
11-12	जुलाई
21-22	अगस्त
19-20	सितम्बर

स्थान सिद्धाश्रम (दिल्ली)	
14-15	जुलाई
13-14-15	अगस्त
22-23	सितम्बर

प्रेषक -
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
फोन : 0291-2433623, 2432209
0291-2432010